महाकवि केशवदास-विरचित

कवि-प्रिया

जिसमें

काव्य के सब अंगों का वर्णन विधि-पूर्वक किया गया है।

संशोधित संस्करण

लखनऊ

केसरीदास सेठ, सुपरिंटेंडेंट द्वारा

नवलकिशोर-प्रेस में मुद्रित और प्रकाशित

सातवीं बार]   [सन् १९२५ ई०

रोमावली औ उदरवर्णन ।

किधौं काम बागवान बोई है सिंगारबेलि सींचिकै बढ़ाई नाभी कूप मन मोहिये । किधौं हरिनैन खंजरीटन के खेलिबे की भूमि केशौदास नख पंकरेख सोहिये ॥ किधौं चलदल पर पियको कपट ज्वर टूटिबे को मंत्र लिखि लोचननि जोहिये । सुन्दर उदर शुभ सुन्दरीकी रोमराजी किधौं चित्तचातुरी की चोटी चारु सोहिये॥२३॥

कुचवर्णन । दोहा ।

चक्रवाक कुच बरणिये, केसव कमल प्रमान ।
शिवगिरि घट मठ गुच्छफल, शुभ इभकुंभ समान ॥ २४ ॥

कवित्त ।

किधौं मनोहर मणिहार द्युति सुर खेलैं यौवन कलभकुंभ शोभन दरस हैं । मोहनी के मठ किधौं इंदिराके मन्दिर कि इंदीवर इंदुमुखी सौरभ सरस हैं ॥ आनँदके कन्द किधौं अंग द्वै अनंगहीके बाढ़त जु केशौदास बरसबरस हैं । एरी वृषभानुकी कुमारी तेरे कुच किधौं रूप अनुरूप जातरूप के करस हैं ॥ २५ ॥

कर भुज [illegible]वर्णन । दोहा ।

कर पंकज पल्लव [illegible], भुज बिसलता सुपास ।
रत्न ता[illegible] [illegible] सम, नख रुचि केशवदास ॥ २६ ॥

[illegible] ।

केशौदास गोरे गोरे गोल काम भूलहर भामिनीके भुजमूल

वक्तव्य

हिंदी के काव्य-जगत् में महाकवि केशवदास का स्थान 'सूर' और 'तुलसी' के बाद ही माना जाता है, जिसका प्रमाण दोहे का यह आधा अंश है—

"सूर सूर, तुलसी ससी, उडुगण केशवदास;"

केशवदासजी की कविता पांडित्य से पूर्ण और साधारण जनों या अधकचरे कवियों के लिये दुर्बोध अवश्य है, और इसी से किसी ने कहा है—

"दीबो न चाहै विदाई नरेस तो पूछत केशव की कविताई।"

जिसने गुरुमुख से दशांग साहित्य नहीं पढ़ा, वह केशव की कविता क्या समझेगा और क्या समझावेगा? केशवदासजी संस्कृत के प्रकांड पंडित थे, उनके पूर्वज संस्कृत-कविता का ही पठन-पाठन और निर्माण करते आ रहे थे। अचानक बीच में केशवदास का झुकाव भाषा-काव्य की ओर हो गया। और संस्कृत के प्रामाणिक रीति-ग्रंथों के आधार पर भाषा में कवि-प्रिया और रसिक-प्रिया आदि का निर्माण किया।

अच्छा, अब केशवदासजी का परिचय पढ़िए। जन-श्रुतियों के आधार पर मालूम होता है कि केशवदास ओड़छे में, विक्रम की १७वीं सदी में, सनाढ्य-ब्राह्मणों के मिश्र-कुल में उत्पन्न हुए थे। मान्य मिश्रबंधुओं का अनुमान है कि वि० सं० १६०८ (ई० सन्

काशिनाथ और पितामह का कृष्णदत्त था। इस कुल में सभी विद्वान्, प्रतिष्ठित और प्रतिभाशाली होते रहे। इस कुल के नौकर-चाकर भी संस्कृत में ही बातचीत करते थे। ओड़छा बुंदेलखंड में एक राज्य है। वहाँ के प्रतापी राजा इंद्रजीतसिंह, जो अकबर के समकालिक थे, केशव पर गुरुवत् श्रद्धा, भक्ति और प्रीति रखते थे। वही इनके आश्रयदाता थे। राजा इंद्रजीतसिंह के पूर्वज बड़े बहादुर बुंदेले थे। वे दिल्ली के मुग़ल-बादशाहों तक को शिकस्त देकर पस्त करते थे। अकबर अपने दरबार में इंद्रजीत के बड़े भाई रामसिंह को बैठने का आसन देता था, यद्यपि अन्य राजों को खड़े रहना पड़ता था। इंद्रजीत के यहाँ केशव का बड़ा मान था। केशवजी राजा के गुरु, मित्र, मुसाहब, कवि और मंत्री सब कुछ थे। इंद्रजीत की प्रेमिका रायप्रबीन थी, जो रूपवती युवती होने के अलावा बुद्धिमती और गुणवती भी एक ही थी। वह एक सहृदय और उत्कृष्ट कवि का-सा हृदय और मस्तिष्क रखती थी। वह इंद्रजीत को पतिवत् मानती और अपने को पूरी पतिव्रता समझती थी। जब अकबर बादशाह ने रायप्रबीन के रूप-गुण की प्रशंसा पर मुग्ध होकर उसे अपने दरबार में भेज देने का हुक्म इंद्रजीत के पास भेजा था, तब रायप्रबीन ने एक सवैया रचकर इंद्रजीत के आगे यही भाव प्रकट किया था। यथा—

आई हौं बूझन मंत्र तुम्हैं, निज सासन सों सिगरी मति खोई।
देह तजौं कि तजौं कुल-कानि, हिए न लजौं, लजिहैं सब कोई॥
स्वारथ औ परमारथ को पथ, चित्त विचारि कहौ अब सोई।
जामें रहै प्रभु की प्रभुता अरु, मोर पतिव्रत भंग न होई॥

इस छंद की प्रार्थना सुनकर राजा ने शाह की आज्ञा की अव-

हेलना की। अकबर ने हुक्म-अदूली की बेअदबी पर आग होकर एक करोड़ रुपए का जुरमाना राजा पर कर दिया। जुरमाना व-सूल करने के लिये शाही चढ़ाई होने भी न पाई थी कि उक्त समाचार पाकर कविवर केशव आगरे में बीरबल के पास दाखिल हो गए। बीरबल स्वयं अच्छे कवि और हिंदू थे। केशव ने "दियो करतार दुऔ करतारी" वाला सवैया बनाकर बीरबल की तारीफ़ में कहा। बीरबल रीझ गए। बीरबल का वह ज़माना था; अकबर उनकी बात नहीं टालते थे। बीरबल ने जुरमाना तो माफ़ करा दिया, पर रायप्रवीन को अकबर के आगे हाज़िर होना ही पड़ा। उस समय रायप्रवीन ने जो अनमोल दोहा सुनाकर अपनी गहरी सूझ का परिचय दिया, और अकबर को लज्जित किया, वह इस प्रकार है—

> बिनती रायप्रवीन की, सुनिए साह सुजान ;
> जूठी पतरी खात हैं, बारी, बायस, स्वान।

कैसा माक़ूल जवाब है! कितना करारा तमाचा है! किंतु ढंग कितना ख़ूबसूरत है! रायप्रवीन की इसी प्रतिभा पर केशवदास मुग्ध थे, और उसकी बड़ी इज़्ज़त करते थे। उसके लिये एक ग्रंथ ही बना डाला है। केशवदास रायप्रवीन की कितनी इज़्ज़त करते थे, इसका पता नीचे-लिखे दोहों से लगता है—

> रतनाकर लालित सदा, परमानंदहि लीन।
> अमल कमल कमनीय कर, रमा कि रायप्रवीन॥
> रायप्रवीन कि सारदा, सुचि रुचि रंजित अंग।
> बीना-पुस्तकधारिनी, राजहंस-सुत संग॥

वृषभ वाहिनी अंगजुत, वासुकि लसत प्रवीन।
सिव सँग सोहति सर्वदा, सिवा कि रायप्रवीन॥

केशवदास के प्रसिद्ध ४ ग्रंथ हैं। कवि-प्रिया, रसिक-प्रिया, रामचंद्रिका और विज्ञान-गीता।

काशी की नागरी-प्रचारिणी सभा जो हिंदी की पुरानी पुस्तकों की खोज कराया करती है, उसमें केशव के शायद और तीन ग्रंथों का पता चला है, ऐसा सुन पड़ता है। वे ग्रंथ हैं—वीरसिंह-देव-चरित्र, जहाँगीर-चंद्रिका और नख-शिख। रसिक-प्रिया का रचना-काल संवत् १६४८ वि० है।

कवि-प्रिया और रसिक-प्रिया के कारण ही केशव की गणना आचार्यों में की जाती है। कहा जाता है, केशवदास, रायप्रवीन, महाराज इंद्रजीतसिंह आदि में इतनी घनिष्ठता और पारस्परिक स्नेह था कि उन्हें मृत्यु के उपरांत वियोग न होने देने का उपाय सोचने की फ़िक्र पड़ी। अंत को यह तय पाया कि प्रेत-विधि से मृत्यु होने पर प्रेत होकर सब एकत्र रह सकेंगे। तदनुसार विष्ठा का चौका देकर, नखों में नील लगाकर, इसी प्रकार के और भी गंदे अनुष्ठान करके, इस मंडली ने प्राण दिए। औरों के बारे में तो कुछ नहीं सुना जाता, पर केशवदास के बारे में सुना जाता है कि वह मरकर ब्रह्मराक्षस हुए। केशवदास एक कूप में रहने लगे। संयोगवश उधर से एक दिन गोस्वामी तुलसीदासजी निकले। उन्होंने पानी भरने के लिये कुएँ में लोटा लटकाया, तो केशव ने उसको पकड़ लिया। तुलसीदासजी के बार-बार कहने पर केशव ने अपना सब हाल कहकर यह प्रार्थना की कि मुझे किसी तरह इस बुरी योनि से मुक्त कीजिए। मैं बड़े कष्ट में हूँ। गोस्वामीजी

ने सब सुनकर कहा—तुम रामचंद्रिका के २१ या १०८ पाठ कर डालो, तो मुक्ति हो जायगी। केशव को बहुत स्मरण करने पर भी रामचंद्रिका का पहला छंद न याद आया। तब गोस्वामीजी ने याद करा दिया, और केशवदास रामचंद्रिका का पाठ करके मुक्त हो गए। मालूम नहीं, इस दंतकथा में कहाँ तक अथवा कितना सत्य का अंश है।

मिश्रबंधुओं ने अपने हिंदी-नवरत्न में लिखा है कि वह खुद ओड़छे में केशव का निवास-स्थान देखने गए थे। पर वहाँ कुछ पता न लगा। पूछताछ करने पर भी आप लोगों को केशवदास के बारे में वहाँ विशेष कुछ मालूम न हो सका। अंत को लोगों से इतना मालूम हुआ कि इनके निवास-स्थान के पास केवल एक इमली का पेड़ रह गया है। कुछ भी हो, संसार में केशवदास का शरीर और निवास-स्थान न रह जाने पर भी, वह अमर हैं। जब तक उनके ग्रंथ रहेंगे, तब तक उनकी कीर्ति रहेगी। और, जिसकी कीर्ति विद्यमान है, वह अमर है। किसी ने बहुत ठीक कहा है—"कीर्तिर्यस्य स जीवति।"

प्रकाशन-विभाग
२६ जुलाई सन् १६२४ ई०
नवलकिशोर-प्रेस (बुकडिपो)
लखनऊ

गोकर्णदत्त त्रिपाठी

श्रीगणेशाय नमः ।

दोहा ।

गजमुख सनमुख होतही, बिघन विमुख ह्वैजात ।
ज्यों पग परत प्रयाग-मग, पाप-पहार बिलात ॥१॥
बाणीजू के बरण युग, सुवरण-कण परमान ।
सुकवि सुमुख कुरुखेतपरि, होत सुमेरु समान ॥२॥

अथ गणपतिदन्त वर्णन । कवित्त ।

सत्त्व सत्त्व गुण को कि सत्यही की सत्ता शुभ, सिद्धि व
प्रसिद्धि की,सुबुद्धि वृद्धि मानिये । ज्ञानहीं की गरिमा कि महि
विवेकही की दरशनही को दरशन उर आनिये ॥ पुण्य को प्रका
वेद विद्या को विलास कि धौं, यश को निवास केशौदास ज
जानिये । मदनकदनसुत वदन रदन किधौं, विघन विनाशन व
विधि पहिंचानिये ॥ ३ ॥

दोहा । प्रगट पञ्चमी को भयो, कविप्रिया अवतार ।
सोरह सै अट्ठावनो, फागुन सुदि बुधवार ॥४
नृपकुल वरणौं प्रथमही, अरु कवि केशववंस ।
प्रगटकरी जिन कविप्रिया, कविता को अवतंस ॥५।

अथ नृपवंश वर्णन ।

ब्रह्मादिक की विनय ते, हरण सकल भुविभार ।
सूरज वंश कस्यो प्रगट, रामचन्द्र अवतार ॥६।
तिनकेकुल कलिकालरिपु, कहि केशव रणधीर ।
गहरवार विख्यात जग, प्रगट भये नृप वीर ॥७।
करण नृपति तिनके भये, धरणी धरमप्रकास ।
जीति सबै जगती कस्यो, वाराणसी निवास ॥८।
प्रगट करणतीरथ भये, जगमें तिन के नाम ।
तिनके अर्जुनपाल नृप, भये महोनी ग्राम ॥९।

गढ़ कुठार तिनके भये, राजा शाह नृपाल ।
सहजकरण तिन के भये, कहि केशव रिपुकाल ॥ १० ॥
राजा नौनिकदे भये, तिन के पूरणसाज ।
नौनिकदे के सुत भये, पृथुजय पृथ्वीराज ॥ ११ ॥
रामसिंह राजा भये, तिन के शूर समान ।
रामचन्द्र तिनके भये, राजा चन्द्र प्रमान ॥ १२ ॥
राज मेदिनीमल भये, तिन के केशवदास ।
अरिमद मरदन मेदिनी, कीन्हों धरम प्रकास ॥ १३ ॥
राजा अर्जुनदे भये, तिन के अर्जुन रूप ।
श्रीनारायण को सखा, कहैं सकल भुविभूप ॥ १४ ॥
महादान षोड़श दये, जीती जग दिशिचारि ।
चारौ वेद अठारहौ, सुने पुराण विचारि ॥ १५ ॥
रिपुखण्डन तिन के भये, राजा श्री मलखान ।
युद्ध जुरे न मुरे कहूं, जानत सकल जहान ॥ १६ ॥
नृप प्रतापरुद्र सु भये, तिन के जनु रणरुद्र ।
दया दान को कल्पतरु, गुणनिधि शीलसमुद्र ॥ १७ ॥
नगर ओरछो जिन रच्यो, जगमें जागति कृत्ति ।
कृष्णदत्त मिश्रहि दई, जिन पुराणकी वृत्ति ॥ १८ ॥
भरतखण्ड मण्डन भये, तिन के भारतचन्द ।
देश रसातल जात जिहिं, फेर्‍यो ज्यों हरिचंन्द ॥ १९ ॥

शेरशाहि असलेम के, उर शाली शमशेर ।
एक चतुरभुज हू नयो, ताको शिर तेहि बेर ॥ २० ॥
उपज न पायो पुत्र तेहिं, गयो सु प्रभु सुरलोक ।
सोदर मधुकर शाह तब, भूप भये भुविलोक ॥ २१ ॥
जिन के राज रसा बसे, केशव कुशल किशान ।
सिन्धु दिशा नहिं वारहूं, पार बजाय निशान ॥ २२ ॥
तिनपर चढ़िआये जे रिपु, केशव गये ते हारि ।
जिनपर चढ़ि आपुन गये, आये तिनहिं सँहारि॥ ॥ २३ ॥
सब रसाहि अकबर अवनि, जीतिलई दिशि चारि ।
मधुकरसाहि नरेश गढ़, तिन के लीन्हें मारि ॥ २४ ॥
खान गनै सुल्तान को, राजा राउत बाद ।
हार्यो मधुकरसाहि सों, आपुन साहिमुराद ॥ २५ ॥
साध्यो स्वारथ साथही, परमारथ सो नेह ।
गये सो प्रभु वैकुंठमग, ब्रह्मरन्ध्र तजि देह ॥ २६ ॥
तिनके दूलहराम रिपु, लहुरे होरिलराउ ।
रिपुखण्डन कुलमण्डनो, पूरण पुहुमि प्रभाउ ॥ २७ ॥
रनसूरो नरसिंह पुनि, रतनसेनि सुनि ईश ।
बांध्यो आपु जलालदी, बानो जाके शीश ॥ २८ ॥
इन्द्रजीत रणजीत पुनि, शत्रुजीत बलवीर ।
बिरसिंह देव प्रसिद्ध पुनि, हरिसिंहौ रणधीर ॥ २९ ।

मधुकरसाहि नरेश के, इतने भये कुमार ।
रामसिंह राजा भये, तिन के बुद्धि उदार ॥ ३० ॥
घर बाहर वरणहि तहां, केशव देश विदेश ।
सब कोई यहई कहै, जीतै राम नरेश ॥ ३१ ॥
रामसाहि सों शूरता, धर्म न पूजै आन ।
जाहि सराहत सर्वदा, अकबर सो सुलतान ॥ ३२ ॥
कर जोरे ठाढ़े तहां, आठौ दिशि के ईश ।
ताहि तहां बैठक दियो, अकबर सो अवनीश ॥ ३३ ॥
जाके दरशन को गये, उघरे देव केवाँर ।
उपजी दीपति दीप की, देखति एकहिबार ॥ ३४ ॥
ता राजा के राज अब, राजत जगती मांह ।
राजा राना राउ सब, सोवत जाकी छांह ॥ ३५ ॥
तिन के सुत ग्यारह भये, जेठ साहि संग्राम ।
दक्षिण दक्षिणराज सों, जिन जीत्यो संग्राम ॥ ३६ ॥
भरतखण्ड भूषण भये, तिन के भारथसाहि ।
भरथ भगीरथ पारथहि, उनमानत सब ताहि ॥ ३७ ॥
सुत सोदर नृप रामके, यद्यपि वहु परिवार ।
तदपि सबै इन्द्रजीत शिर, राजलाज को भार ॥ ३८ ॥
कल्पवृक्ष सो दानि दिन, सागर सो गम्भीर ।
केशव शूरो शूरसो, अर्जुन सो रणधीर ॥ ३९ ॥

ताहि कछोवा कमल सो, गढ़ दीन्हों नृप राम ।
विधि सों साधत बैठि तहँ, भूपति वाम अवाम ॥ ४० ॥
कियो अखारो राज को, शासन सब संगीत ।
ताको देखत इन्द्र ज्यों, इन्द्रजीत रणजीत ॥ ४१ ॥
बाल वयक्रम बाल सब, रूप शील गुण वृद्धि ।
यदपि भरो अवरोध पट, पातुर परम प्रसिद्धि ॥ ४२ ॥
राय प्रवीण प्रवीण अति, नवरंगराइ सुवेश ।
अति विचित्र नैना निपुण, लोचन नलिन सुदेश ॥ ४३ ॥
सोहत सारँग राग की, तानति तान तरंग ।
रंगराइ रँगवलित गति, रँगमूरति अँग अंग ॥ ४४ ॥
तंत्री तुम्बुर शारिका, शुद्ध सुरनि सों लीन ।
देवसभा सी देखिये, राय प्रवीण प्रवीन ॥ ४५ ॥
सत्याराय प्रवीणयुत, सुरतरु सुरतरु गेह ।
इन्द्रजीत तासों बँध्यो, केशवदासहि देह ॥ ४६ ॥
सुरी आसुरी किन्नरी, नरी रहति शिरु नाइ ।
नव रस नवधाभक्ति में, शोभित नवरँग राइ ॥ ४७ ॥
हाव भाव संभावना, दोला सम सुखदाय ।
पियमन देति झुलाय गति, नवरस नवरँगराय ॥ ४८ ॥
भैरवयुत गौरी सँयुत, सुरतरंगिनी लेखि ।
चन्द्रकला सी सोहिये, नैन विचित्रा देखि ॥ ४९ ॥

नैन बैन रति सैन सम, नैनविचित्रा नाम ।
जयन शील पति मैन मन, सदा करत विश्राम ॥ ५० ॥
नागरि नागर राग की, सागर तान तरंग ।
पति पूरणशशि दरशि दिन, बाढ़ति तान तरंग ॥ ५१ ॥
तानति तान तरंग की, तन मन वेधति प्राण ।
कला कुसुमशर शरन की, अति अयान तनत्राण ॥ ५२॥
रंगराय की आंगुरी, सकल गुणन की मूरि ।
लागत मूढ़ मृदंग मुख, शब्द रहत भरि पूरि ॥ ५३ ॥
रंगरायकर मुरजमुख, रँगमूरति पद चारु ।
मनो पढ़्यो है साथही, सब संगीत विचारु ॥ ५४ ॥
अंग जिते संगीत के, गावत गुणी अनंत ।
रँगमूरति अँग अंग प्रति, राजत मूरतिवंत ॥ ५५ ॥
राय प्रवीण प्रवीण सो, परवीणन कहँ सुःख ।
अपरवीण केशव कहा, परवीणन मन दुःख ॥ ५६ ॥
रतनाकर लालित सदा, परमानन्दहि लीन ।
अमल कमल कमनीय कर, रमा कि रायप्रवीन ॥ ५७ ॥
राय प्रवीण कि शारदा, शुचि रुचि रंजित अंग ।
वीणा पुस्तक धारिणी, राजहंस सुत संग ॥ ५८ ॥
वृषभवाहिनी अंगयुत, वासुकि लसत प्रवीण ।
शिव सँग सोहति सर्वदा, शिवा कि राय प्रवीण ॥ ५९ ॥

नाचत गावत पढ़त सब, सबै बजावत बीण ।
तिन में करत कवित्त यक, राय प्रवीण प्रवीण ॥ ६० ॥
सविताजू कविता दई, जाकहँ परम प्रकास ।
ताके कारज कविप्रिया, कीन्हीं केशवदास ॥ ६१ ॥

इति श्रीमद्विविधभूषणभूषितायां कविप्रियायां
नृपवंशवर्णनोनाम प्रथमः प्रभावः ॥ १ ॥

अथ कविवंश वर्णन ।

ब्रह्मादिक के विनय ते, प्रकट भये सनकादि ।
उपजे तिनके चित्त ते, सब सनाढि की आदि ॥ १ ॥
परशुराम भृगुनंद तब, तिनके पायँ पखारि ।
दिये बहत्तरि ग्राम सब, उत्तम विप्र विचारि ॥ २ ॥
जगपावन वैकुंठपति, रामचन्द्र यहि नाम ।
मथुरा मंडल में दिये, तिन्हें सात सै ग्राम ॥ ३ ॥
सोमवंश यदुकुल कलश, त्रिभुवनपाल नरेश ।
फेरि दिये कलिकाल पुर, तेई तिनहिं सुदेश ॥ ४ ॥
कुंभवार उद्धेश कुल, प्रकटे तिन के बंस ।
तिन के देवानन्द सुत, उपजे कुल अवतंस ॥ ५ ॥
तिनके सुत जगदेव जग, थापे पृथ्वीराज ।
तिनके दिनकर सुकुल सुत, प्रगटे पण्डित राज ॥ ६ ॥

दिल्लीपति अल्लावदी, कीन्हीं कृपा अपार ।
तीरथ गया समेत जिन, अकर कियो कै वार ॥ ७ ॥
गया गदाधर सुत भये, तिनके आनँदकन्द ।
जयानन्द तिनके भये, विद्यायुत जगवन्द ॥ ८ ॥
भये त्रिविक्रम मिश्र तब, तिनके पण्डितराय ।
गोपाचल गढ़ दुर्गपति, तिनके दूजे पायँ ॥ ९ ॥
भावशर्म तिनके भये, तिनके बुद्धि अपार ।
भये सुरोत्तम मिश्र तब, षटदरशन अवतार ॥ १० ॥
मानसिंह सों रोष करि, जिन जीती दिशि चारि ।
ग्राम बीस तिनको दये, राना पायँ पखारि ॥ ११ ॥
तिनके पुत्र प्रसिद्ध जग, कीन्हें हरिहरनाथ ।
तूंबरपति तजि और सों, भूलि न ओड़ेउ हाथ ॥ १२ ॥
पुत्र भये हरिनाथ के, कृष्णदत्त शुभ वेष ।
सभा शाह संग्राम की, जीती गढ़ी अशेष ॥ १३ ॥
तिनको वृत्ति पुराण की, दीन्हीं राजा रुद्र ।
तिनके काशीनाथ सुत, सो भे बुद्धिसमुद्र ॥ १४ ॥
जिनको मधुकरशाह नृप, बहुत कियो सनमान ।
तिनके सुत बलभद्र बुध, प्रकटे बुद्धिनिधान ॥ १५ ॥
बालहि ते मधुशाह नृप, तिनसों सुन्यो पुरान ।
तिनके सोदर द्वै भये, केशवदास कल्यान ॥ १६ ॥

भाषा बोलि न जानहीं, जिनके कुल के दास ।
भाषा कवि भो मंदमति, तेहि कुल केशवदास ॥ १७ ॥
इन्द्रजीत तासों कह्यो, मांगन मध्य प्रयाग ।
मांग्यो सब दिन एक रस, कीजै कृपा सभाग ॥ १८ ॥
योहीं कह्यो जु बीर बर, मांगु जु मन में होय ।
मांग्यो तव दरबारमें, मोहिं न रोंकै कोय ॥ १९ ॥
गुरु करि मान्यो इन्द्रजित, तनमन कृपा विचारि ।
ग्राम दये इकतीस तब, ताके पायँ पखारि ॥ २० ॥
इन्द्रजीतके हेतु पुनि, राजा राम सुजान ।
मान्यो मन्त्री मीत के, केशवदास प्रमान ॥ २१ ॥

इति श्रीमद्विविधभूषणभूषितायां कविप्रियायां
कविवंशवर्णनंनाम द्वितीयःप्रभावः ॥ २ ॥

समुझै बाला बालकन, वर्णन पन्थ अगाध ।
कविप्रिया केशव करी, क्षमियहु कवि अपराध ॥ १ ॥
अलंकार कवितान के, सुनिगुनि विविध विचार ।
कविप्रिया केशव करी, कविताको शृंगार ॥ २ ॥
सगुन पदारथ अरथयुत, सुबरन मय शुभ साज ।
कंठमाल ज्यों कविप्रिया, कंठ करहु कविराज ॥ ३ ॥
राजत रंच न दोष युत, कविता वनिता मित्त ।

बूंदक हाला होत ज्यों, गंगाघट अपवित्त ॥ ४ ॥
विप्र न नेगी कीजई, मुग्ध न कीजै मित्त ।
प्रभु न कृतघ्नी सेइये, दूषणसहित कवित्त ॥ ५ ॥

अथ कवित्तदूषण ।

अन्ध बधिर अरु पंगु तजि, नगन मृतक मतिशुद्ध ।
अन्ध विरोधी पन्थ को, बधिरजो शब्दविरुद्ध ॥ ६ ॥
छन्द विरोधी पंगु गुनि, नगन जो भूषण हीन ।
मृतक कहावै अरथ बिन, केशव कहत प्रवीन ॥ ७ ॥

अथ पंथविरोधी अन्ध यथा । सवैया ।

कोमलकंजसे फूल रहे कुच देखतही पति चन्द विमोहै
बान रसे चल चारु विलोचन कोये रचे रुचि रोचन कोहै ।
माखन सो मधुरो अधरामृत केशव को उपमाकहुँ टोहै
ठाढ़ी हैं कामिनि दामिनिसी मृगभामिनिसी गजगामिनिसोहैं ॥८॥

अथ शब्दविरोधी बधिर यथा ।

सिद्धि सिरोमणि शंकर सृष्टि सँहारत साधु समूह भरी है
सुन्दर मूरत आतमभूतकी जारि घरीक मैं छार करी है ।
शुभ्र विरूप त्रिलोचन सो मति केशवदास के ध्यान अरी है
बन्दत देव अदेव सबै मुनि गोत्र सुता अरधंग धरी है ॥ ९ ॥
दो० । तूलत तूल रहै न ज्यों, कनक तुला तिल आधु ।
त्योंहीं छन्दोभंग को, सहि न सकैं श्रुति साधु ॥ १० ॥

अथ छन्दविरोधी पंगु यथा ।

धीरज मोचन लोचन लोल विलोकिकै लोककी लीक तिछूटी
फूटि गये श्रुति ज्ञान के केशव आंखि अनेक विवेक की फूटी
छोड़िदई सरिता सब काम मनोरथके रथकी गति खूटी
त्यों न करै करतार उबारक ज्यों चितवै वह बारबधूटी ॥ ११

अथ अलंकारहीन नग्न यथा । सवैया ।

तोरितनी टकटोरि कपोलनि, जोरिरहे कर त्यों न रहौंगी
पान खवाइ सुधाधर प्याइकै, पांइ गह्यो तस हौं न गहौंगी
केशव चूक सबै सहिहौं मुख चूमि चले यह पै न सहौंगी
कै मुखचूमन दे फिर मोहिं कै आपनी धाइसों जाइकहौंगी ॥ १२ ।

अथ अर्थहीन मृतक यथा । सवैया ।

काल कमाल करील करालनि शालनि चालनि चाल चली है
हाल बिहालन ताल तमाल प्रबालक बालक बाललली है ।
लोल विलोल कपोल अमोलक बोलक मोलक कोलकली है ।
बोल निचोल कपोलनि टोलनि गोल निगोलक लोल गली है ॥१३

दोहा । अगन न कीजै हीनरस, अरु केशव जातिभंग ।
व्यर्थ अपारथ हीन क्रम, कविको तजो प्रसंग ॥ १४ ।
वर्ण प्रयोगी कर्णकटु, सुनहु सकल कविराज ।
शब्द अर्थ पुनरुक्तिके, छोड़हु सिगरे साज ॥ १५ ॥

देशविरोधी वरणिये, कालकलानि निहारि ।
लोक न्याय आगमन के, तजो विरोध विचारि ॥ १६ ॥

अथ गनागनफल वर्णन ।

केशव गन शुभ सर्वदा, अगन अशुभ उरआनि ।
चारि चारि विधि चारु मति, गन अरु अगन बखानि ॥ १७ ॥

अथ गनागननाम वर्णन ।

मगन नगन अरु भगन भनि, यगन सदा शुभ जानि ।
जगन रगन त्यों सगुन पुनि, तगनहिं अशुभ बखानि ॥ १८ ॥

अथ गनागनरूप वर्णन ।

मगन त्रिगुरुयुत त्रिलघुमय, केशव नगन प्रमान ।
भगन आदिगुरु आदिलघु, यगन बखानि सुजान ॥ १९ ॥
जगन मध्यगुरु जानिये, रगन मध्यलघु होइ ।
सगन अंतगुरु अंतलघु, तगन कहत सब कोइ ॥ २० ॥
आठौं गन के देवता, अरु गुन दोष विचार ।
छंदोग्रंथनि में कह्यो, तिनको बहु विस्तार ॥ २१ ॥

अथ गनागन देवता वर्णन ।

मही देवता मगन को, नाग नगन को देखि ।
जल जिय जानहु यगनको, चंद भगन को लेखि ॥ २२ ॥
सूरज जानहु जगन को, रगन शिखीमय मान ।
वायु समुझिये सगनको, तगन अकाश बखान ॥ २३ ॥

अथ गन मित्रामित्र वर्णन।

मगन नगन को मित्रगनि, यगन भगन को दास।
उदासीन जत जानिये, रस रिपु केशवदास॥ २४।

अथ देवताफल वर्णन। छप्पय।

भूमि भूरि सुख देइ नीर नित आनँदकारी।
आगि अंग दिन दहै सूर सुख सोखै भारी॥
केशव अफल अकाश वायु किल देश उदासै।
मंगल चन्द अनेक नाग बहु बुद्धि प्रकासै॥
यहिविधि कवित्त सब जानिये कर्ता अरु जाके करै।
तजिये प्रबन्ध सब दोषगन, सदा शुभाशुभफल धरै॥ २५॥

अथ द्विगन विचार।

जो कहुँ आदि कवित्त के, अगन होइ बड़भाग।
ताते द्विगन विचार चित, कीन्हों वासुकिनाग॥ २६॥

यथा कवित्त।

मित्र ते जु होइ मित्र बाढ़ै बहु बुद्धि ऋद्धि, मित्रते जु दास त्रास युद्ध ते न जानिये। मित्रते उदास गन होत गोत दुःख उदौ, मित्रते जो शत्रु होइ मित्रबंधु हानिये॥ दासते जु मित्रगन काज सिद्धि केशौदास, दासते जुदास सब जीव सनमानिये॥ दासते उदास होत धननास आसपास, दासते जु शत्रु मित्र शत्रु सो बखानिये॥ २७॥

पुनः ।

जानिये उदासते जो मित्रगन तुच्छ फल, प्रकट उदास ते जो दास प्रभुताइये । होइ जो उदासते उदास तौ न फलाफल, जो उदासही ते शत्रु तौ न सुख पाइये ॥ शत्रुते जो मित्रगन ताहि तौ अफलगन, शत्रुते जो दास आशु वनिता नशाइये । शत्रुते उदास कुल नास होय केशौदास, शत्रुते जो शत्रु नास नायक को गाइये ॥ २८ ॥

अथ गनागन यथा । दोहा ।

राधा राधारमन के, मन पठयो है साथ ।
ऊधौ ह्यां तुम कौनसों, कहौ योगकी गाथ ॥ २९ ॥
कहा कहौं तुम पाहुने, प्राणनाथ के मित्त ।
फिरि पीछे पछिताहुगे, ऊधौ समुझहु चित्त ॥ ३० ॥
दोहा दुहूं उदाहरन, आठौ आठौ पाय ॥
केशव गन अरु अगनके, समुझौ सबै बनाय ॥ ३१ ॥

अथ गुरु लघुभेद वर्णन ।

संयोगी के आदि युत, बिंदु जु दीरघ होय ।
सोई गुरु लघु और सब, कहै सु कवि सुनि लोय ॥ ३२ ॥
दीरघहू लघु कै पढ़ै, सुखही मुख जिहि ठौर ।
सोऊ लघु करि लेखिये, केशवकवि शिरमौर ॥ ३३ ॥

यथा । सवैया ।

पहिले सुखदै सबही को सखी, हरिही हितकै जु हरी मति मीठी ।

दूजे लै जीवनमूरि अकूर, गयो अँग अंग लगाय अँगीठी
अबधौं केहिकारण ऊधव ये, उठिधाये लै केशव झूँठि बसीठी
माथुरलोगनिके सँगकी यह, बैठक तोहिं अजौं न उबीठी ॥ ३४

दो० । संयोगी के आदि युत, कबहुँक बरन बिचारु ।
केशवदास प्रकासवश, लघुकरि ताहि निहारु ॥ ३५

यथा । दोहा ।

अमल जोन्हाई चन्दमुखि, ठाढी भई अन्हाय ।
सौतिनिके मुखकमल ज्यौं, देखि गये कुम्हिलाय ॥ ३६ ।

अथ हीनरस लक्षण ।

बरनत केशवदास रस, जहां बिरस ह्वै जाय ।
ता कवित्तको हीनरस, कहत सकल कविराय ॥ ३७ ।

रसिकप्रिया । सवैया ।

दै दधि दीन्हों उधार है केशव, दान कहा अरु मोललै खैहैं ।
दीन्हें बिना तौ गई जु गई, जु गई न गई घरही फिरि जैहैं ॥
गो हित वैर कियो कबहो हित, वैर किये वर नीके ह्वै रैहैं ।
वैरकै गोरस बेंचहुगी अहो, बेंचो न बेंचो तो ढारि न दैहैं ॥ ३८ ॥

अथ जतिभंग लक्षण । दोहा ।

और चरण के बरणजहँ, और चरण सों लीन ।
सो जतिभंग कवित्त कवि, केशव कहत प्रवीन ॥ ३९ ॥

यथा । दोहा ।

हर हरि केशव मदन मोहन घनश्याम सुजान ।
यों व्रजवासी द्वारका नाथ रटत दिनमान ॥ ४० ॥

अथ व्यर्थ लक्षण ।

एक कवित्त प्रबन्ध में, अर्थ विरोध जु होय ।
पूरुब पर अनमिल सदा, व्यर्थ कहै सब कोय ॥ ४१ ॥

यथा । मरहट्टा छन्द ।

व शत्रु सँहारहु जीव न मारहु साजि योधा उमराव ।
हुबसु मतिलीजै मोमत कीजै दीजै अपनो दाव ॥
ोउ न रिपु तेरो सब जग हेरो तुम कहियतु अतिसाधु ।
छु देहु मँगावहु भूख भगावहु ह्वौ पुनि धनी अगाधु ॥४२॥

अपार्थ लक्षण ।

अर्थ न जाको समुझिये, ताहि अपारथ जानु ।
मतवारो उनमत्त शिशु, कैसे वचन बखानु ॥ ४३ ॥

यथा । दोहा ।

पियेलेत नर सिंधु कहँ, है अति सज्वर देह ।
ऐरावत मनभावतो, देख्यो गर्जत मेह ॥ ४४ ॥

अथ क्रमहीन लक्षण ।

क्रमही गुणनि बखानिये, गुणी सुनै क्रम हीन ।
सो कहिये क्रमहीन जग, केशव कहत प्रवीन ॥ ४५ ॥

यथा। तोटक छन्द।

जगकी रचना कहु कौने करी। केहि राखन की जिय पैज धरी
अति कोपिकै कौन सँहार करै। हरजू हरिजू विधि बुद्धि ररै॥ ४६

अथ कटुवर्ण प्रयोग लक्षण। दोहा।

कहत न नीको लागई, सो कहिये कटुकर्ण।
केशव दास कवित्त में, भूलि न ताको वर्ण॥ ४७

यथा। दोहा।

वारन बन्यो बनाव तन, सुवरण बली विशाल।
चढ़िये राय मँगाइकै, मानहुँ राजत काल॥ ४८

पुनरुक्ति लक्षण।

एकबार कहिये कछू, बहुरि जो कहिये सोइ।
अर्थ होय कै शब्द अब, सुनि पुनरुक्ति सो होइ॥ ४६

यथा। सोरठा।

मघवा घन आरूढ़, इन्द्र आजु अति सोहिये।
व्रजपर कोप्यौ मूढ़, मेघ दशौ दिशि देखिये॥ ५०

दोहा।

दोष नहीं पुनरुक्ति को, एक कहत कविराज।
छांड़ि अर्थ पुनरुक्ति को, शब्द कहौ इति साज॥ ५१
लोचन पैने शरनतें, हैं कछु तोकहँ सुद्धि।
तन बेध्यो मन बेधिकै, बेधी मनकी बुद्धि॥ ५२

देशविरोधी यथा ।

मलयानिल मन हरत हठि, सुखद नर्मदाकूल ।
सुवन सघन घन सारमय, तरवर तरल समूल ॥ ५३ ॥
मरुसुदेश मोहन महा, देखौ सकल सभाग ।
अमलकमलकुलकलितजहँ, पूरण सलिल तड़ाग ॥ ५४ ॥

कालविरोधी यथा ।

प्रफुलित नव नीरज रजनि, वासर कुमुद विशाल ।
कोकिल शरद मयूर मधु, वर्षा मुदित मराल ॥ ५५ ॥

लोकविरोधी ।

स्थायी वीर शिंगार के, करुणा घृणा प्रमान ।
तारा अरु मन्दोदरी, कहत सती सम मान ॥ ५६ ॥

अथ न्याय आगमविरोधी ।

पूजै तीनौं वर्ण जग, करि विप्रन सों भेद ।
पुनि लीबो उपवीत हम, पढ़ि लीजै सब वेद ॥ ५७ ॥
यहि विधि औरौ जानियहु, कविकुल सकल विरोध ।
केशव कह्यो कछूक अब, मूढ़न के अनुरोध ॥ ५८ ॥

इति श्रीमद्विविधभूषणभूषितायां कविप्रियायां कवित्त-
दूषणवर्णनं नाम तृतीयः प्रभावः ॥ ३ ॥

अथ कविभेदवर्णन। दोहा।

केशव तीनों लोक में, त्रिविध कविन के राय।
मति पुनि तीन प्रकारकी, वर्णत सब सुख पाय ॥ १ ॥
उत्तम मध्यम अधम कवि, उत्तम हरिरस लीन।
मध्यम मानत मानुषनि, दोषनि अधम प्रवीन ॥ २ ॥

यथा। सवैया।

जो अति उत्तम ते पुरुषारथ जे परमारथ के पथ सोहैं।
केशवदास अनुत्तम ते नर संतत स्वारथ संयुत जोहैं ॥
स्वारथ हू परमारथ भोगनि मध्यम लोगनि के मन मोहैं।
भारथ पारथ मीत कहौ परमारथ स्वारथहीन ते को हैं ॥३॥

अथ कविरीतिवर्णन। दोहा।

सांची बात न वरणहीं, झूंठी वरणहिं बानि।
एक न वरणै नियमकरि, कवि मति त्रिविध बखानि ॥ ४ ॥

सत्यबातवर्णन।

केशवदास प्रकास बस, चंदन के फल फूल।
कृष्णपक्ष को जोन्ह ज्यों, शुक्लपक्ष तम तूल ॥ ५ ॥

मिथ्यावर्णन।

जहँ जहँ वरणत सिंधु सब, तहँ तहँ रत्ननि लेखि।
सूक्षम सरवरहू कहैं, केशव हंस विशेखि ॥ ६ ॥
लेन कहै भरि मूठि तम, सूजनि सियनि बनाय।

अंजलिभरि पीवन कहहि, चंद चंद्रिका पाय ॥ ७ ॥
सबके कहत उदाहरण, बाढ़ै ग्रंथ अपार ।
कहूं कहूं ताते कहे, कविकुल चतुर विचार ॥ ८ ॥

यथा तमकोउदाहरण । कवित्त ।

कंटक न अटकै न फाटत चरण चापि बातते न जात उड़ि अंग न उघारिये । नेकहू न भींजत मुसलधार बरसत कीच ना रचत रंचु चित में विचारिये ॥ केशवदास सावकास परमप्रकास न उसारिये पसारिये न पियपै बिसारिये । चलियेजु ओढ़ि पट तमही को गाढ़ो तन पातरो पिछौरा श्वेत पाटको उतारिये ॥ ९ ॥

चंद्रिका को उदाहरण । कवित्त ।

भूषण सकल घनसारही कै घनश्याम कुसुम कलित केसरही छवि छाईसी । मोतिन की लरी शिर कण्ठ कण्ठमालहार और रूप ज्योतिजात हेरत हेराईसी ॥ चंदन चढ़ाये चारु सुन्दरशरीरसब राखी शुभ शोभा सबबसन बसाईसी । शारदासी देखियतु देखो जाइ केशवराय ठाढ़ी वह कुवँरि जुन्हाई में अन्हाईसी ॥ १० ॥

अथ कविनियम वर्णन । दोहा ।

वर्णत चंदन मलयही, हिमिगिरिही हिमिजात ।
वर्णत देवनि चरणते, शिरते मानुष गात ॥ ११ ॥
अति लज्जायुत कुलवधू, गणिकागण निर्लज्ज ।
कुलटाको कोविद कहहिं, अंग अलज्ज सलज्ज ॥ १२ ॥

वर्णत नारी नरनते, लाज चौगुनी चित्त ।
भूख दुगुन साहस छगुन, काम अठगुनो नित्त ॥ १३ ॥
कोकिलको कलबोलिबो, वरणतहैं मधुमास ।
बरषाही हरषित कहहिं, केकी केशवदास ॥ १४ ॥
दनुजनिसोंदितिसुतनिसों, असुरै कहत बखानि ।
ईशशीश शशिवृद्धि को, बरणत बालकबानि ॥ १५ ॥
सहज सिंगारति सुंदरी, यदपि सिंगार अपार ।
तदपि बखानत सकलकवि, सोरहई सिंगार ॥ १६ ॥

सोरहसिंगार यथा । कवित्त ।

प्रथम सकल शुचि मज्जन अमल वास जावक सुदेश केशपाशको सुधारिबो । अंगराग भूषण विविध मुख बास राग कज्जल कलित लोल लोचन निहारिबो ॥ बोलनि हँसनि मृदु चातुरी चलनि चारु पल पल प्रति पतिव्रत प्रतिपारिबो । केशवदास सविलास करहु कुवँरि राधे इहि विधि सोरहौ सिंगारनि सिंगारिबो ॥ १७ ॥

दोहा ।

कुलटनि के पति प्रेमबस, बारबधुनि के दान ।
जाहि दई पितु मातु सो, कुलजा को पति मानु ॥ १८ ॥
महापुरुष को प्रगट ही, बरणत वृषभ समान ।
दीपथंभ गिरिगज कलश, सागर सिंह प्रमान ॥ १९ ॥

कवित्त ।

गुनमनि आगररु धीरजको सागर उजागर धवलधर धर्मधुर धायेजू । खलतरु तोरिबेको राजै गजराजसम अरिगजराजनि को सिंहसम गायेजू ॥ वामिन को वामदेव कामिनको कामदेव रन-जय थंभ रामदेव मन भायेजू । काशीकुलकलश सुवृद्ध जंबूदीप दीप केशवदास कल्पतरु इन्द्रजीत आयेजू ॥ २० ॥

दोहा ।

वृषभ कंध स्वर मेघसम, भुजभुज अहि परमान ।
उरसम शिलाकपाट अँग, और त्रियानि समान ॥ २१ ॥

कवित्त ।

वानी ज्यों गँभीर मेघ सुनत सखाशिखीन सुख अरिउरनि जवासे ज्यों जरतहैं । जाके भुजदंड भुवलोकके अभय ध्वज देखि देखि दुर्ज्जन भुजंग ज्यों डरतहैं ॥ तोरिबे को गढ़तरु होतहैं शिला स्वरूप राखिबेको द्वारनि किवाँर ज्यों अरतहैं । भूतलको इन्द्र इन्द्रजीत जीवै जुग जुग जाके राज केशवदास राजसो करतहैं॥२२॥

इति श्रीमद्विविधभूषणभूषितायां कविप्रियायां कविव्यवस्था-लंकारवर्णनं नाम चतुर्थः प्रभावः ॥ ४ ॥

अथ कविताअलंकारवर्णन । दोहा ।

यदपि सुजाति सुलक्षणी, सुवरनसरस सुवृत्त ।
भूषण बिन न विराजई, कविता वनिता मित्त ॥ १ ॥
कविन कहे कवितानिके, अलंकार द्वै रूप ।
एक कहे साधारणहिं, एक विसिष्ट स्वरूप ॥ २ ॥

असामान्यालंकारवर्णन ।

सामान्यालंकार को, चारि प्रकार प्रकास ।
वर्ण वर्ण्य भू राज श्री, भूषण केशवदास ॥ ३ ॥

अथ वर्णालंकार ।

श्वेत पीत कारे अरुण, धूम्र सुनीले वर्ण ।
मिश्रित केशवदास कहि, सात भांति शुभ कर्ण ॥ ४ ॥

अथ श्वेतवर्णन ।

कीरति हरिहय शरद्घन, जोन्ह जरा मंदार ।
हरि हर हरगिरि सूरि शशि, सुधासौध घनसार ॥ ५ ॥
बलबेक हीरा केवरो, कौड़ी करका कांस ।
कुंद केचुली कमल हिमि, सिकता भसम कपास ॥ ६ ॥
खांड़ हाड़ निर्भर चवँर, चंदन हंस मुरार ।
छत्र सत्ययुग दूध दधि, शंख सिंह उड़मार ॥ ७ ॥
शेष सुकृत शुचि सत्त्वगुण, संतन के मन हास ।
सीप चून ओडर फटिक, खटिका फेन प्रकास ॥ ८ ॥

शुक्र सुदरशन सुरसरित, वारन वाजि समेत ।
नारद पारद अमलजल, शारदादि सब श्वेत ॥ ६

कवित्त ।

कीन्हे छत्र छितिपति केशवदास गणपति दसन वसन वर मति कह्यो चारु है । विधि कीन्हो आसन शरासन असमश आसन को कीन्हो पाकशासन तुषारु है ॥ हरि कीन्ही सेज हरि प्रिया कियो नाकमोती हर कीन्हो तिलक हराहू कियो हारु है राजा दशरथसुत सुनो राजा रामचंद्र रावरो सुयश सब जगको शृँगारु है ॥ १० ॥

देहद्युति हलधर कीन्ही निशिकरकर जगकरवानी वरविमल विचारु है । मुनिगन मनमानि द्विजन जनेऊ जानि करशंख शंख पानि सुखद अपारु है ॥ केशौदास सविलास विलसैं विलासिनीनि सुख मुख मृदुहास उदित उदारु है । राजा दशरथसुत सुनो राजा रामचंद्र रावरो सुयश सब जगको शृँगारु है ॥ ११ ॥

नारायण कीन्हीमानि उर अवदातगनि कमलाकीबानीभनि शोभा शुभसारु है ॥ केशव सुरभिकेश शारदासुदेश वेश नारदको उपदेश विशद विचारु है ॥ शौनकऋषी विशेखि शीरषशिखानि लेखि गंगा की तरंग देखि विमल विहारु है । राजा दशरथसुत सुनो राजा रामचंद्र रावरो सुयश सब जगको शृँगारु है ॥ १२ ॥

अथ जरावर्णन । सवैया ।

विलोकि शिरोरुह श्वेतसमेत तनोरुह केशव यों गुण गायो ।
उठे किधौं आयु कि औधिके अंकुर शूल कि सुःख समूल नशायो ॥
लिख्यो किधौं रूपके पाणि पराजय रूपको भूप कुरूप लिखायो ।
जरा शरपंजर जीव जस्यो कि जरा जरकंबर सो पहिरायो ॥ १३ ॥
अभिराम सचिक्कन श्यामसुगंधहु धामहुते जे सुभाइकके ।
प्रतिकूल सबै दृगशूल भये किधौं शाल शृंगारके घाइकके ॥
निजदूत अभूत जरा के किधौं अविताली जरा जनलाइकके ।
सितकेश हिये यहि वेश लसैं जनु साइक अंतकनाइकके ॥ १४ ॥
लसैं सितकेश शरीर सबै कि जरा जस रूपके पानी लिखायो ।
सुरूपको देश उदातकै कीलनि कीलितु कैकै कुरूप नसायो ॥
जरैं किधौं केशव व्याधिनिकी किधौं ओपि के अंकुर अंत न पायो ।
जरा शरपंजर जीव जस्यो कि जरा जरकंबर सो पहिरायो ॥ १५ ॥

अथ पीतवर्णन । दोहा ।

हरिवाहन विधि हरजटा, हरा हरद हरताल ।
चंपक दीपक वीररस, सुरगुरु मधु सुरपाल ॥ १६ ॥
सुरगिरि भू गोरोचना, गंधक गोधनमूत ।
चक्रवाक मनशिल सदा, द्वापर वानरपूत ॥ १७ ॥
कमलकोश केशव वसन, केसरि कनक सभाग ।
सारोमुख चपला दिवस, पीतरि पीतपराग ॥ १८ ॥

सवैया।

मंगलही जु करी रजनी विधि याहीते मंगली नाम धस्यो है।
दूसरे दामिनि देहसवाँरि उड़ायदई घन जाइ वस्यो है॥
रोचनको रचि केतकी चंपक फूलनिमें अँगवासु भस्यो है।
गौरि गोराईको मैल मिलैकरि हाटक लै करहाट कस्यो है॥१६॥

अथ श्यामवर्णन। दोहा।

विन्ध्यवृक्ष आकाश असि, अरजुन खंजन सांप।
नीलकंठको कंठ शनि, व्यास विसासी पाप॥ २० ॥
राकस अगर लँगूरमुख, राहु छाहु मदरोर।
रामचंद्र घन द्रौपदी, सिंधु असुर तम चोर॥ २१ ॥
जंबू जमुना तैल तिल, खलमन सरसिज चीर।
भील करी वन नरक मसि, मृगमद कज्जल नीर॥ २२ ॥
मधुप निशा शृंगाररस, काली कृत्या कोल।
अपयश ऋक्ष कलंक कलि, लोचन तारे लोल॥ २३ ॥
मारग अगिनि किसान नर, लोभ क्षोभ दुख द्रोह।
विरह यशोदा गोपिका, कोकिल महिषी लोह॥ २४ ॥
कांचकीच कचकाम मल, केकी काक कुरूप।
कलह छुद्र छल आदिदै, कारे कृष्णसुरूप॥ २५ ॥

यथा। कवित्त।

बैरिनके बहुभांति देखतही लागिजाति कालिमा कमलमुख सब

जग जानीहै। जतन अनेक करि जदपि जनमभरि धोवतहूं छूटत न केशव बखानीहैं॥ निजदल जागै ज्योति परदल दूनी होति अचलौ चलत यह अकहकहानीहै। पूरणप्रताप दीप अंजन की लीक राजै राजति श्रीरामचंद्रपानिमैं कृपानीहै॥ २६॥

हंसनिके अवतंस रचे रंचुकीच करि सुधासों सुधारे मठ कांचके कलससों। गंगाजूके अंगसंग जमुनातरंग बलदेवकोवदन रस्यो वारुनीके रससों॥ केशव कपालीकंठ कालकूट कट्ट जैसे अमल कमल अलि सोहै ससिससमसों। राजा रामचन्द्रजूके त्रासवश भारे भूप भूमिछोड़ि फिरैं भागे ऐसे अपजससों॥ २७॥

अथ रक्तवर्णन। दोहा।

इंद्रगोप खद्योत कुज, केसारि कुसुम विशेखि।
केशव गजमुख बिंदुरवि, तांबो तक्षक लेखि॥ २८॥
रसना अधर दगंत पल, कुकुटशिखा समान।
मानिक सारस सीप शुक, वानरवदन प्रमान॥ २९॥
कोकिल चारु चकोर पिक, पारावत नख नैन।
चिंचु चरन कलहंसकी, पाकी कुँदरू ऐन॥ ३०॥
जपाकुसुम दाड़िमकुसुम, किंशुक कंज अशोक।
पावक पल्लव वीटिका, रंग रुचिर सब लोक॥ ३१॥
रातो चंदन रौद्ररस, छत्रीधर्म मँजीठ।
अरुण महाउर रुधिर नख, गेरू संध्या ईठ॥ ३२॥

सवैया ।

फूले पलास विलासथली कहि केशवदास प्रकास न थोरे ।
शेष अशेषमुखानलकी जनु ज्वालविशाल चली दिविओरे ॥
किंशुक श्रीशुकतुंडनि की रुचि राचै रसातलमें चितचोरे ।
चिंचुनिचापि चहूंदिशि डोलत चारुचकोर अँगारनि भोरे ॥३३॥

अथ धूम्र वर्णन । दोहा ।

काककण्ठ खर मूषको, गृहगोधा भनि भूरि ।
करभ कपोतनि आदिदै, धूम्र धूमिली धूरि ॥ ३४ ॥

यथा। सवैया ।

राघवकी चतुरंगचमू चय धूरि उठी जलहूँ थल छाई ।
मानो प्रताप हुताशनधूमसो केशवदास अकास न माई॥
मेटिकै पंच प्रभूत किधौं विधि रेनुमई नवरीति चलाई ।
दुःख निवेदनको भवभारको भूमि मनौं सुरलोक सिधाई ॥३५॥

अथ नीलवर्णन । दोहा ।

दूब वंश कुवलय नलिन, अनिल व्योम तृण बाल ।
मरकतमणि हयसूरके, नीलवरण से बाल ॥ ३६ ॥

यथा ।सवैया ।

कण्ठ दुकूल सुओर दुहूं उरमैं उरमैं बलकै बलदाई ।
केशव सूरजअंशनि मंडि मनो जमुनाजलधार सिधाई ॥
शंकरशैल शिलातलमध्य किधौं शुककी अवली फिरि आई।

नारद बुद्धिविशारदाहीय किधौं तुलसीदलमाल सुहाई ॥३७॥

अथ श्वेतकृष्णमिश्रित शब्दकथन । दोहा।

सिंहकृष्ण हरि शब्दगुनि, चंद विष्णु बुध देखि ।
अभ्रकधातु अकाश पुनि, श्वेत श्याम शित लेखि ॥ ३८॥
घनकपूर घनमेघ अरु, नागराज गज शेषु ।
पयोराशि कहि सिंधुसों, अरु क्षिति क्षीरहि लेषु॥ ३९ ॥
राहु सिंह सिंहीजभनि, हरि बलभद्र अनन्त ।
अर्जुन कहिये श्वेतसो, अरु पारथ बलवन्त ॥ ४० ॥
हरिगज सुरगज समुझिये, हरिहरि गजगज जानि ।
कोकिल सों कलकण्ठकहि, अरु कलहंस बखानि ॥ ४१ ॥
कृष्ण नदीवरशब्द सों, गंगासिंधु बखानि ।
नीरद निकसे दन्तको, अरुजु नीरको दानि ॥ ४२ ॥

अथ श्वेतपीतशब्द कथन ।

शिव विरंचिसों शंभु भणि, रजतरजत अरु हेम ।
स्वर्ण सारसों कहत हैं, अष्टापद करि नेम ॥ ४३ ॥
सोम स्वर्ण कहि चंद कल, धौत रजत अरु हेम ।
तारकूट रूपो रुचिर, पीतरि कहिकरि प्रेम ॥ ४४ ॥

अथ श्वेतरक्त शब्द कथन ।

श्वेतवस्तु शुचि अगिनि शुचि, सूर सोम हरि होइ ।
पुष्कर तीरथ सों कहैं, पंकज सों सब लोइ ॥४५ ॥

हंस हंसरवि वरणिये, अर्क फटिक रवि मानि ।
अब्ज शंख सरसिज दुवौ, कमलकमलजलजानि ॥ ४६ ॥

इति श्रीमद्विविधभूषणभूषितायांकविप्रियायांसामान्यालंकारे वर्णवर्णनंनाम पंचमःप्रभावः ॥ ५ ॥

अथ वर्ण्यवर्णन ।

संपूरण आवरत औ, कुटिल त्रिकोण सुवृत्त ।
तीक्षण गुरु कोमल कठिन, निश्चल चंचलाचित्त ॥ १ ॥
सुखद दुखद अरु मंदगति, शीतल तप्त स्वरूप ।
क्रूरस्स्वर सुस्वर मधुर, अबल बलिष्ठ कुरूप ॥ २ ॥
सत्य झूठ मण्डलवरणि, अगति सदागति जानि ।
अष्टविंशविधि मैं कहे, वर्ण्य अनेक वखानि ॥ ३ ॥

अथ संपूर्णवर्णन ।

इतने संपूरण सदा, वरणे केशवदास ।
अंबुज आनन आरसी, संत सुप्रेम प्रकास ॥ ४ ।

यथा । कवित्त ।

हरिकरमंडन सकलदुखखंडन मुकुरमहिमंडल के कहत अखण्ड मति । परमसुवास पुनि पीयुषनिवास परिपूरण प्रकास केशौदार भू अकासगति ॥ वदन मदन कैसो श्रीजूकेसदनशुभ सोदर शुभोद दिनेशजूके मित्रअति । सीता जूके मुख सुखमा के उपमाको सवि कोमल कमल नहिं अमल रजनिपति ॥ ५ ॥

मंडलवर्णन। दोहा।

केशव कुंडल मुद्रिका, बलया बलय बखानि।
आलबाल परिवेष रवि, मंडल मंडल जानि ॥ ६ ॥

यथा। कवित्त।

मणिमय आलबाल थलज जलज रविमंडलमें जैसे भाति मोहै कवितानि की। जैसे सविशेष परिवेषमें अशेषरेख शोभित सुवेष सोमसीमा सुखदानि की ॥ जैसे बंकलोचन कलित करकंकणानि बलित ललित द्युति प्रकट प्रभानि की। केशौदास तैसे राजै रासमें रसिकराइ आसपास मंडली विराजै गोपिकानि की ॥ ७ ॥

अथ आवर्तवर्णन। दोहा।

ये आवर्त बखानिये, केशवदास सुजान।
चकरी चक्र अलात पुनि, आतपत्र खरसान ॥ ८ ॥

यथा। कवित्त।

दुहूंरुख मुखजाकी पलट न जानीजाति देखिकै अलातज्ञात ज्योति होति मंदलाजि। केशौदास कुशल कुलालचक्र चक्रमन चातुरी चितैकै चारु आतुरी चलतिभाजि ॥ चंदजूके चौहूंकोद वेष परिवेष कैसो देखतही रहिये न कहिये वचनसाजि। धापछांड़ि आपनिधि जानिदिशि दिशि रघुनाथजूके क्षत्रतर भ्रमत भ्रमीन बाजि ॥ ९ ॥

अथ कुटिलवर्णन । दोहा ।

अलक अलिक भ्रूकुंचिका, किंशुक शुकमुख लेखि ।
अहि कटाक्ष धनु बीजुरी, कंकनभंग विशेखि ॥ १० ॥
बालचंद्रिका बालशशि, हरिनख शूकरदंत ।
कुद्दालादिक वरणिये, कपटी कुटिल अनंत ॥ ११ ॥

यथा । सवैया ।

भोर जगी वृषभानुसुता अलसी विलसीनिशि कुंजविहारी ।
केशव पोंछति अंचलछोरनि पीक सुलीक गई मिटिकारी ॥
वंकलगे कुचबीच नखक्षत देखिभई दृग दूनी लजारी ।
मानौ वियोगवराह हन्यो युग शैलकी संधिमें इंगवैडारी॥ १२ ॥

त्रिकोणवर्णन । दोहा ।

शकट सिंघारो वज्रहर, हरके नैन निहारि ।
केशवदास त्रिकोणमहि, पावककुण्ड विचारि ॥ १३ ॥

यथा । कवित्त ।

लोचन त्रिलोचनके केशव विलोकि विधि पावकके कुण्डसी त्रिकोण कीन्ही धरणी । सोधीहै सुधारि पृथु परमपुनीत नृप करिकरि पूरन दशहुँ दिशिं करणी ॥ ज्वाल सो जगतजग्गु सुभग सुमेर तामैं जाकी ज्योति होति लोक लोक मनहरणी । थिर चर जीव हवि होमियतु युगयुग होता होत काल न जुगुति जाति वरणी ॥ १४ ॥

सुवृत्तवर्णन। दोहा।

वृत्त बेल भनि गुच्छ अरु, ककुदकंध रथअंग।
कुंभि कुंभ कुच अंड भनि, कंदुक कलश सुरंग॥ १५॥

यथा। कवित्त।

परमप्रवीन अति कोमल कृपाल तेरे उरते उदित नित चित हितकारी हैं। केशवरायकीसों अतिसुंदर उदार शुभ सलज सुशील विधि मूरति सुधारी हैं॥ काहू सों न जानै हँसि बोलनि विलोकि जानै कंचुकीसहित साधु ऐसी वैसवारी है। ऐसेहौं कुचनि सकुचनि न सकति बूझि परहिय हरनि प्रकृति कौने पारी है॥ १६॥

तीक्ष्ण गुरुवर्णन। दोहा।

नख कटाक्ष शर दुर्वचन, सेलादिक खर जानि।
कुच नितम्ब गुणलाजमति, रति अति गुरु करिमानि॥ १७॥

यथा। कवित्त।

सैहँथी हथ्यार ये निनारेहैं अनेक कामशरहूँ ते खरो खलवचन विशेखिये। चोट न बचत ओट कीन्हेंहूं कपाटकोट मौनभ्वैंहरेहूं भारे भय अवरेखिये॥ केशौदास मंत्र तंत्र यंत्रऊ न प्रतिपक्ष रक्ष लक्षलक्ष वज्र रक्षक न लेखिये। भेदियत चर्म वर्म ऊपर कसेई रहैं पीर घनी घायलनि घायपै न देखिये॥ १८॥

गुरुलाजवर्णन। सवैया।

पहिले तजि आरस आरसी देखि घरीक घसे घनसारहि लै।

पुनि पोंछि गुलाब तिलोंछि फुलेल अँगौछनि आछे अँगौछनिकै॥
कहि केशव मेद जवादिसों मांजि इतेपर आंजे में अंजन दै।
बहुरयो दुरि देखौं तौ देखौं कहा सखि लाज तौ लोचनलागियै है १६

कोमलवर्णन। दोहा।

पल्लव कुसुम दयाल मन, माखन मृदुल मुरार।
पाट पामरी जीभ पद, प्रेम सुपुण्य विचार॥ २०॥

यथा। कवित्त।

मैन ऐसो मन मृदु मृदुलमृणालिकाके सूतकैसो स्वरधुनि मनहिं हरति हैं। दारयो कैसे बीज दांत पातसे अरुण ओंठ केशौदास देखि हग आनँद भरति हैं॥ येरी मेरी तेरी मोहिं भावत भलाई ताते बूझतिहौं तोहिं और बूझति डरति हैं। माखनसी जीभ मुखकंजसो कवर कहि काठसी कठेठी बातें कैसे निकरति हैं॥ २१॥

अथ कठोरवर्णन। दोहा।

कुच कठोर भुजमूल मणि, वरणि वज्र कहि मित्त।
धातु हाड़ हीरा हियो, विरहीजनके चित्त॥ २२॥
शूरनके तन सूम मन, काठ कमठकी पीठि।
केशव सूखो चर्म ज्यौं, शठहठ दुर्जन दीठि॥ २३॥

यथा। कवित्त।

केशौदास दीरघ उसासनि की सदागति आयुको अकाशकी प्रकाश पाप भोगीको। देह जात जातरूप हाड़निको रूपौ रूप रूप

को कुरूप विधु वासर वियोगीको ॥ बुद्धिन की बीजुरीकै नैननिको धाराधर छातीको घरयार घनघाइन प्रयोगीको । उदरको बाड़वा अनल गेह मानतहौं जानतहौं हीरा हियो काहू पुत्रशोगीको ॥ २४ ॥

निश्चलवर्णन । दोहा ।

सती समर भट संतमन, धर्म अधर्म निमित्त ।
जहां तहां ये वरणिये, केशव निश्चल चित्त ॥ २५ ॥

यथा । सवैया ।

काय मनों वच काम न लोभ न मोह न मोहै महाभय जेता ।
केशव बाल बहिक्रम बृद्ध बिपत्तिनहूं अति धीरज चेता ॥
है कलिमें करुणा वरुणालय कौन गनै कृत द्वापर त्रेता ।
येई तौ सूरजमंडल बेधत सूर सती अरु ऊरधरेता ॥ २६ ॥

चंचलवर्णन । दोहा ।

तरल तरंग कुरंग घन, बानर चलदल पान ।
लोभिन के मन स्यारजन, बालक काल विधान ॥ २७ ॥
कुलटा कुटिल कटाक्ष मन, सपनो जोबन मीन ।
खंजन अलि गजश्रवण श्री, दामिनि पवन प्रवीन ॥ २८ ॥

यथा । कवित्त ।

भौंर ज्यों भवँत लोल ललना लतानि प्रति खंजनसे थल मीन मानों जहां जलहै । सपनेहू होत कहूं आपनो न आपनेये भूलिये न नैन ऐन आक कैसो फलहै॥ गहिये धौं कौन गुन देखतही रहियेरी

कहिये कछू न रूप मोहको महलहै। चपलासी चमकनि सोहै चारु चौहूंदिशि कान्हको सनेह चलदल कैसो दलहै ॥ २९ ॥

अथ सुखदवर्णन । दोहा ।

पण्डित पूत पतिव्रता, विद्या वपुष निरोग ।
सुखही फल अभिलाष के, संपति मित्र सँयोग ॥ ३० ॥
दान मान धन योग जय, राग वाग गृह रूप ।
सुकृति भोग सरवज्ञता, ये सुखदानि अनूप ॥ ३१ ॥

यथा । सवैया ।

पण्डितपूत सपूत सुधी पतिनी पतिप्रेम परायण भारी ।
जानै सबै गुण मानै सबै जन दानविधान दयाउरधारी ॥
केशव रोगनहीं सों वियोग सँयोग सुभोगनि सों सुखकारी ।
सांच कहै जगमाहिं लहै यश मुक्ति यहै चहुँवेद विचारी ॥ ३२ ॥

अथ दुखदवर्णन । दोहा ।

पाप पराजय झूठ हठ, शठता मूरख मित्त ।
ब्राह्मण नेगी रूप बिन, असहनशीलचरित्त ॥ ३३ ॥
आधि व्याधि अपमान ऋण, परघर भोजन बास ।
कन्या संतति वृद्धता, वरषा काल प्रबास ॥ ३४ ॥
कुजन कुस्वामी कुगति हय, कुपुरनिवास कुनारि ।
परवश दारिद आदिदै, अरि दुखदानि विचारि ॥ ३५ ॥

यथा । कवित्त ।

बाहन कुचाली चोर चाकर चपलाचित्त मित्त मतिहीन सूमस्वामी

उरआनिये । परघर भोजन निवास वास कुपुरन केशौदास वरषा प्रवास दुखदानिये ॥ पापिन के अंग संग अंगना अनंग-वश अपयशयुत सुत चित हितहानिये । मूढ़ता मुढाई व्याधि दारिद झुठाई आधि यहई नरक नरलोकनि बखानिये ॥ ३६ ॥

मंदगतिवर्णन । दोहा ।

कुलतिय हासविलास बुध, काम क्रोध मन मानि ।
शनि गुरु सारस हंस गज, तियगति मंद बखानि ॥ ३७ ॥

यथा । कवित्त ।

कोमल विमलमन विमलासी सखी साथ कमल ज्यों लीन्हे हाथ कमला सनालको । नूपुरकी धुनि सुनि भोरैं कलहंसनि के चौंकि चौंकि उठै चारु चेटुवा मरालको ॥ कचनिके भार कुचभारनि सकुच भार लचकि लचकि जात कटितट बालको । हरे हरे बोलति विलोकति हँसति हरे हरे हरे चलति हरति मन लालको ॥ ३८ ॥

शीतलवर्णन । दोहा ।

मलयज दाख कलिंद सुख, औरे मिश्री मीत ।
प्रियसंगम घनसार शशि, जल जलरुह हिमि शीत ॥ ३९ ॥

यथा । कवित्त ।

शीतल समीर टारु चंद्रचंद्रिका निवारु ऐसेही तौ केशौदास हरष हेरातु है । फूलनि फैलाइ डारु झारिडारु घनसारु चंदन को ढारु चित्त चौगुनो पिरातु है ॥ नीरहीन मीन मुरझाइ जीवै नीरहीते

छीरके छिरीके कहा धीरज धिरातु है । पाईहै तैं पीर किधौं योंही उपचारु करै आगिही को डाढ़ो अंग आगिही सिरातु है ॥४०॥

तप्तवर्णन। दोहा।

रिपुप्रताप दुर्वचन तप, तप्त वचन संताप।
सूरज आगि बजागि दुख, तृष्णा पाप विलाप ॥ ४१ ॥

यथा। कवित्त।

केशौदास नींद भूख प्यास उपहास त्रास दुखके निवास विष मुखहू गह्यो परै । वायुको बहन वनदावको दहन बड़ी बाड़वा-अनल ज्वाल जाल मैं रह्यो परै ॥ जीरन जनम जात जोरजुरघोर परि-पूरण प्रकट परिताप क्यों कह्यो परै। सहिहौं तपनि ताप प्रभुके प्रताप रघुवीरको विरह वीर मोपै ना सह्यो परै ॥ ४२ ॥

सुरूपवर्णन। दोहा।

नल नलकूवर सुरभिषकु, हरिसुत मदन निहारि।
दमयंती सीतादि तिय, सुंदर रूप विचारि ॥ ४३ ॥

यथा। कवित्त।

कोहै दमयंती इंदुमती रति रातिदिन होहि न छबीली छिन छवि जो शृंगारिये। केशव लजात जलजात जात वेदओप जातरूप बापुरो विरूप सो निहारिये ॥ मदननिरूप बहुरूप तौ निरूप भये चंद बहुरूप अनरूपक विचारिये । सीताजूके रूपपर देवता कुरूप कोहैं रूपहू को रूपक लै वारि वारि डारिये ॥ ४४ ॥

अथ क्रूरस्वरवर्णन । दोहा ।

झींगुर सांप उलूक अज, महिषी कोल बखानि ।
काल काक वृष करभ खर, श्वान क्रूर स्वर जानि ॥ ४५ ॥

यथा । कवित्त ।

झिल्लीते रसीली जीली रांटहूं की रट लीली स्यारिते सवाई भूतभावती ते आगरी । केशौदास भैंसानि की भामिनीते भासैभास खरीते खरीसी धुनि ऊंटीते उजागरी ॥ भेंड़निकी मीड़ी मेड़ ऐंड़ न्यौरानारिनकी बोकीहूंतें बांकी बानी कागनिकी कागरी । सूकरी सकुचि शंकि कूकरी यों मूकभई घूघूकी घरनि कोहै मोहै नागनागरी ॥ ४६ ॥

अथ सुस्वरवर्णन । दोहा ।

कलरव केकी कोकिला, शुक सारो कलहंस ।
तंत्री कंठनि आदिदै, शुभसुर दुंदुभिवंस ॥ ४७ ॥

यथा । कवित्त ।

कोकिनकी केका सुनि काको न मथत मन मनमथ मनोरथ रथपथ सोहिये । कोकिलाकी काकिलानि कलित ललितबाग देखतही अनुराग उर अवरोहिये ॥ कोकनकी कारिका कहत शुक सारिकानि केशौदास नारिका कुमारिका हूं मोहिये । हंसमाला बोलतही मानकी उतारि माला बोलै नंदलालसों न ऐसी बाल कोहिये ॥ ४८ ॥

अथ मधुरवर्णन । दोहा ।

मधुर प्रियाधर सोमकर, माखन दाख समान ।
बालक बातैं तोतरी, कविकुल उक्तिप्रमान ॥ ४९ ॥
महुवा मिश्री दूध घृत, अति शिंगार रस मिष्ट ।
ऊख मयूख पियूख गनि, केशव सांचे इष्ट ॥ ५० ॥

रसिकप्रियायाम् । सवैया ।

खारिका खात न माखन दाख न दाड़िमहूं सह मेटि इठाई ।
केशव ऊख मयूखहु दूखत आईहौं तोपहँ छांड़ि जिठाई ॥
तो रदनक्षदको रसरंचक चाखिगये करिकेहूं ढिठाई ।
तादिनते उन राखी उठाइ समेत सुधा वसुधाकी मिठाई ॥ ५१ ॥

अबलवर्णन । दोहा ।

पंगु गुंग रोगी वणिक, भीत भूख युत जानि ।
अंध अनाथ अजादि शिशु, अबला अबल वखानि ॥ ५२ ॥

यथा । कवित्त ।

खात न अघात सब जगत खवावतहै द्रौपदी के साग पात खातही अघानेहौ । केशौदास नृपतिसुताके सतिभाय भये चौरते चतुर भुज चहूंचक्र जानेहौ ॥ मांगनेऊ द्वारपाल दास दूत सूत सुनौ काठमाहिं कौन पाठ वेदन बखानेहौ । और है अनाथनको नाथ कोऊ रघुनाथ तुमतौ अनाथनके हाथही बिकानेहौ ॥ ५३ ॥

अथ बलिष्ठवर्णन । दोहा ।

पवन पवनको पूत अरु, परमेश्वर सुरपाल ।

काम भीम बाली हली, बलिराजा पृथु काल ॥ ५४ ॥
सिंह बराह गयन्द गुरु, शेष सती सब नारि ।
गरुड़ वैद माता पिता, बली अदृष्टविचारि ॥ ५५ ॥

यथा । सवैया ।

वालि बध्यो बलिराउ बँध्यो कर शूलीके शूल कपाल थली है ।
काम जर्‌यो जग काम पर्‌यो बंदि शेषधर्‌यो विष हालाहली है ॥
सिंधु मथ्यो किल काली नथ्यो कहि केशव इन्द्र कुचालचली है ।
रामहूंकी हरी रावण बाम तिहूंपुर एक अदृष्टबली है ॥ ५६ ॥

अथ सत्य झूठवर्णन । दोहा ।

केशव चारिहुँ वेदको, मन क्रम वचन विचार ।
सांचो एक अदृष्ट है, झूठो सब संसार ॥ ५७ ॥

यथा । सवैया ।

हाथी न साथी न घोरे न चेरे न गाउँ न ठाउँ को नाउँ बिलैहै ।
तात न मात न पुत्र न मित्र न वित्त न अंगऊ संग न रैहै ॥
केशव कामको राम विसारत और निकाम न कामहिं ऐहै ।
चेतुरे चेतु अजौं चितु अंतर अंतकलोक अकेलोहि जैहै ॥ ५८ ॥

पुनः । कवित्त ।

अनठिकहीको ठग जानैना कुठौर ठौर ताही पैठ गावै ठेलि जाही को ठगतु है । याके तौ डरनि डरि डगनिडगत डरि डरिकै डरनि डगैडौनी ज्यों डगतु है । ऐसो बसेबासते उदास होहि केशौदास

काहे न भजतु कहि काहे को भजतु है ॥ झूठो है रे झूठो जग रामकी दोहाई काहू सांचेको कियोहै तातें सांचोसो लगतु है ॥५६॥

अथ अगति सदागतिवर्णन । दोहा ।

अगति सिंधु गिरि ताल तरु, वापी कूप बखानि ।
महानदी नद पंथ जग, पवन सदा गतिजानि ॥ ६० ॥

यथा । कवित्त ।

पंथना थकित पल मनोरथ रथनिके केशौदास जगमग जैसे गाये गीत मैं । पवन विचार चक्र चक्रमन चित्त चढ़ि भूतल अकाश भ्रमैं घाम जल शीत मैं ॥ कौलौं राखौं थिर वपु वापी कूप सर सम हरि विन कीन्हें वहुवासर वितीत मैं । ज्ञानगिरि फोरि तोरि लाजतरु जाइ मिलैं आपुही ते आपगा ज्यों आपानिधि पीत मैं ॥ ६१ ॥

अथ दानि वर्णन । दोहा ।

गौरि गिरीश गणेश विधि, गिरा ग्रहन को ईश ।
चिन्तामणि सुरवृक्ष गो, जगमाता जगदीश ॥ ६२ ॥
रामचन्द्र हरिचन्द नल, परशुराम दुखहर्ण ।
केशवदास दधीचि पृथु, बलि सुविभीषण कर्ण ॥ ६३ ॥
भोज विक्रमादित्य नृप, जगदेव रणधीर ।
दानिन हूं के दानि दिन, इन्द्रजीत वरवीर ॥ ६४ ॥

अथ गौरीको दान ।

पावक फनि विष भस्म मुख, हरपवर्गमय मानु ।

देतजु हैं अपवर्ग कहँ, पारवतीपति जानु ॥ ६५ ॥

अथ महादेवजू को दानवर्णन । यथा । कवित्त ।

काँपि उठ्यो आपपति तपनहिं ताप चढ़ी सीरीये शरीरगति भई रजनीश की । अजहूँ न उंचोचाहै अनल मलिन मुख लागि रही लाज मन मानो मनबीश की ॥ छबिसों छबीली लक्षि छातीमैं छपाई हरि छूटिगई दानछबि कोटिहूँ तैंतीश की । केशौदास तेहीकाल कालोई हैआयो काल सुनत श्रवण बकसीस एक ईश की ॥ ६६ ॥

गणेशको दान ।

बालक मृणालनि ज्यौं तोरिडारै सब काल कठिन कराल त्यौं अकाल दीह दुःखको । विपति हरत हठि पद्मिनीके पातसम पंक ज्यौं पताल पेलि पठवै कलुष को ॥ दूरिकै कलंक अंक भवशीश शशि- सम राखतहै केशौदास दासके वपुष को । साँकरेकी साँकरनि सनमुख होतही तौ दशमुख मुख जोवै गजमुखमुख को ॥ ६७ ॥

अथ विधिको दानवर्णन । यथा ।

आशीविष राकसनि दैयतनि दै पताल सुरनि नरनिदीन्हों दिवि भूनिकेत है । थिर चर जीवनको दीन्हीं वृत्ति केशौदास दीबे कहँ और कहो कोऊ कहा हेत है ॥ शीत वात तोय तेज आवत समय पाइ काहूपै न नाखी जाइ ऐसी सकसेतहै । अब तब जब कब जहां तहां जानियतु बिधिहीको दीन्हों सब सबही को देत है ॥६८॥

अथ गिराको दान । यथा ।

बानी जगरानीकी उदारता बखानी जाइ ऐसी मति कहौधौं

उदार कौनकी भई । देवता प्रसिद्ध सिद्ध ऋषिराज तपवृद्ध कहि कहि हारे सब कहि ना कहूं लई ॥ भावी भूत वर्तमान जगत बखानत है केशौदास केहूँ ना बखानी काहू पै गई । वर्णें पितु चारिमुख वर्णें पूत पांच मुख नाती वर्णें षटमुख तदपि नई नई ॥ ६९ ॥

अथ सूर्यको दान । यथा ।

बाधक विविधव्याधि त्रिविध अधिक आधि वेद उपवेद भेद बंधन विधान हैं । जग पारावार पार करत अपार नर पूजत परमपद पावत प्रमान हैं ॥ पुरुषपुरान कहै पुरुषपुरान सब पूरण पुरान सुनि निगम निदान हैं । भोगवान भागवान भगतनि भागवान करिबेको केशौदास मानै भगवान हैं ॥ ७० ॥

अथ परशुरामजी को दान । यथा । सवैया ।

जो धरणी हिरण्याक्ष हरी वरयज्ञ वराह छड़ाइ लई जू ।
दानव मानव देवनिको जु तपोबल केहूं न हाथ भई जू ॥
जालगि केशव भारथभो भुव पारथ जीवनि वीजु बई जू ।
सातौ समुद्रनि मुद्रित राम सो विप्रन बार अनेक दई जू ॥ ७१ ॥

अथ श्रीरामचंद्रजी को दान । यथा । कवित्त ।

पूरणपुराण अरु पुरुष पुरान परिपूरण बतावैं न बतावैं और उक्ति को । दरशन देत जिन्हैं दरशन समुझै न नेतिनेति वेद कहैं छांड़ि भेदयुक्ति को ॥ जानि यह केशौदास अनुदिन रामनाम रटत रहत

न डरत पुनरुक्ति को । रूप देइ अणिमाहिं गुण देइ गरिमाहिं
भक्ति देइ महिमाहिं नाम देइ मुक्ति को ॥ ७२ ॥

पुनः । सवैया ।

जो शतयज्ञ करे करी इंद्रहि सो प्रभुता कपिपुंज सों कीनी ।
ईश दई जु दये दशशीश सुलंक विभीषणै ऐसेहि दीनी ॥
दानकथा रघुनाथकी केशव को बरनै रस अद्भुत भीनी ।
जो गति ऊरधरेतनकी सुतौ औधके सूकर कूकर लीनी ॥ ७३ ॥

हरिचंद को दान । यथा ।

मातुके मोह पिता परितोषन केवल राम भरे रिसभारे ।
औगुण एकही अर्जुनके क्षितिमंडल के सब क्षत्रिन मारे ॥
देवपुरी कह औधपुरी जन केशवदास बड़े अरु बारे ।
सूकर कूकर और सबै हरिचंदकी सत्य सदेह सिधारे ॥ ७४ ॥

अथ बलिको दान । यथा रामचंद्रिका में ।

कैटभसो नरकासुरसो पलमैं मधुसो मुरसो जेहिं मार्‍यो ।
लोक चतुर्दश रक्षक केशव पूरण वेद पुराण विचार्‍यो ॥
श्री कमला कुचकुंकुम मंडित पंडित देव अदेव निहार्‍यो ।
सो कर मांगनको बलिपै करतारहुने करतार पसार्‍यो ॥ ७५ ॥

अथ इंद्रजीतको दान ।यथा । कवित्त ।

कारेकारे तम कैसे पीतम सुधारे विधि वारिवारिडारे गिरि

भननात भुवपाल अभिलाषे हैं ॥ थोरेथोरे मदनि कपोल फूले थूलेथूले डोलैं जल थल बलथानसुत नाषे हैं । दारिद दुवन दीहद-दानि विदारिवेको इंद्रजीत हाथी यों हथ्यार करि राषे हैं ॥७६॥

अथ वीरवरको दान । यथा । सवैया ।

पापकै पुंज पखावज केशव शोकके शंख सुने सुखमा मैं ।
झूंठकी झालरि झांझ अलोककी आवझयूथन जानी जमामैं॥
भेदकी भेरि बड़डरके डफ कौतुकभो कलिके कुरमामैं ।
जूझतही बर बीरबजे बहुदारिदके दरवार दमामैं ॥ ७७ ॥

पुनः ।

नाक रसातल भूधर सिंधु नदी नद लोक रचे दिशिचारी ।
केशव देव अदेव रचे नरदेव रचे रचना न नेवारी ॥
रचिकै नरनाह बलीबर बीर भयो कृतकृत्य बड़ो व्रतधारी ।
दै करतारपनो कर ताहि दई करतार दुवौ कर तारी ॥ ७८ ॥

विभीषण को दान । यथा ।

केशव कैसहु बारिधि बांधि कहा भयो ऋच्छानि जो छितिछाई ।
सूरज को सुत बालि को बालक को नल नील कहो यहि ठाई ॥
को हनुमंत कितेक बली यमहूं पहँ जोर लई जो न जाई ।
दूषण दूषण भूषण भूषण लंक विभीषण के मत पाई ॥ ७९ ॥

इति श्रीमद्विविधभूषणभूषितायां कविप्रियायां सामान्यालंकारे वर्ण्यवर्णनं नाम षष्ठः प्रभावः ६ ॥

अथ भूमिभूषणवर्णन । दोहा ।

देश नगर बन बाग गिरि, आश्रम सरिता ताल ।
रवि शशि सागर भूमिके, भूषण ऋतु सबकाल ॥ १ ॥

अथ देशवर्णन । दोहा ।

रत्नखानि पशु पक्षि वसु, वसन सुगन्ध सुवेश ।
नदी नगर गढ़ वरणिये, भूषित भाषा देश ॥ २ ॥

यथा । कवित्त ।

आछेआछे असन बसन वसु बासबस दानसनमान यान बाहन बखानिये । लोग भोग योग भाग बाग राग रूपयुत भूषणनि भूषित सुभाषा मुख जानिये ॥ सातौ पुरी तीरथ सरित सब गंगादिक केशौदास पूरण पुराण गुण गानिये । गोपाचल ऐसो दुर्ग राजा मानसिंहजू को देशनिकीमणि महि मध्यदेश मानिये ॥ ३ ॥

अथ नगरवर्णन । दोहा ।

खाई कोट अटा ध्वजा, वापी कूप तड़ाग ।
बारनारि असती सती, वरणहुँ नगर सभाग ॥ ४ ॥

यथा । कवित्त ।

चौहूंभाग बाग बन मानहुँ सघन घन शोभाकीसी शाला हंसमालासी सरित बर । ऊंचीऊंची अटनि पताका अतिऊंचीऊंची कौशिककी कीन्ही गंग खेलत तरलतर ॥ आपने सुखनि आगे निंदत नरिंदनि को घरघर देखियत देवतासे नारि नर । केशौदास त्रास

जहां केवल अदृष्टिहीको वारिये नगर और ओड़छे नगर पर ॥ ५ ॥

अथ वनवर्णन । दोहा ।

सुरभी इभ वनजीव बहु, भूतप्रेतभय भीर ।
भिल्लभवन बल्लीविटप, दववन वरणहुँ धीर ॥ ६ ॥

यथा । कवित्त ।

केशौदास ओड़छेके आसपास तीस कोस तुंगारण्यनाम वन वैरीको अजीत है । बिन्ध्य कैसो बन्धु बर वारन बलित बाघ वानर बराह बहु भिल्लको अभीत है ॥ जमकी जमातिसो कि जाम्बवन्त कैसो दल माहिष सुखद स्वच्छ ऋच्छनि को मीत है । अचल अनलवंत सिंधुसो सरितयुत शंभु कैसो जटाजूट परमपुनीत है ॥ ७ ॥

अथ गिरिवर्णन । दोहा ।

शृंगतुंग दीरघ दरी, सिद्ध सुन्दरी धातु ।
सुर नरयुत गिरि वरणिये, ओषधि निरझर पातु ॥ ८ ॥

यथा । कवित्त ।

रामचन्द्र कीन्हें तेरे अरिकुल अकुलाइ मेरुके समान आन अचल धरीनिमें । सारो शुक हंस पिक कोकिला कपोत मृग केशौदास कहूं हय करभ करीनिमें ॥ डारे कहूं हार टूटे राते पीरे पट छूटे फूटे हैं सुगंधघट स्रवत तरीनिमें । देखियत शिखर शिखरप्रति देवता से सुंदर कुँवर अरु सुन्दरी दरीनिमें ॥ ९ ॥

अथ आश्रमवर्णन । दोहा ।

होमधूम युत वरणिये, ब्रह्मघोष मुनिवास ।

सिंहादिक मृग मोर अहि, इभ शुभ वैर विनास ॥ १० ॥

रामचन्द्रिकायाम् यथा । कवित्त ।

केशौदास मृगज बछेरू चूखैं बाघिनीन चाटत सुरभि बाघबालक बदन है । सिंहनकी सटा ऐंचे करभ करनिकरि सिंहनिको आसन गयंद को रदन है ॥ फनीके फननपर नाचत मुदित मोर क्रोध न विरोध जहां मदनमदन है । बानर फिरत डोरेडोरे अंध तपसीनि ऋषिको निवास कीधौं शिवको सदन है ॥ ११ ॥

अथ सरितावर्णन । दोहा ।

जलचर हय गय जलज तट, यज्ञकुंड मुनिवास ।
न्हान दान पावन नदी, वरणी केशौदास ॥ १२ ॥

यथा । सवैया ।

ओड़छे तीर तरंगिनी बेतवै ताहितरै रिपु केशव कोहै ।
अर्जुनबाहु प्रबाहु प्रबोधित रेवा जु राजनिकी मति मोहै ॥
जोरिजगै जमुनासी लगै जग लोचनलालित पाप बिपोहै ।
सूरसुता शुभ संगमतुंग तरंग तरंगित गंगसी सोहै ॥ १३ ॥

अथ बागवर्णन । दोहा ।

ललितलता तरुवर कुसुम, कोकिल कलरव मोर ।
बरणि बाग अनुरागसों, भवँर भवँत चहुँओर ॥ १४ ॥

यथा । कवित्त ।

सहित सुदरशन करुणा कलित कमलासन विलास मधुवन

मीत मानिये । सोहिये अपर्णरूप मंजरी सनीलकंठ केशौदास प्रक
अशोक उर आनिये ॥ रंभासो सदंभा बोलै मंजुघोषा उरवशी हं
फूले सुमनस सब सुखदानिये । देवकी देवानकी प्रवीण राइजू
बाग इन्द्रकी समान जहां इंन्द्रजीत जानिये ॥ १५ ॥

अथ तड़ागवर्णन । दोहा ।

ललित लहर खग पुहुप पशु, सुरभि समीर तमाल ।
करभकेलि पंथीप्रकट, जलचर वरणहुँ ताल ॥ १६ ॥

यथा । सवैया ।

आपु धरैं मल औरनि केशव निर्मलगात करैं चहुँओरैं ।
पंथिनके परिताप हरैं हठि जे तरुतूल तनोरुह तोरैं ॥
देखहु एक स्वभाव बड़ो बड़भाग तड़ागनिको बित थोरैं ।
ज्यावत जीवनिहारिनिको निज बंधनकै जगबंधन छोरैं ॥ १७ ॥

अथ समुद्रवर्णन । दोहा ।

तुंगतरंग गँभीरता, रतन जलज बहुजंत ।
गंगासंगम देवतिय, यान विमान अनंत ॥ १८ ॥
गिरि बड़वानल वृद्धि बहु, चन्द्रोदयते जानु ।
पन्नग देव अदेव गृह, ऐसो सिन्धु बखानु ॥ १९ ॥

यथा सवैया ।

शेष धरे धरणी धरणीधर केशव जीव रचे विधि जेते ।
चौदहलोक समेत तिन्हैं हरिके प्रतिरोमानिमें चित चेते ॥

सोवत तेऊ सुनै इनहीमें अनादि अनंत अगाधहैं येते ।
अद्भुत सागरकी गति देखहु सागरही महँ सागर केते ॥ २० ॥

पुनः ।

भूति विभूति पियूषहुकी विष ईशशरीर कि पाप बिपोहै ।
है किधौं केशव कश्यपको घरु देव अदेवनिके मन मोहै ॥
संतहियो कि बसै हरि संतत शोभअनंत कहै कवि कोहै ।
चंदननीर तरंग तरंगित नागर कोउ कि सागर सोहै ॥ २१ ॥

अथ सूर्योदयवर्णन । दोहा ।

सूर उदयते अरुणता, पय पावनता होइ ।
शंख वेदधुनि मुनि करैं, पंथ चलै सबकोइ ॥ २२ ॥
कोक कोकनद शोकहर, दुख कुवलय कुलटानि ।
तारा ओषधि दीप शशि, घुघू चोर तम हानि ॥ २३ ॥

यथा । कवित्त ।

कोकनदमोदकर मदनबदन किधौं दशमुख मुख कुबलय दुख-दाई है । रोधक असाधुजन शोधक तमोगुणकी उदित प्रबोधबुद्धि केशौदास गाई है ॥ पावनकरन पय हरिपदपंकज की जगमगै जनु जगमग दरशाई है । तारापति तेजहर तारका को तारक की प्रगट प्रभातकर ही की प्रभुताई है ॥ २४ ॥

अथ चन्द्रोदयवर्णन । दोहा ।

कोक कोकनद बिरहि तम, मानिनि कुलटनि दुःख ।

चन्द्रोदयते कुवलयनि, जलधि चकोरनि सुःख ॥ २५ ॥

यथा । कवित्त ।

केशौदास है उदास कमलाकरसो कर शोषक प्रदोष ताय तमोगुण तारिये । अमृत अशेषके विशेषभाव बरषत कोकनद मोद चंड खंडन विचारिये ॥ परमपुरुषपदविमुख परुखरुख सुमुख सुखद बिदुखन उर धारिये । हरिहैरी हियमें न हरिणहारिणनैनी चन्द्रमा न चन्द्रमुखी नारद निहारिये ॥ २६ ॥

अथ बसंतवर्णन । दोहा ।

बरणि बसंत सपुहुप अलि, बिरहि विदारण बीर ।
कोकिल कलरव कलितबन, कोमल सुरभि समीर ॥ २७ ॥

यथा । कवित्त ।

शीतल समीर शुभ गंगाके तरंगयुत अंबरविहीन वपु वासुकी लसंत है । सेवत मधुपगण गजमुख परिभृत बोलसुनि होत सुखी संत औ असंत है ॥ अमलअदलरूप मंजरी सुखद रजरंजित अशोक शोक देखत नसंत है । जाके राज दिशि दिशि फूले हैं सुमन सब शिवकी समाज कीधौं केशव बसंतहै ॥ २८ ॥

अथ ग्रीष्मवर्णन । दोहा ।

ताते तरल समीर सुख, सूखे सरिता ताल ।
जीव अबल जल थल विकल, ग्रीषम सफल रसाल ॥ २९ ॥

यथा । कवित्त ।

चंडकर कलित बलित बल सदागति कंद मूल फूल फल दलनि

को नासहै । कीच बीच मीन बचैं ब्याल बिल कोल कुल द्विरद दरीन दिनकंत को बिलासहै ॥ थिर चर जीवन हरन बनबन प्रति केशौदास मृगशिर श्रवनानिवासहै । धावत बलित धनु शोभत न पाणि शर समरसमूह कीधौं ग्रीषमप्रकास है ॥ ३० ॥

अथ वर्षावर्णन । दोहा ।

बरषा हंस पयान बक, दादुर चातक मोर ।
केतक कंज कदम्ब जल, सौदामिनि घनघोर ॥ ३१ ॥

यथा । कवित्त ।

भौहैं सुरचापचारु प्रमुदित पयोधर भूषण जराइ जोति तड़ित रलाई है । दूरिकरी सुख मुख सुखमा शशीकी नैन अमल कमलदल दलित निकाई है ॥ केशौदास प्रबलक रेणुका गवनहर मुकुत सुहंसक शबद सुखदाई है । अंबर बलित मति मोहै नीलकण्ठजू की कालिका की बरषा हरष हिय आई है ॥ ३२ ॥

अथ शरद्वर्णन । दोहा ।

अमल अकाश प्रकाश शशि, मुदित कमलकुल कास ।
पंथी पितर पयान नृप, शरद सुकेशवदास ॥ ३३ ॥

विज्ञानगीता । कवित्त ।

शोभाको सदन शशि बदन मदनकर बंदैं नर देव कुबलय बलदाई है । पावन पद उदार लसत है हंसमाल दीपति जलजहार दिशिदिशि धाई है ॥ तिलक चिलक चारु लोचन कमल

रुचि चतुर चतुरमुख जग जिय भाई है। अमल अंवर लीन नील पीत पयोधर केशौदास शारदा कि शरद सुहाई है ॥ ३४ ॥

अथ हेमंतवर्णन । दोहा ।

तेल तूल तामोर तिय, ताप तपन रतिवंत ।
दीह रजनि लघु घोस सुनि, शीत सहित हेमंत ॥ ३५ ॥

यथा। कवित्त ।

अमल कमलदल लोचन सजल गति जरत समीर शीत भीति देखि दुखकी । चंद्रकरण खायोजाइ चंदन नलायोजाइ चंदन चितायो जाइ प्रकृति बपुखकी ॥ घटकी घटति जाति घटना घटी हूं घटी छिन छिन छीन छबि रबि सुख मुखकी । सीकर तुषार स्वेद सोहति हेमंतऋतु कीधौं केशौदास प्रिया प्रीतम बिमुखकी ॥ ३६ ॥

अथ शिशिरवर्णन । दोहा ।

शिशिर सरस मन बरणिये, देखत राजा रंक ।
नाचत गावत हँसत दिन, खेलत रैनि निशंक॥ ३७ ॥

यथा। कवित्त ।

सरस असमसर सरसिजलोचन बिलोकि लोकलीकलाज लोपिबेको आगरी । ललितलता सुबाहु जानि जून ज्वान बाल बिटप उरनि लागै उमगिउजागरी ॥ पल्लव अधर मधु पीवतही मधुपनि रुचिर रचत रुत पिक सुख सागरी । यहिविधि सदागति बसन-

गलित बास शिशिरकी शोभा किधौं बारनारि नागरी ॥ ३८ ॥

इति श्रीमद्विविधभूषणभूपितायां कविप्रियायां सामान्यालंकारे भूमिभूपणवर्णनंनाम सप्तमः प्रभावः ॥ ७ ॥

अथ राज्यश्रीभूषणवर्णन । दोहा ।

राजा रानी राजसुत, प्रोहित दलपति दूत ।
मंत्री मंत्र पयानहय, गय संग्राम अभूत ॥ १ ॥
आखेटक जल केलि पुनि, विरह स्वयंबर जानि ।
भूषित सुरतादिकनि करि, राज्यश्रीहि बखानि ॥ २ ॥

अथ राजावर्णन ।

प्रजा प्रतिज्ञा पुण्य पन, धर्म प्रताप प्रसिद्धि ।
शासन नाशन शत्रु के, बल विवेक की वृद्धि ॥ ३ ॥
दंड अनुग्रह धीरता, सत्य शूरता दान ।
कोश देश युत बरणिये, उद्यम क्षमा निधान ॥ ४ ॥

यथा । कवित्त ।

अमल कमल दल लोचन सजलगति जरत समीर शीत भीति देखि दुखकी । चंद्रकण खायो जाइ चंदन लगायो जाइ चंदन चितायो जाइ प्रकृति बपुखकी ॥ घटकी घटतिजाति घटना घटीहूं घटी छिन छिन छीन छबि रबि सुख मुख मुखकी । सीकर तुषार स्वेदसोहति हेमंतऋतु कीधौं केशवदास प्रिया प्रीतम बिमुख की ॥ ५ ॥

यथा।

नगर नगर प्रति घनई तौ गाजैंघेरि ईतिकी न भीति भीति अधन अधीर की। अरिनगरीनप्रति करत अगम्यागौन भावै व्यभिचारी जहां चोरी परपीरकी ॥ शासन को नाशन करत एक गंधासन केशवदास दुर्गनहीं दुर्गति शरीरकी। दिशिदिशि जीतिपै अजीति द्विजदीननि सों ऐसी रीति राजनीति राजै रघुवीरकी ॥ ६ ॥

अथ राजपत्नीवर्णन। दोहा।

सुंदरि सुखद पतिव्रता, शुचि रुचि शील समान।
यहिविधि रानी बरणिये, सलज सुबुद्धि निधान ॥ ७ ॥
अति बरषै बरषै नहीं, टीड़ी मूसो मान।
शुक अपदल परदल सु ये, सात ईति पहिचान ॥ ८ ॥

यथा। कवित्त।

माता जिमि पोषत पिता ज्यों प्रतिपालकरै प्रभु जिमि शासन करति हेरि हियसों। भैया ज्यों सहायकरै देत ज्यों सखा है सुख गुरु ज्यों सिखावै सिख हेतजोरि जियसों ॥ दासी ज्यों टहल करै देवी ज्यों प्रसन्न ह्वै सुधारै परलोक लोक नातो नहिं बियसों। छाके हैं अयान मद छिति के छितीश छुद्र और सों सनेह करैं छोंड़ि ऐसी तियसों ॥ ९ ॥

पुनः।

काम के हैं आपनेही काम रतिकाम साथ रति न रतीको

जरी कैसे उर आनिये । अधिक असाधु इन्द्र इन्द्राणी अनेक इन्द्र भोगवती केशौदास बेदन बखानिये ॥ विधिहूं अविधि कीन्ही सावित्रीहूं शापदीन्ही ऐसे सब पुरुष युवति अनुमानिये । राजा रामचन्द्रजूसों राजत न अनुकूल सीतासी न पतिव्रता नारी उर आनिये ॥ १० ॥

अथ राजकुमारवर्णन । दोहा ।

विद्या विविध बिनोद युत, शील सहित आचार ।
सुन्दर शूर उदार विभु, बरणिय राजकुमार ॥ ११ ॥

यथा । कवित्त ।

दानिनके शील परदानके प्रहारी दिन दानवारि ज्यों निदान देखिये सुभायके । दीपदीपहूं के अवनीपनिके अवनीप पृथु-सम केशौदास दास द्विज गायके ॥ आनँद के कंद सुर पालक से बालक ये परदारप्रिय साधु मन वच कायके । देह धर्म धारी ये विदेह राजजू से राज राजत कुमार ऐसे दशरथरायके ॥ १२ ॥

अथ प्रोहितवर्णन । दोहा ।

प्रोहित नृपहित वेद विद, सत्यशील युत अंग ।
उपकारी ब्रह्मण्य ऋजु, जीत्यो जगत अनंग ॥ १३ ॥

यथा । कवित्त ।

कीन्हेपुरहूत मीत लोकलोक गाये गीत पायेजू अभूत पूत अरि उर त्रासु है । जीतेजू अजीतभूप देश देश बहुरूप और कौन केशौ-

दास बलको बिलासु है ॥ तोर्‍यो हरको धनुष नृपगण गो विमुख देख्योजू बधूको मुख सुखमाको वासु है । ह्वैगये प्रसन्न राम बाढ़ो धन धर्म धाम केवल बशिष्ठके प्रसादको प्रकासु है ॥ १४ ॥

अथ दलपतिवर्णन । दोहा ।

स्वामिभगत श्रमजित सुधी, सेनापती अभीत ।
अनालसी जनप्रिय जसी, सुख संग्राम अजीत ॥ १५ ॥

यथा । सवैया ।

छांड़िदियो सब आरस पारस केशव स्वारथ साथ समूरो ।
साहस सिद्ध प्रसिद्ध सदा जलहूं थलहूं बल बिक्रम पूरो ॥
सोहिये एक अनेकनि माहँ अनेकन एक बिना रणरूरो ।
राजति है तेहि राजको राज सु जाकी चमूमें चमूपति शूरो ॥१६॥

अथ दूतवर्णन । दोहा ।

तेज बढ़ै निज राज को, अरिउर उपजै छोभ ।
इंगित जानहि समयगुण, बरणहुँ दूत अलोभ ॥ १७ ॥

यथा । कवित्त ।

स्वारथ रहित हितसहित बिहितमति काम क्रोध मोह लोभ छोभ मद हीने हैं । मीतहूं अमीत पहिचानबेको देशकाल बुधिबल जानिबेको परम प्रबीने हैं ॥ आपनी उकुति अति उत्तरदै औरनि की दुरि दुरि दूनीमति लै लै बशकीने हैं । केशौदास देशदेश अरि दल रामदेव राजनि के देखिबे को दूतै दृगदीने हैं ॥ १८ ॥

अथ मंत्रीवर्णन । दोहा ।

राजनीतिरत राजरत, शुचि सरवज्ञ कुलीन ।
क्षमी शूर यश शील युत, मंत्री मंत्र प्रवीन ॥ १९ ॥

यथा । सवैया ।

केशव कैसहूँ बारिधि बांधि कहाभयो रीछनि जो छिति छाई ।
सूरज को सुत बालिको बालक को नलनील कहौ केहि ठाई ॥
को हनुमंत कितेकबली यमहूँ पर जोर लई नहिं जाई ।
भूषणभूषण दूषणदूषण लंक विभीषण के मत पाई ॥ २० ॥

पुनः ।

युद्धजुरे दुरयोधनसों कहि कौन करी यमलोक बसीत्यो ।
कर्ण कृपा द्विजद्रोणसों वैर कै काल बचै बर कीजै प्रतीत्यो ॥
भीम कहा बपुरा अरु अर्जुन नारि नँग्यावतही बल रीत्यो ।
केशवके बल केशवके मत भूतल भारथपारथ जीत्यो ॥ २१ ॥

अथ मंत्रीमतिवर्णन । दोहा ।

पांच अंग गुण संग षट, विद्या युत दश चारि ।
आगम संगम निगम मति, ऐसे मंत्र विचारि ॥ २२ ॥

यथा । सवैया ।

केशव मादक क्रोध विरोध तजी सब स्वारथ बुद्धि अनैसी ।
भेद अभेद अनुग्रह विग्रह निग्रह संधि कही विधि जैसी ॥ वैरिन
को विपदा प्रभुको प्रभुता कर मंत्रिन की मति ऐसी । राखति

राजनि देवनि जो दिन दिव्य विचार विमाननि वैसी ॥ २३ ॥

अथ पयानवर्णन । दोहा ।

चवँर पताका छत्र रथ, दुंदुभि ध्वनि बहु यान ।
जल थल मय भूकंप रज, रंजित वरणि पयान ॥ २४ ॥

यथा । कवित्त ।

राघवकी चतुरंग चमू चपि को गनै केशव राजसमाजनि । शूर तुरंगनिके उरझे पग तुंग पताकनिके पट साजनि ॥ टूटिपरैं तिनते मुकुता धरणी उपमा वरणी कविराजनि । बिंदु मनो मुखफेननिके मनो राजशिरी स्रवै मंगल लाजनि ॥ २५ ॥

रामचंद्रिकायाम् । यथा ।

नादपूरि धूरिपूरि तूरिवन चूरिगिरि सोखिसोखि जलभूरि भूरिथल गाथकी । केशौदास आसपास ठौरठौर राखिजन तिनहूं की संपति सब आपनेही हाथ की ॥ उन्नत नवाइ नत उन्नत बनाइ भूप शत्रुनकी जीविका सो मित्रनिके हाथ की । मुदित समुद्रसात मुद्रानिज मुद्रितकै आई दिशिदिशि जीति सेना रघुनाथ की ॥ २६ ॥

अथ हयवर्णन । दोहा ।

तरल तताई तेजगति, मुख सुख लघुदिन लेख ।
देश सुवेश सुलक्षणौ, वर्णहु वाजि विशेख ॥ २७ ॥

यथा। कवित्त।

वामनही दुपदज्ञु नाँघो नभ ताहि कहानांघै पदचारि थिरहोत इहिहेत हैं। छेकीछिति छीरनिधि छांड़ि धाप छत्रतर कुण्डली करत लोल चित मोललेत हैं॥ मन कैसे मीत वीर वाहन समीरकैसे नैनानि ज्यों नैनी नैननेहकेनिकेतहैं। गुणगणबलित ललितगति केशौदास ऐसे बाजि रामचन्द्र दीननको देत हैं॥ २८॥

गजवर्णन। दोहा।

मत्त महावत हाथ में, मन्दचलनि चल कर्ण।
मुक्तामय इभकुंभ शुभ, सुन्दर सूर सुवर्ण॥ २९॥

यथा। कवित्त।

जलके पगार निजदलके शृंगार परदलके विगार करपर पूरपारैं रौरि। ढाहैं गढ़ जैसे घनभट ज्यों भिरत रण देत देखि आशिषा गणेशजूकेभोरें गौरि॥ विन्ध्य कैसे वन्धु वो कलिन्दनन्दसे अमन्द बन्दनकी शुंड भरे चन्दन की चारुखौरि। सूरके उदोत उदैगिरिसे उदित अति ऐसे गजराज राजैं राजा रामचन्द्र पौरि॥ ३०॥

अथ संग्रामवर्णन। दोहा।

सेना स्वन सनाहरज, साहस शस्त्रप्रहार।
अंग भंग संघट्ट भट, अंधकबन्ध अपार॥ ३१॥
केशव बरणहु युद्धमें, योगिनगणयुत रुद्र।
भूमि भयानक रुधिरमय, सरवर सरितसमुद्र॥ ३२॥

कवित्त।

शोणित सलिल नर वानर सलिलचर गिरि हनुमन्त विष विभीषण डार्‌यो है। चँवर पताका बड़ी बाड़वाअनलसम रोगरिपु जामवन्त केशव विचार्‌यो है॥ वाजि सुरवाजि सुरगजसे अनेक-गज भरतसबन्धु इन्दु अमृत निहार्‌यो है। सोहत सहितशेष राम-चन्द्र कुश लव जीतिकै समरसिन्धु सांचेहू सुधार्‌यो है॥ ३३॥

आखेटवर्णन। दोहा।

जुर्रा बहरी बाज बहु, चीते श्वान शचान।
सहर बहिलिया भिल्लयुत, नील निचोल विधान॥ ३४॥
बानर बाघ बराह मृग, मीनादिक वनजन्त।
बध बन्धन बेधन बरणि, मृगया खेल अनन्त॥ ३५॥

कवित्त।

तीतर कपोत पिक केकी कोक पारावत कुररी कुलंग कलहंस गहिलाये हैं। केशव शरभ सिंह स्याहगोश रोषगत कूकरनि पास शशा सूकर गहाये हैं॥ मकर निकर बेधि बांधि गजराज मृग सुन्दरी दरीन भील भामिनीन भाये हैं। रीझि रीझि गुंजन के हार पहिराये देखो काम ऐसे रामके कुमार दोऊ आये हैं॥ ३६॥

यथा।

खलनि के खैल भैल मनमथमन ऐल शैलजाके शैल गैल गैल प्रति रोक है। सेनानी के सटपट चन्द्र चित चटपट अति

अति अटपट अन्तक के ओक है ॥ इन्द्र जूके अकबक धाताजू के धकपक शंभुजूके सकपक केशवदासको कहै। जब जब मृगया को रामके कुमार चढ़ैं तब तब कोलाहल होत लोक लोक है ॥ ३७ ॥

जलकेलिवर्णन। दोहा।

सरसरोज शुभशोभ भनि, हिय सों पिय मन मेलि।
गहिवो गत भूषणनिको, जलचर ज्यों जल केलि ॥ ३८ ॥

कवित्त।

एक दमयंती ऐसी हरै हँसि हंसवंस एक हंसिनी सी विषहार हियेरो हिये। भूषण गिरत एक लेति बूड़ि बीच बीच मीनगतिलीन दीन उपमा न टोहिये ॥ एक हरिकंठ लागि लागि बूड़ि बूड़ि जात जलदेवतासी दृगदेवता विमोहिये। केशौदास आसपास भ्रमत भ्रमरजल केलिमें जलजमुखी जलजसी सोहिये ॥ ३९ ॥

विरहवर्णन। दोहा।

श्वास निशा चिन्ता बढ़ै, रुदन परेखे बात।
कारे पीरे होत कृश, ताते सीरे गात ॥ ४० ॥

यथा।

भूख प्यास सुधि बुधि घटै, सुख निद्रा द्युति अंग।
दुखद होत हैं सुखद सब, केशव विरह प्रसंग ॥ ४१ ॥

रसिकप्रियायाम्। कवित्त।

वार वार बरजी मैं सारस सरसमुखी आरसी लै देखि मुख

या रसमें बोरि है। शोभाके निहोरे तौ निहारति न नेकहू तू हारी है निहोरि सब कहा कहूं खोरि है ॥ सुखको निहोरो जो न मान्यो सो भलीकरी न केशौरायकी सौं तोहिं जो तू मन मोरि है । नाह के निहोरै किन मानै हौं निहोरति हौं नेहके निहोरे फेरि मोहिं जो निहोरि है ॥ ४२ ॥

पुनः । कवित्त ।

हरित हरित हार हेरत हियो हिरात हारीहों हरित नैन हरि न कहूं लहों । बनमाली ब्रजपर बरसत बनमाली बनमाली दूरदुःख केशव सु क्यों सहों ॥ हृदयकमल नैन देखिके कमलनैन होउँगी कमलनैनी और हौं कहा कहों । आप घन घनश्याम घनहीसे होत घनश्यामनिके घोष घनश्याम बिन क्यों रहों ॥ ४३ ॥

पुनः । सवैया ।

भूलिगयो सबसों रसरोष मिटैं भवके भ्रम रैनि विभातो ।
को अपने परको पहिचानत जानत नाहिंनै शीतल तातो ॥
नीकहीमें वृषभानललीको भईसु न जीकी कहीपरै बातो ।
एकहिबेर न जानिये केशव काहेते छूटगये सुखसातो ॥ ४४ ॥

नेहके हैं सखि आँशू उसासनि साथ निशा सुविसासिनि बाढ़ी ।
हासगयो उड़ि हंसिनि ज्यों चपलासम नींदगई गति काढ़ी ॥
चातक ज्यों पिवपीव रटै चढ़ि तापतरंगिनि ज्यों गति गाढ़ी ।
केशव वाकी दशा सुनिहौ अब आगि बिना अँगअंगनि डाढ़ी ॥४५॥

अथ विशिष्टालंकारवर्णन । दोहा ।

जातिस्वभाव विभावना, हेतु विरोध विशेष ।
उत्प्रेक्षा ६ आक्षेप १० क्रम, गनती आशिष लेष ॥ १ ॥
प्रिय सुश्लेष सभेद है, नियम विरोधी मान ।
सूक्षम लेस निदर्शना, ऊर्जः सुर सब जान ॥ २ ॥
रस अर्थांतर न्यास है, भेद सहित व्यतिरेक ।
फेरि अपह्नुति उक्ति है, वक्रोकति सविवेक ॥ ३ ॥
अन्योक्ति व्यधिकरतहै, सु विशेषोकति भाषि ।
फिरि सहोक्तिको कहतहैं, क्रमही सों अभिलाषि ॥ ४ ॥
व्याजस्तुति निंदा कहैं, व्याजनिंद स्तुतिवंत ।
अमितसुपरजायोक्ति पुनि, युक्ति १२ सुनैं सबसंत ॥ ५ ॥
सुसमाहित जुसुसिद्धहै, और कहे विपरीत ।
रूपक दीपक भेदपुनि, कहि प्रहेलिका मीत ॥ ६ ॥
अलंकारपरवृत्तकहि १ ३, उपमा १ ४ जमक १ ५ सुचित्र १ ६ ।
भाषा इतनै भूषणनि, भूषित कीजै मित्र ॥ ७ ॥

अथ जातिस्वभाव लक्षणवर्णन ।

जाको जैसो रूप गुण, कहिये तेही साज ।
तासों जातिस्वभाव कहि, वरणतहैं कविराज ॥ ८ ॥

कवित्त ।

पीरी पीरी पाटकी पिछौरी कटि केशौदास पीरी पीरी पागैं पग

पीरीये पनहियां। बड़े बड़े मोतिनकी माल बड़े बड़े नैन नान्ही नान्ही भृकुटी कुटिल बघनहियां ॥ बोलनि हँसनि मृदु चलनि चितौनि चारु देखतही बनै पै न कहत बनहियां । सरयूके तीर तीर खेलैं चारो रघुवीर हाथ द्वै द्वै तीर राती रातीये धनुहियां ॥९॥

अथ स्वभाववर्णन । कवित्त ।

गोरे गात पातरी न लोचन समात मुख उर उरजातन की बात अवरोहिये । हँसति कहति बात फूलसे झरत जात ओठ अवदात राती रेख मन मोहिये ॥ श्यामल कपूर धूरि की ओढ़नी ओढ़े उड़ि धूरि ऐसी लागी केशौ उपमा न टोहिये । कामही की दुलही सी काके कुल उलही सुलहलही ललित लतासी लाल सोहिये ॥१०॥

अथ विभावना । दोहा ।

कारणके बिनु कार्य को, उदय होत जिहि ठौर ।
तासों कहत विभावना, केशव कवि शिरमौर ॥११॥

कवित्त ।

पूरण कपूर पानखाये कैसी मुखवास अधर अरुण रुचि सुधासों सुधारेहैं । चित्रित कपोल लोल लोचन मुकुर मैन अमल झलक झलकनि मोहि मारेहैं ॥ भृकुटी कुटिल जैसी तैसी न कियेहू होहिं आंजी ऐसी आंखैं केशौराय हेरि हारेहैं । काहेको शृँगारिकै बिगारति है मेरी आली तेरे अंग सहज शृँगारही शृँगारे हैं ॥१२॥

पुनः विभावना । दोहा ।

कारण कौनहु आनते, कारज होइ सुसिद्ध ।
जानो यहै विभावना, कारज छांड़ि प्रसिद्ध ॥ १३ ॥

सवैया ।

नेकहू काहू नवाई नवानी नवाये विनाहीं सुवक्र भईहै ।
लोचनश्री बिषुकाये विना विषुकीसी विना रँगरागमईहै ॥
केशव कौनकी दीनी कहो यह चंदमुखी गतिमंद लईहै ।
छोली न छोहि गई कटि छीन सुयौवनकी यह युक्ति नईहै ॥१४॥

अथ हेतुलक्षण । दोहा ।

हेतु होत है भांति दो, वरणत सब कविराव ।
केशवदास प्रकाश करि, वरणि अभाव सुभाव ॥ १५ ॥

अथ सुभावहेतु । सवैया ।

केशव चंदनछंद घने अरविंदनके मकरंद शरीरो ।
मालती बेलि गुलाब सुकेतकी केतिक चंपकको वन पीरो ॥
रंभनि के परिरंभन संभ्रम गर्भ घनो घनसार को जीरो ।
शीतल मन्द सुगन्ध समीर हरो इन सों मिलि धीरज धीरो॥१६॥

अभावहेतु ।

जान्यो न मैं मद यौवनको उतर्यो कब कामको काम गयोई ।
छोड़्यो न चाहत जीव कलेवर जोरि कलेवर छांड़ि दयोई ॥
आवति जाति जरा दिन लीलति रूप जरा सब लीलि लयोई ।

केशव राम ररौ न ररौ अनसाधेही साधन साधु भयोई ॥ १७ ॥

अथ सभाव अभावहेतुवर्णन ।

जादिनते वृषभानलली ही अली मिलये मुरलीधर तेहीं ।
साधन साधि अगाधि सबै बुधि शोधि जे दूत अभूतन मेंहीं ॥
ता दिनतें दिनमान दुहूँन की केशव आवति बात कहेहीं ।
पीछे अकाश प्रकाशै शशी चढ़ि प्रेमसमुद्र बढ़ै पहिलेहीं ॥ १८ ॥

अथ विरोधाभासलक्षण । दोहा ।

वरणत लगै विरोध सो, अर्थ सबै अविरोध ।
प्रकट विरोधाभास यह, समुझत सबै सुबोध ॥ १९ ॥

कवित्त ।

परमपुरुष कुपुरुषसँग शोभियत दिन दानशील पै कुदानही सों रति हैं । सूरजकुल कलश राहुको रहत सुख साधु कहैं साधु परदार प्रिय अतिहैं ॥ अकर कहावत धनुष धरे देखियत परम कृपाल पै कृपाणकर पति हैं । विद्यमान लोचन द्वै हीन वामलोचननि केशवदास राजाराम अद्भुत गति हैं ॥ २० ॥

पुनः विरोधलक्षण । दोहा ।

केशव जहाँ विरोधमें, रचियत वचन विचारि ।
तासों कहत विरोध सब, कविकुल बुद्धि सुधारि ॥ २१ ॥

सवैया ।

आपु सितासित रूप चितै चित श्यामशरीर रँगे रँग रातैं ।

केशव काननही न सुनैं सुकहैं रसकी रसना बिन बातैं ॥
नैन किधौं कोऊ अंतरयामी री जानति हौं जिय बूझत तातैं ।
दूरलौं दौरतिहैं बिन पांयन दूरि दुरी दरश मति जातैं ॥ २२ ॥

पुनः । कवित्त ।

शोभत सुवास हास सुधासों सुधार्‍यो विधि विषको निवास जैसो तैसो मोहकारी है । केशौदास पावन परम हंसगति तेरी परहियहरन प्रकृति कौन पारी है ॥ बारक बिलोकि वर बीर से बलिनि कहुँ करति बरहिबश ऐसी बैसवारी है । एरी मेरी सखी तेरी कैसेकै प्रतीति कीजै कृशनानुसारी दृग करुणानुसारी है ॥२३॥

अथ विशेषलक्षण । दोहा ।

साधन कारण विकल जहँ, होय साध्य की सिद्धि ।
केशवदास बखानिये, सो विशेष परसिद्धि ॥ २४ ॥

सवैया ।

साँपको कंकण माल कपाल जटानि की जूट रहीं जटि आंतैं ।
खाल पुरानी पुरानोई बैल सुऔरकी और कहैं विष मातैं ॥
पारवती पति संपति देखि कहैं यह केशव संभ्रम तातैं ।
आपुन मांगत भीख भिखारिन देत दई मुहँमांगी कहांतैं ॥२५॥

पुनः । कवित्त ।

तमोगुण ओपतन ओपित विरूप नैन लोकनि विलोप करैं

अथ उत्प्रेक्षा । दोहा ।

केशव औरहि वस्तु में, औरै कीजै तर्क ।
उत्प्रेक्षा तासों कहैं, जिन की बुधि संपर्क ॥ ३० ॥

यथा । कवित्त ।

हरको धनुष तोरो लंका तोरी रावण की वंश तोस्यो तोरें जैसे वृद्धवंश वातहैं । शत्रुनिके सेलि सूल फूल तूल सहे राम सुनि केशौरायकी सों हीयो हहरातहैं ॥ कामशरहू ते तीक्ष्ण तारे तरुणीनहूके लागि लागि उचटि परत ऐसे गातहैं । मेरे जान जानकी तूं जानति है जान कछू देखतही तेरे नैन मैनसे ह्वैजातहैं ॥ ३१ ॥

रामचंद्रिकायाम् । कवित्त ।

अंकन सशंकन पयोधिहूकी पंकन सुअंजन न रंजित रजनि निज नारीको । नाहिनैं झलक झलकति तममानकी न छिति छांह छाई छलनाहीं सुखकारीको ॥ केशव कृपानिधान देखिये विराजमान मानिये प्रमान राम बैन बनचारीको । लागतिहै जाय कंठ नागदिगपालनि के मेरेजान सोई कृत कीरति तिहारीको ॥ ३२ ॥

इति श्रीमद्विविधभूषणभूषितायां कविप्रियायां विशिष्टालंकारवर्णनंनाम नवमः प्रभावः ॥ ९ ॥

अथ आक्षेपालंकार । दोहा ।

कारज के आरंभ ही, जहँ कीजत प्रतिषेध ।
आक्षेपक तासों कहत, बहुविधि वरणि सुमेध ॥ १ ॥

तीनहुँ काल बखानिये, भयो जु भावी होत ।
कविकुलको कौतुक कहत, यह प्रतिषेद उदोत ॥ २ ॥
बरज्योंहो हर त्रिपुरहर, बारक करि भ्रू भंग ।
सुनों मदनमोहनि मदन, ह्वैही गयो अनंग ॥ ३ ॥
तातें गौरि न कीजिये, कौनहुँ विधि भ्रूभंग ।
को जानै ह्वैजाय कह, प्राणनाथ के अंग ॥ ४ ॥
कोविद कर्पट नकार शर, लगत न तजहिं उछाह ।
प्रतिपल नूतन नेहको, पहिरे नाह सनाह ॥ ५ ॥

आक्षेपनाम ।

प्रेम अधीरज धीरजनि, संशय मरण प्रकास ।
आशिष धर्म उपाय कहि, शिक्षा केशवदास ॥ ६ ॥

प्रेमाक्षेपलक्षण ।

प्रेम बखानतही जहां, उपजत कारजबाधु ।
कहत प्रेम आक्षेप यह, तासों केशव साधु ॥ ७ ॥

यथा । कवित्त ।

ज्यों ज्यों बहु बरजे में प्राणनाथ मेरे प्राण अंग ना लगाइयेजू आगे दुःख पाइबो । त्यों त्यों हँसि हँसि अति शिरपर उरपर कीबो कियो आंखिनके ऊपर बिलाइबो ॥ एको पल इत उत साथतें न जान दीनें लीनें रहैं साथही कहांलौं गुन गाइबो । तुमतो कहत

तिन्हैं छांड़िके चलन अब छांड़त ये कैसे तुम्हैं आगे उठि धाइबो ॥ ८ ॥

अथ अधैर्याक्षेप । दोहा ।

प्रेम भंग वच सुनत जहँ, उपजत सात्त्विकभाव ।
कहत अधीरजको सुकवि, यह आक्षेप स्वभाव ॥ ९ ॥

सवैया ।

केशव प्रात बड़ेही बिदाकहँ आये प्रियापहँ नेह नहेरी ।
आवों महावनहै ज्यौं कहो हँसि बोल द्वै ऐसे बनाय कहेरी ॥
को प्रतिउत्तर देइ सखी सुनि लोलविलोचन यों उमहेरी ।
सौंहक कै हरि हार रहे दिन बीसक लौं अँसुवा न रहेरी ॥ १० ॥

अथ धैर्याक्षेप । दोहा ।

कारज करि कहिये वचन, काज निवारन अर्थ ।
धीरज को आक्षेप यह, बरणत बुद्धि समर्थ ॥ ११ ॥

कवित्त ।

चलतचलत दिन बहुत व्यतीत भये सकुचि तकत चित चलत चलायेहीं । जात हो तो कहो कहा नाहिंनै मिलत आन जानि यह छोड़ो मोह बढ़त बढ़ायेहीं ॥ मेरीसों तुमहिं हरि रहिबो सुखहि सुख मोहिं है तिहारी सौंह रैहों सुख पायेहीं । चलेही बनत जो तो चलिये चतुर पिय सोवतहीं जैये छांड़ि जागोंगीहों आयेहीं ॥ १२ ॥

अथ संशयाक्षेप । दोहा ।

उपजाये संदेह कछु, उपजत काज विरोध ।
यह संशय आक्षेप कहि, वरणत जिन्हैं प्रबोध ॥ १३ ॥

कवित्त ।

गुणनि वलित कलसुरनि कलित गाय ललिता ललितगीत श्रवण रचाय हैं । चित्रित हों चित्रनिमें परमविचित्र तुम्हें चित्रनी ज्यों देखि देखि नैननि नवाय हैं ॥ कामके विरोधी तम सोधि सोधि साधि सखि वोधि बोधि औधिनके वासर गँवाय हैं । केशौरायकी सों मोहिं यहही कठिन वाकी रिसमें रसिकलाल पान क्यों खवाय हैं ॥ १४ ॥

अथ मरणाक्षेप । दोहा ।

मरण निवारण करत जहँ, काज निवारण होत ।
जानहु मरणाक्षेप कवि, ज्यों जिय बुद्धि उदोत ॥ १५ ॥

कवित्त ।

नीके कै केवांर दैहौं द्वार द्वार केशौदास मेरे घर आसपास सूरज न आवैगो । क्षणमें छवायलैहौं ऊपर अटानि आजु आंगन पटायलैहौं जैसे मोहिं भावैगो ॥ न्यारे न्यारे नापदान मूंदिहौं झरोखाजाल पायहै न पैंड़ो पौन आवन न पावैगो । माधव तिहारे पीछे मोपहि मरण मूढ़ आवन कहत सुतो कौन पैंड़े आवैगो ॥ १६ ॥

अथ आशिषाक्षेप । दोहा ।

आशिष पियके पंथ को, देवै दुःख दुराय ।
आशिषको आक्षेप यह, कहत सकल कविराय ॥ १७ ॥

कवित्त ।

मंत्री मित्र पुत्र जन केशव कलत्रगण सादर सजन जन भट सुख साजसों । एतो सब होतजात जोपै है कुशल गात अबहीं चलो कै भात सगुणसमाजसों ॥ कीनों जो पयान बाध क्षमिये सो अपराध रहिये न पलआध बंधिये न लाजसों । हौं न कहौं कहत निगम सब अब तब राजनि परमहित आपनेहीं काजसों ॥ १८ ॥

अथ धर्माक्षेप । दोहा ।

राखत अपने धर्मको, जहँ कारज रहिजाय ।
धर्माक्षेप सदाइ है, बरणत सब सुख पाय ॥ १९ ॥

कवित्त ।

जो हौं कहूं रहिये तो प्रभुता प्रकट होत चलन कहौं तो हित हानि नाहीं सहनों । भावै सो करहु तो उदास भाव प्राणनाथ साथ लै चलहु कैसे लोकलाज बहनों ॥ केशौरायकी सौं तुम सुनहु छबीलेलाल चलेहीं बनत जोपै नाहीं राज रहनों । तैसिये सिखावो सीख तुमहीं सुजान पिय तुमहीं चलत मोहिं जैसो कछू कहनों ॥ २० ॥

अथ उपायाक्षेप । दोहा ।

कौनहु एक उपाय करि, रोकै पिय प्रस्थान ।
तासों कहत उपाय कवि, यह आक्षेप सुजान ॥ २१ ॥

सवैया ।

मोकों सबै ब्रजकी युवती हरि गौरि समान सुहागिनि जानैं ।
ऐसी को गोपी गोपाल तुम्हैं बिन गोकुल में बसिबो उर आनैं ॥
मूरति मेरी अदीठ कै ईठ चलौ कि रहौ जु कछू मन मानैं ।
प्रेमनिक्षेमनि आदिदै केशव कोऊ न मोहिं कहूं पहिचानैं ॥ २२ ॥

अथ शिक्षाक्षेप । दोहा ।

सुखही सुख जहँ राखिये, सिखही सिख सुखदानि ।
शिक्षाक्षेप कह्यो बरणि, छप्पै बारह बानि ॥ २३ ॥

चैत्रवर्णन । छप्पै ।

फूली लतिका ललित तरुनतन फूले तरवर ।
फूलीं सरिता सुभग सरस फूले सब सरवर ॥
फूली कामिनि कामरूपकरि कंतनि पूजहिं ।
शुक सारो कुलकेलि फूल कोकिल कल कूजहिं ॥
कहि केशव ऐसी फूल महि शूलन फूल लगाइये ।
पिय आप चलन की को कहै चित्त न चैत चलाइये ॥२४॥

वैशाखवर्णन ।

केशवदास अकास अवनि बासित सुवास करि ।

बहत पवन गति मंद गात मकरंद बिंदु धरि ॥
दिशि विदिशिनि छवि लाग भाग पूरित परागवर ।
होत गन्धही अन्ध बधिर बौरा विदेशि नर ॥
सुनि सुखद सुखद सिख सीखि पति रति सिखई सुख साखमें ।
वर विरहिन वधत विशेषकरि कामविशिख वैशाखमें ॥२५॥

जेठवर्णन ।

एक भूतमय होत भूतभजि पंचभूत भ्रम ।
अनिल अंबु आकाश अवनि ह्वैजात आगिसम ॥
पंथ थकित मद मुकित सुखित सर सिंधुर जोवत ।
काकोदर करि कोश उदर तर केहरि सोवत ॥
पियप्रबल जीव इहिविधि अबल सकल विकल जल थल रहत ।
तजि केशवदास उदास मग जेठमास जेठे कहत ॥ २६ ॥

आषाढ़वर्णन ।

पवनचक्र परचंड चलत चहुँओर चपलगति ।
भवन भामिनी तजत भ्रमत मानहुँ तिनकी मति ॥
संन्यासी इहि मास होत इक आसनवासी ।
पुरुषनकी को कहै भये पक्षियो निवासी ॥
इहि समय सेज सोवन लियो श्रीहि साथ श्रीनाथहू ।
कहि केशवदास अषाढ़चल मैं न सुन्यो श्रुति गाथहू ॥ २७ ॥

सावनवर्णन ।

केशव सरिता सकल मिलत सागर मनमोहैं ।
ललित लता लपटाति तरुनतन तरुवर सोहैं ॥
रुचि चपला मिलि मेघ चपल चमकत चहुँ ओरन ।
मनभावनकहँ भेंटि भूमि कूजत मिस मोरन ॥
इहिरीति रमन रमनीन सों रमन लगे मनभावने ।
पियगमन करनकी को कहै गमन न सुनियत सावने ॥२८॥

भादौंवर्णन ।

घोरत घन चहुँओर घोष निरघोषनि मण्डहिं ।
धाराधर धर धरनि मुसलधारन जल छण्डहिं ॥
झिल्लीगन झनकार पवन झुकि झुकि झकझोरत ।
बाघ सिंह गुंजरत पुंज कुंजर तरु तोरत ॥
निशिदिन विशेष निहिशेष मिटिजात सुओली ओढ़िये ।
देश पियूष विदेश विष भादौं भवन न छोड़िये ॥२९॥

कुवांरवर्णन ।

प्रथम पिंडहित प्रकट पितर पावन घर आवैं ।
नव दुर्गनि नर पूजि स्वर्ग अपवर्गहि पावैं ॥
छत्रनिदै छितिपाल लेत भुव लै सँग पंडित ।
केशवदास अकास अमल जल थल जनमंडित ॥
रमनीय रजनि रजनीशरुचि रमारमनहूँ रासरति ।

कलकेलि कलपतरु कारमहि कंत न करहु विदेशमति ॥२०॥

कार्त्तिकवर्णन । छप्पै ।

वन उपवन जल थल अकाश दीसंत दीपगन ।
सुखही सुख दिन राति जुवा खेलत दंपतिजन ॥
देवचरित्र विचित्र चित्र चित्रित आंगन घर ।
जगत जगत जगदीश ज्योति जगमगत नारि नर ॥
दिनदानन्हान गुनगान हरि जनम सफलकरिलीजिये ।
कहि केशवदास विदेशमति कन्त न कातिक कीजिये ॥ २१ ॥

मार्गशीर्षवर्णन । छप्पै ।

मासनमें हरिअंस कहत यासों सब कोऊ ।
स्वारथ परमारथन देत भारतनय दोऊ ॥
केशव सरिता सरनि फूल फूले सुगन्ध गुर ।
कूजत कुल कलहंस कलित कलहंसनि के सुर ॥
दिन परम नरम शीत न गरम करम करम यह पाइयतु ।
करिप्राणनाथपरदेशको मारगशिर मारग न चितु ॥२२॥

पूसवर्णनं । छप्पै ।

शीतल जल थल बसन असन शीतल अनरोचक ।
केशवदास अकास अवनि शीतल असुमोचक ॥
तेल तूल तामोल तपन तापन नव नारी ।
राज रंक सब छोंड़ि करत इनहीं अधिकारी ॥

सावनवर्णन।

केशव सरिता सकल मिलत सागर मनमोहैं।
ललित लता लपटाति तरुनतन तरुवर सोहैं॥
रुचि चपला मिलि मेघ चपल चमकत चहुँ ओरन।
मनभावनकहँ भेंटि भूमि कूजत मिस मोरन॥
इहिरीति रमन रमनीन सों रमन लगे मनभावने।
पियगमन करनकी को कहै गमन न सुनियत सावने॥२८॥

भादौंवर्णन।

घोरत घन चहुँओर घोष निरघोषनि मण्डहिं।
धाराधर धर धरनि मुशलधारन जल छण्डहिं॥
झिल्लीगन झनकार पवन झुकि झुकि झकझोरत।
बाघ सिंह गुंजरत पुंज कुंजर तरु तोरत॥
निशिदिन विशेष निहिशेष मिटिजात सुओली ओढ़िये।
देश पियूष विदेश विष भादौं भवन न छोड़िये॥२९॥

कुवांरवर्णन।

प्रथम पिंडहित प्रकट पितर पावन घर आवैं।
नव दुर्गानि नर पूजि स्वर्ग अपवर्गहि पावैं॥
छत्रनिदै छितिपाल लेत भुव लै सँग पंडित।
केशवदास अकास अमल जल थल जनमंडित॥
रमनीय रजनि रजनीशरुचि रमारमनहूँ रासरति।

कलकेलि कलपतरु कारमहि कंत न करहु विदेशमति ॥३०॥

कार्त्तिकवर्णन । छप्पै ।

वन उपवन जल थल अकाश दीसंत दीपगन ।
सुखही सुख दिन राति जुवा खेलत दंपतिजन ॥
देवचरित्र विचित्र चित्र चित्रित आंगन घर ।
जगत जगत जगदीश ज्योति जगमगत नारि नर ॥
दिनदानन्हान गुनगान हरि जनम सुफलकरिलीजिये ।
कहि केशवदास विदेशमति कन्त न कातिक कीजिये ॥ ३१ ॥

मार्गशीर्षवर्णन । छप्पै ।

मासनमें हरिअंस कहत यासों सब कोऊ ।
स्वारथ परमारथन देत भारतनय दोऊ ॥
केशव सरिता सरनि फूल फूले सुगन्ध गुर ।
कूजत कुल कलहंस कलित कलहंसनि के सुर ॥
दिन परम नरम शीत न गरम करम करम यह पाइयतु ।
करिप्राणनाथपरदेशको मारगशिर मारग न चितु ॥३२॥

पूसवर्णनं । छप्पै ।

शीतल जल थल बसन असन शीतल अनरोचक ।
केशवदास अकास अवनि शीतल असुमोचक ॥
तेल तूल तामोल तपन तापन नव नारी ।
राज रंक सब छोंड़ि करत इनहीं अधिकारी ॥

लघुद्योस दीह रजनी रवन होत दुसह दुख रूसमें ।
यह मन क्रम वचन विचारि पिय पन्थ न बूझिय पूसमें ॥ ३३ ॥

माघवर्णन । छप्पै ।

वन उपवन केकी कपोत कोकिल कल बोलत ।
केशव भूले भ्रमर भरे बहुभांतिन डोलत ॥
मृगमद मलय कपूर धूर धूसरित दशौंदिशि ।
ताल मृदंग उमंग सुनत संगीत गीत निशि ॥
खेलत वसन्त संतत सुघर संत असंत अनंत गति ।
घर नाह न छोड़िय माहमें जो मनमाहँ सनेह मति ॥ ३४ ॥

फागुनवर्णन । छप्पै ।

लोक लाज तज राज रंक निरशंक विराजत ।
जोइ भावत सोइ कहत करत पुनि हँसत न लाजत ॥
घरघर युवती जुवनि जोर गहि गांठनि जोरहिं ।
वसन छीनि मुख मीड़ि आंजि लोचन तृण तोरहिं ॥
पटवास सुवास अकास उड़ि भूमंडल सम मंडिये ।
कहि केशवदास विलासनिधि फागुन फाग न छंडिये ॥ ३५

इतिश्रीकविप्रियायांविशिष्टालंकारवर्णनंनाम दशमःप्रभावः ॥ १० ॥

अथ क्रमालंकारगणना अलंकारवर्णन । दोहा ।

आदि अन्त भरि वर्णिये, सो क्रम केशवदास ।
अरु गणना सों कहतहैं, जिन की बुद्धि प्रकास ॥ १ ।

छप्पै।

धिकमंगन बिन गुणहिं गुण सुधिक सुनत न रीझिय।
रीझ सुधिक बिन मौज मौज धिक देत सुखीझिय॥
दीबो धिक बिन सांच सांच धिक धर्म न भावै।
धर्म सुधिक बिन दया दया धिक अरिकहँ आवै॥
अरि धिक चित्त न शालई चित धिकजहँ न उदारमति।
मतिधिककेशव ज्ञान बिनु ज्ञानसुधिक बिनु हरिभगति॥२॥

सवैया।

सोमति सो न सभा जहँ वृद्ध न वृद्ध न ते जु पढ़े कछु नाहीं।
ते न पढ़े जिन साधु न साधित दीहदया न दिपै जिनमाहीं॥
सो न दया जु न धर्म धरै धरधर्म न सो जहँ दान वृथाहीं।
दान नसो जहँ सांच न केशव सांच न सो जुबसै छलछाहीं॥३॥

छप्पै।

तजहु जगत बिन भवन भवन तजि तिय बिन कीनो।
जिय तजि जु न सुख देइ सुसुख तजि संपति हीनो॥
संपति तजि बिनु दान दान तजि जहँ न विप्रमति।
विप्र तजहु बिन धर्म धर्म तजि जहाँ न भूपति॥
तजि भूप भूमि बिन भूमि तजि दोहदुर्ग बिनु जो बसइ।
तजि दुर्ग सुकेशवदास कवि जहाँ न जल पूरण लसइ॥४॥

अथ गणना एकवर्णन । दोहा ।

एक आतमा चक्र रवि, एक शुक्रकी दृष्टि ।
एकै दशन गणेशको, जानत सगरी सृष्टि ॥ ५ ॥

द्वैवर्णन ।

नदीकूल द्वै रामसुत, पक्ष खड्गकी धार ।
द्वैलोचन द्विजजन्म पद, भुज अश्विनीकुमार ॥ ६ ॥
लेखनि डंक भुजंगकी, रसना अयनानि जानि ।
गजरद मुखचुकरैंड के, कच्छाशिखा बखानि ॥ ७ ॥

तीनिवर्णन ।

गंगामग गंगेश दृग, ग्रीवरेख गुण लेखि ।
पावक काल त्रिशूल बलि, संध्या तीनि विशेखि ॥ ८ ॥
पुष्कर विक्रम रामविधि, त्रिपुर त्रिवेनी वेद ।
तीनिताप परिताप पद, ज्वरके तीनि सुखेद ॥ ९ ॥

चारिवर्णन ।

वेद वदनविधि वारनिधि, हरिवाहन भुज चारि ।
सेना अंग उपाय युग, आश्रम वर्ण विचारि ॥ १० ॥
सुरनायक वारनरदन, केशव दिशा बखानि ।
चतुर व्यूह रचना चमू, चरण पदारथ जानि ॥ ११ ॥

पांचवर्णन ।

पंडुपूत इन्द्रिय कवल, रुद्रवदन गतिबाण ।

लक्षण पंच पुराणके, पंच अंग अरु प्राण॥ १२ ॥
पंचवर्ग तरु पंच अरु, पंच शब्द परमान।
पंच संधि पंचाग्नि भनि, कन्या पंच समान॥ १३ ॥
पंचभूत पातक प्रकट, पंचयज्ञ जिय जानि।
पंचगव्य माता पिता, पंचामृतन बखानि॥ १४ ॥

षट्वर्णन।

कुलिश कोन षट् तर्क षट्, दरशन रस ऋतु अंग।
चक्रवर्ति शिवपुत्रमुख, मुनि षट्राग प्रसंग॥ १५ ॥
षट्माता षट्वदनकी, षट्गुण बरणहु मित्त।
आततायि नर षट् गनहु, षट्पद मधुप कवित्त॥ १६ ॥

सातवर्णन।

सात रसातल लोक मुनि, द्वीप सूरहय वार।
सागर सुरगिरि ताल तरु, अन्न ईति करतार॥ १७ ॥
सात छंद सातौ पुरी, सात त्वचा सुख सात।
चिरंजीवि मुनि सात नर, सप्तमातृका तात॥ १८ ॥

आठवर्णन।

योगअंग दिगपाल बसु, सिद्धि कुलाचल चारु।
अष्टकुली अहि व्याकरण, दिग्गज तरुनि विचारु॥ १९ ॥

नववर्णन।

अंगद्वार भूखण्ड रस, वाघिनिकुच निधि जानि।

सुधाकुण्ड ग्रह नाडिका, नवधा भक्ति बखानि ॥ २० ॥

दशवर्णन ।

रावणशिर श्रीराम के, दश अवतार बखान ।
विश्वेदेवा दोष दश, दिशा दशा दश जान ॥ २१ ॥

कवित्त ।

एकथल थितिपै बसत प्रतिजन जीव द्विकरपै देशदेश करको धरनु है । त्रिगुण कलित वपुवलित ललित गुण गुणनि के गुण तरुफलित फरनु है ॥ चारिही पदारथको लोभ चित्त नितनित दीबेको पदारथ समूहको परनु है । केशौदास इन्द्रजीत भूतल अभूत पंच भूतकी प्रभूत भवभूतको सरनु है ॥ २२ ॥

कवित्त ।

दरशै न सुरसे नरेश्श शिर नावैं नित षटदरशनही को शिर नाइयतु है । केशौदास पुरी पुरपुंजनके पालकपै सातही पुरीसे पूरो प्रेम पाइयतु है ॥ नायिका अनेकनिको नायक नगर नव अष्टनायकानिही सों मन लाइयतु है । नवधाई हरिको भगत इन्द्रजीतजी को दश अवतारही को गुण गाइयतु है ॥ २३ ॥

अथ आशीर्वादवर्णन । दोहा ।

मात पिता गुरु देव मुनि, कहतजु कछु सुखपाइ ।
ताहीसों सब कहत हैं, आशिष कवि कविराइ ॥ २४ ॥

उदाहरण ।

मलय मिलत बास कुंकुमकलित युत जावक कुसुमनख पूजित ललित कर । जटित जरायकी जँजीर बीच नीलमणि लागिरहे लोकनि के नैन मानों मनहर ॥ पन्नग पतंग अरु किन्नर असुर सुर मसक गयंद सम चाहत अचरचर । हयपर गयपर पलिकासु पीठपर अरिउरपर अवनीशनिके शीशपर ॥ २५ ॥

सवैया ।

होयधौं कोऊ चराचर मध्य में उत्तम जाति अनुत्तमहीको ।
किन्नर कै नर नारि विचार कि बास करै थलकै जलहीको ॥
अंगी अनंग कि मूढ़ अमूढ़ उदास अमीत कि मीत सहीको ।
सो अथवै कि कहूं जनि केशव जाके उदोत उदो सबहीको ॥ २६ ॥

प्रेमालंकारलक्षण । दोहा ।

कपट निपट मिटिजाय जहँ, उपजै पूरण क्षेम ।
ताहीसों सब कहत हैं, केशव उत्तम प्रेम ॥ २७ ॥

यथा सवैया ।

कछु बात सुनै सपनेहूं वियोग की होन चहै दुइ टूक हियो ।
मिलिखेलिये जा सहुवालकतैं कहि तासों अबोलो क्योंजातकियो ॥
कहिये कह केशव नैननसों बिन काजहि पावकपुंज पियो ।
सखि तूं बरजै अरु लोग हँसैं सब काहेको प्रेमको नेमलियो ॥२८॥

अथ श्लेषालंकारवर्णन । दोहा ।

दोय तीनि अरु भांति बहु, आनत जामें अर्थ ।
श्लेष नाम तासों कहत, जिनकी बुद्धि समर्थ ॥ २६ ॥

दोय अर्थश्लेष । कवित्त ।

धरत धरणि ईशशीश चरणोदकनि गावत चतुरमुख सब सुखदानिये । कोमल अमलपद कमलाकर कमल कलित बलित गुण क्यों न उर आनिये ॥ हिरण्यकशिपु दानकारी प्रह्लाद हित द्विजपद उरधारी वेदनि बखानिये । केशौदास दारिद दुरदके विदारिबे को एकै नरसिंह को अमरसिंह जानिये ॥ ३० ॥

अथ त्रैअर्थश्लेष ।

परमविरोधी अविरोधी है रहत सब दानिनके दानि कवि केशव प्रमान हैं । अधिक अनंत आप सोहत अनंतसंग अशरण शरण सुरक्षकनिधान हैं ॥ हुतभुकहित मति श्रीपति बसत हिय भावत हैं गंगाजल जगको निदान हैं । केशौरायकी सों कहें केशोराय देखि देखि रुद्रकी समुद्र की अमरसिंहरान हैं ॥ ३१ ॥

अथ चार अर्थ ।

दानवारिसुखद जनक यातनानुसार करषत धनुगुन सरस सुहाये हैं । नरदेवक्षयकार करमहरन खरदूषणके दूषण सुकेशौदास गाये हैं ॥ नागधरप्रिय मानि लोकमाता सुखदानि सोदरसहायक

नवल गुन भाये हैं । ऐसो राजा राम व्रज राम कि परशुराम केशौदास राजा रामसिंह उर आये हैं ॥ ३२ ॥

अथ पंचार्थ ।

भावत परमहंस जात गुण सुन सुख पावत संगीत मीत विबुध बखानिये । सुखद शक्तिधर समरसनेही बहु वदन विदित यश केशौदास गानिये ॥ राजै द्विजराजपद भूषण विमल कमलासन प्रकाश परदाराप्रिय मानिये । ऐसे लोकनाथ कै त्रिलोकनाथ रघुनाथ कै धौं नाथनाथ राजा रामसिंह जानिये ॥ ३३ ॥

अथ श्लेषभेदवर्णन । दोहा ।

तिनमें एक अभिन्न पद, और भिन्नपद जानि ।
श्लेष सुबुद्धि दुवेष के, केशवदास बखानि ॥ ३४ ॥

अथ अभिन्नपद । कवित्त ।

सोहत सुकेशी मंजुघोषा रति उरबसी राजा राम मोहिबेको मूरति सुहाई है । कलरव कलित सुरभि रागरंगयुत वदन कमल पटपद छवि छाई है ॥ भृकुटी कुटिल धनु लोचन कटाक्ष शर भेदियत तन मन अति सुखदाई है । प्रमुदित पयोधर दामिनीसी साथ नाथ कामनीकी सेना कामसेना बनिआई है ॥ ३५ ॥

अथ भिन्नपद । दोहा ।

पदही में पद काढ़िये, ताहि भिन्नपद जानि ।
भिन्नाभिन्न पुनि पदनिके, उपमा श्लेष बखानि ॥ ३६ ॥

दोहा ।

वृषभवाहिनी अंग उर, वासुकि लसत नवीन ।
शिवसँग सोहत सर्वदा, शिवा कि रायप्रवीन ॥ ३७ ॥

उपमाश्लेष । कवित्त ।

राजै रज केशौदास दूटति अरुणलार प्रतिभट अंकनितें अंक सरसत है । सेना सुन्दरीन के विलोकि मुखभूषणनि किलकि किलकि जाही ताहीको धरतु है ॥ गाढ़े गढ़ खेलही खिलौननि ज्यों तोरि डारै जग जय जश चारु चन्द्र को अरतु है। चन्द्रसेन भुवपाल आंगन विलास रण तेरी करवाल बाललीला सी करत है ॥३८॥

दोहा ।

बहुरयो एक अभिन्नक्रिय, औ विरुद्धक्रिय आन ।
सुनि विरुद्ध कर्मा अवर, नियम विरोधी मान ॥३९ ॥

अथ अभिन्नक्रियाश्लेष । कवित्त ।

प्रथम प्रयोगियतु वाजि द्विजराजप्रति सुवरण सहित न विहित प्रमान है । सजल सहित अंग विक्रम प्रसंग रंग कोशतें प्रकाशमान धीरजानिधान है ॥ दीनको दयाल प्रतिभटानिको शाल करै कीरति को प्रतिपाल जानत जहान है । जात है विलीनह्वै दुनी के दान देखि रामचन्द्रजू को दान कैधों केशव कृपान है ॥ ४० ॥

अथ विरुद्धक्रियाश्लेष । सवैया ।

कछु काहू सुनों कलबोलत कोकिल कामकि कीरति गावत सी ।

पुनि बातैं कहै कलभाषिनि कामिनि केलि कलान पढ़ावत सी ॥
सुनि बाजत बीन प्रबीन नवीन सुराग हिये उपजावत सी ।
कहि केशवदास प्रकास विलास सबै बन शोभ बढ़ावत सी ॥४१॥

अथ विरुद्धकर्माश्लेष । कवित्त ।

दोऊ भागवन्त तेजवन्त बलवन्त अति दुहुँनकी वेदनि बखानी बात ऐसी है । दोऊ जाने पुण्य पाप दुहुँनिके ऋषिबाप दुहुँनकी देखियत मूरति सुदेसी है ॥ सुनो देवदेव बलदेव कामदेव प्रिय केशौराय कीसों तुम कहौ जैसी तैसी है । वारुणी को राग होत सूरज करत अस्त उदो द्विजराजको जु होत यह कैसी है ॥ ४२ ॥

अथ नियमाश्लेष । कवित्त ।

बैरी गाय ब्राह्मणको कालै सब काल जहाँ कविकुल ही को सुवरण हरकाज है । गुरुसेजगामी एक बालकै बिलोकियत मातंगनहीको मतवारे कैसो साज है ॥ अरिनगरीन प्रति करत अगम्यागौन दुर्गनहीं केशौदास दुर्गति सी आज है । राजा दशरथसुत राजारामचन्द्र तुम चिरचिर राज करो जाको ऐसो राज है ॥ ४३ ॥

अथ विरोधीश्लेष । सवैया ।

कृष्ण हरे हरये हरैं संपति शंभु विपत्ति इहै अधिकाई ।
जातक काम अकामनि को हित घातक काम सुकाम सहाई ॥
छातीमें लच्छि दुरावत वेतो फिरावत ये सबके सँग धाई ।

यद्यपि केशव एक तऊँ हरितें हरसेवक को सत भाई ॥ ४४ ॥

अथ सूक्ष्मालंकार। दोहा।

कौनौ भाव प्रभावते, जानै जियकी बात।
इंगितते आकारते, कहि सूक्षम अवदात ॥ ४५ ॥

रसिकप्रियायाम्। सवैया।

सखि सोहत गोपसभा महि गोविंद बैठे हुते द्युतिको धरिकै।
जनु केशव पूरणचन्द्र लसै चित चारु चकोरनिको हरिकै ॥
तिनको उलटोकरि आनि दियो केहु नीरज नीर नयो भरिकै।
कहि काहेतें नेकु निहारि मनोहर फेरि दियो कलिका करिकै ॥ ४६ ॥

अथ लेशालंकार। दोहा।

चतुराई के लेसतें, चतुर न समझैं लेस।
बर्णत कवि कोविद सबै, ताको केशव लेस ॥ ४७ ॥

सवैया।

खेलत हैं हरि बागै बने जहँ बैठी प्रिया रतितें अतिलोनी।
केशव कैसेहु पीठमें दीठि परी कुच कुंकुमकी रुचिरोनी ॥
मातु समीप दुराइ भले तिन सात्त्विक भावन की गति होनी।
धूरिकपूरकी पूरि बिलोचन सूंघि सरोरुह ओढ़ि उढ़ोनी ॥ ४८ ॥

अथ निदर्शना। दोहा।

कौनहुँ एक प्रकारते, सत अरु असत समान।
कहिये प्रकट निदर्शना, समुझत सकल सुजान ॥ ४९ ॥

कवित्त।

तेई करैं राज चिर राजनि में राजै राज तिनहीं के लोक लोक लोकनि अटतु है। जीवन जनम तिनही को धन्य केशौदास औरनिके पशुनि ज्यों दिन निघटतु है॥ तेई प्रभु परम प्रसिद्ध पुहुमीके पति तिनहीं की प्रभु प्रभुताई को रटतु हैं। सूरज समान सोम मित्रहू अमित्र कहूँ सुख दुख आपने उदै ही प्रकटतु है॥ ५०॥

अथ ऊर्जालंकार। दोहा।

तजै नवीन हँकार को, यद्यपि घटै सहाय।
ऊर्ज नाम तासों कहैं, केशवकवि कविराय॥ ५१॥

सवैया।

को बपुरो जो मिल्यो है विभीषण है कुलदूषण जीवैगो कौलों।
कुम्भकरन्न मस्यो मघवारिपु तोरु कहा न डरों यम सौंलों॥
श्रीरघुनाथ के गातनि सुन्दरि जानतहूँ कुशलात न तौलों।
शाल सबै दिगपालनिको कर रावणके करवाल है जौलों॥५२॥

अथ रसमयालंकार। दोहा।

रसमय होय सुजानिये, रसवत केशवदास।
नव रसको संक्षेपही, समझो करत प्रकास॥ ५३॥

अथ शृंगाररसवर्णन। सवैया।

आन तिहारी न आन कहौं तनमें कछु आन न आनहीं कैसो।
केशव कान्ह सुजान स्वरूप न जाय कह्यो मन जानतु जैसो॥

यद्यपि केशव एक तऊँ हरितें हरसेवक को सत भाई ॥ ४४ ॥

अथ सूक्ष्मालंकार। दोहा।

कौनौ भाव प्रभावते, जानै जियकी बात।
इंगितते आकारते, कहि सूक्षम अवदात ॥ ४५ ॥

रसिकप्रियायाम्। सवैया।

सखि सोहत गोपसभा महि गोविंद बैठे हुते द्युतिको धरिकै।
जनु केशव पूरणचन्द्र लसै चित चारु चकोरनिको हरिकै ॥
तिनको उलटोकरि आनि दियो केहु नीरज नीर नयो भरिकै।
कहि काहेतें नेकु निहारि मनोहर फेरि दियो कलिका करिकै॥४६॥

अथ लेशालंकार। दोहा।

चतुराई के लेसतें, चतुर न समझैं लेस।
बरणत कवि कोविद सबै, ताको केशव लेस ॥ ४७ ॥

सवैया।

खेलत हैं हरि बागै बने जहँ बैठी प्रिया रतितें अतिलोनी।
केशव कैसेहु पीठमें दीठि परी कुच कुंकुमकी रुचिरोनी ॥
मातु समीप दुराइ भले तिन सात्त्विक भावन की गति होनी।
धूरिकपूरकी पूरि विलोचन सूंघि सरोरुह ओढ़ि उढ़ोनी ॥ ४८ ॥

अथ निदर्शना। दोहा।

कौनहुँ एक प्रकारते, सत अरु असत समान।
कहिये प्रकट निदर्शना, समुझत सकल सुजान ॥ ४९ ॥

कवित्त।

तेई करैं राज चिर राजनि में राजैं राज तिनहीं के लोक लोक लोकनि अटतु है। जीवन जनम तिनही को धन्य केशौदास औरनिके पशुनि ज्यों दिन निघटतु है॥ तेई प्रभु परम प्रसिद्ध पुहुमीके पति तिनहीं की प्रभु प्रभुताई को रटतु है। सूरज समान सोम मित्रहू अमित्र कहूँ सुख दुख आपने उदै ही प्रकटतु है॥५०॥

अथ ऊर्जालंकार। दोहा।

तजै नवीन हँकार को, यद्यपि घटै सहाय।
ऊर्ज नाम तासों कहैं, केशवकवि कविराय॥ ५१॥

सवैया।

को बपुरो जो मिल्यो है विभीषण है कुलदूषण जीवैगो कौलों।
कुम्भकरन्न मर्‍यो मघवारिपु तौरु कहा न डरौं यम सौलों॥
श्रीरघुनाथ के गातनि सुन्दरि जानतहूँ कुशलात न तौलों।
शाल सबै दिगपालनिको कर रावणके करवाल है जौलों॥५२॥

अथ रसमयालंकार। दोहा।

रसमय होय सुजानिये, रसवत केशवदास।
नव रसको संक्षेपही, समझो करत प्रकास॥ ५३॥

अथ शृंगाररसवर्णन। सवैया।

आन तिहारी न आन कहौं तनमें कछु आन न आनहिं कैसो।
केशव कान्ह सुजान स्वरूप न जाय कह्यो मन जानतु जैसो॥

लोचन शोभहि पीवत जात समात सिहात अघात न तैसो ।
क्यों न रहात विहात तुम्हैं बलिजात सुबातकहौ नेक वैसो ॥५४॥

अथ वीररसवर्णनं रामचंद्रिकायाम् । छप्पै ।

जिहि शर मधुमद मर्दि महासुर मर्दन कीनों ।
मार्‌यो कर्कस नरक शंख हनि शंख सुलीनों ॥
निःकण्टक सुरकटक कर्‌यो कैटभ वपु खण्ड्यो ।
खरदूषण त्रिशिरा कबन्ध तरु खण्ड विहण्ड्यो ॥
बल कुम्भकरण जिमि संहर्‌यो पल न प्रतिज्ञातैं टर्‌यो ।
तिहि बाण प्राणदशकण्ठ के कण्ठ दशौ खण्डित कर्‌यो ॥५५॥

अथ रौद्ररस । छप्पै ।

करि आदित्य अदृष्ट नष्ट यम करौं अष्ट वसु ।
रुद्रनि बोरि समुद्र करौं गन्धर्व सर्व पसु ॥
बलित अवेर कुबेर बलिहि गहि देउँ इन्द्र अब ।
विद्याधरनि अविद्य करौं बिन सिद्धि सिद्ध सब ॥
लैकरौंअदितिकीदासिदिति अनिलअनलमिलिजाहिंजब ।
सुनि सूरज सूरज उगतहीं करौं असुर संसार सब ॥५६॥

अथ करुणारस । सवैया ।

दूरिते दुन्दुभी दीह सुनी न गुनी जनु पुंज की गुंजन गाढ़ी ।
तोरन तूरन तूर बजैं बर भावत भाट न भावत ढाढ़ी ॥
विप्र न मंगल मंत्र पढ़ैं अरु देखैं न वारवधू ढिग ठाढ़ी ।

केशव तात के गात उतारति आरति आरति मातहि बाढ़ी ॥ ५७ ॥

अथ भयानकरस । सवैया ।

रामकी बाम जु ल्याये चुराय सु लंकमें मीचुकी बेलि बईजू ।
क्यों रणजीतहुगे तिनसों जिनकी धनुरेख न नांघी गईजू ॥
बीसाबिसे बलवन्तहुते जो हुती दृग केशव रूप रईजू ।
तोरि शरासन शंकर को पिय सीय स्वयम्बर क्यों न लईजू ॥ ५८ ॥

पुनः ।

बालि बली न बच्यो परि खोरि सु क्यों बचिहौ तुमको निज खोरहि ।
केशव क्षीर समुद्र मथ्यो कहि कैसे न बांधिहैं सागर थोरहि ॥
श्रीरघुनाथ गनो असमर्थ न देखि बिना रथ हाथिहि घोरहि ।
तोस्यो शरासन शंकरको जिहिं शोच कहा तुव लंक न तोरहि ॥ ५९ ॥

अद्भुतरस । कवित्त ।

आसीविष सिंधुविष पावकसो नातो कछू हुतो प्रहलाद सों पिताको प्रेम छूट्यो है । द्रौपदी की देह में खुथी ही कहा दुश्शासन खरोई खिसानो खैंचि बसन न छूट्यो है ॥ पेट में परीक्षितकी पैठिके बचाई मीच जब सबहीको बलि बिधिबान लूट्यो है । केशव अनाथन को नाथ जो न रघुनाथ हाथी कहा हाथके हथ्यार लाग छूट्यो है ॥ ६० ॥

अथ वीभत्सरस । पद्मावती छन्द ।

सिगरे नरनायक असुर विनायक रक्षपती हिय हारि गये ।
काहू न उठायो अरु न चढ़ायो टरो न टारो भीत भये ॥
इन राजकुमारन अति सुकुमारन लै आये हो पैज करे ।
व्रतभंग हमारो भयो तुम्हारो ऋषि तप तेज न जानि परे ॥६१॥

पुनः कवित्त ।

केशौदास वेद विधि साथ ही बनाई व्याधि शबरीकों कौने शुचि संहिता पढ़ाई है । वेषधारी हरिवेष देख्यो है अशेष जग तारककों कौने सिख तारक सिखाई है ॥ वाराणसी बार न कस्यो है कहूं वस वास गनिका कबैधौं मणिकर्णिका अन्हाई है । पतितन पावन करत जो न नंदपूत पूतना कबैधौं पतिदेवता कहाई है ॥ ६२ ॥

अथ हास्यरस । सवैया ।

बैठति है तिनमें हठिकै जिनकी तुमसों मति प्रेमपगी है ।
जानतहौं नलराज दमंती की दूत कथा रसरंग रँगी है ॥
पूँजगी साध सबै सुखकी तन भागकी केशव जोति जगी है ।
भेदकी बात सुनेते कछू वह मासकते मुसुक्यान लगी है ॥६३॥

अथ शांतरस । सवैया ।

देइबो जीवनवृत्ति वहै प्रभु है सबरे जगको जिनदैये ।
आवत ज्यों अन उद्यमते सुख त्यों दुख पूरबके कृत पैये ॥

राज औ रंक सुराज करो अब काहेको केशव काहू डरैये ।
मारनहार उवारनहार सुतौ सबके शिरऊपर हैये ॥ ६४ ॥

अथ अर्थांतरन्यासलक्षण । दोहा ।

और जानिये अर्थ जहँ, औरै वस्तु बखानि ।
अर्थांतरको न्यास यह, चारि प्रकार सुजानि ॥ ६५ ॥

यथा सवैया ।

मोरेहूं भौंह चढाय चितै डरपाइये कै मन केहूं करेरो ।
ताको तौ केशव कोरहिये दुख होत महा सु कहौं इत हेरो ॥
कैसोहै तेरो हियो हरिमें रहि छोरैं नहीं तन छूटत मेरो ।
बूंदकदूधको मास्यो है बांधि सुजानत हौं माई जायो न तेरो ॥ ६६ ॥

अथ अर्थान्तरन्यास के भेद । दोहा ।

युक्त अयुक्त बखानिये, और अयुक्तायुक्त ।
केशवदास विचारिये, चौथो युक्तायुक्त ॥ ६७ ॥

अथ युक्तलक्षण ।

जैसो जहां जु बूझिये, तैसो तहां सु आनि ।
रूपशील गुण युक्ति बल, ऐसो युक्त बखानि ॥ ६८ ॥

कवित्त ।

गरुवो गुरूको दोष दुखित कलंक करि भूषित निशाचरीन अंकानि भरत है । चंडकर मंडलते लैलै तौ प्रचंड कर केशो-दास प्रतिमास मास निकरत है ॥ विषधर बंधु है अनाथनि को

मतिबंधु विषको विशेषबंधु हियो हहरत है । कमलनयन की सों कमलनयन मेरे चन्द्रमुखी चन्द्रमाते न्यायही जरत है ॥ ६९ ॥

अथ युक्तलक्षण ।

जैसो जहां न बूझिये, तैसो तहां जु होय ।
केशवदास अयुक्त कहि, बरणत हैं सब कोय ॥ ७० ॥

कवित्त ।

केशौदास होत मारसीरिये सुमारसीरी आरसी लै देखि देह ऐसी ये है रावरी । अमल बतासे ऐसे ललित कपोल तेरे अधर तमोल धरे दृग तिल चावरी ॥ यही छबि छकिजात छनमें छबीले लाल लोचन गमार छीनि लै है इत आवरी । बारबार बरजे तैं बारबार जाति कत मैले बार वारों आनि बारी है तू बावरी ॥ ७१ ॥

अथ युक्तायुक्तलक्षण । दोहा ।

अशुभै शुभ है जात जहँ, क्यों हूं केशवदास ।
इहै अयुक्तै युक्त कवि, बरणत बुद्धि विलास ॥ ७२ ॥

सवैया ।

पातकहानि पितासंगहारि न गर्भके शूलनितें डरिये जू ।
तालनि को बँधिबो बध रोरको नाथके साथ चिता जरिये जू ॥
पत्रफटेतैं कटे ऋण केशव कैसहूं तीरथ में मरिये जू ।
नीकीसदा लगै गारि सगेनकी डांड़ भलो जु गया भरिये जू ॥ ७३ ॥

पुनः ।

आगेह्वै लीबो यहै जु चितै इत चौंकि उतै दृग ऐंचिलई है ।
मानिबेको इहई प्रतिउत्तर मानिये बात जु मौनमई है ॥
रोषकी रेख वहै रसकी रुख काहेको केशव छांड़ि दई है ।
नाहिं इहाँ तुम नाहिं सुनी यह नारि नईनकी रीति नई है ॥७४॥

युक्तायुक्त । दोहा ।

इष्टै बात अनिष्ट जहँ, कैसेहूं है जाय ।
सोई युक्तायुक्त कहि, बरणत कवि सुखपाय ॥ ७५ ॥

रसिकप्रियायाम् । सवैया ।

शूल से फूल सुवास कुवाससी भाकसी से भये भौन सभागे ।
केशव बाग महाबनसो जुरसी चढ़ी जोन्ह सबै अँग दागे ॥
नेह लग्यो उन नाहरसों निरि नाह घरीक कहूं अनुरागे ।
गारीसे गीत विरीविषसी सिगरेई शृंगार अँगारसे लागे ॥ ७६ ॥
पापकी सिद्धि सदा ऋणवृद्धि सुकीरति आपनी आप कहीकी ।
दुःखको दान जू सूतकन्हान जु दासीकी संतति संतत फीकी ॥
बेटीको भोजन भूषण राँड़को केशव प्रीति सदा परतीकी ।
युद्धमें लाज दया अरि को [illegible] जीति न नीकी ॥७७॥

व्यतिरेक । दोहा ।

तामें आनै भेद कछु, होय जु वस्तु समान ।
सो व्यतिरेक सु भाँति द्वै, युक्त सहज परिमान ॥ ७८ ॥

युक्तव्यतिरेक । कवित्त ।

सुन्दर सुखद अति अमल सकल विधि सदल सफल बहु सरस सँगीत सों । विविध सुवासयुत केशौदास आसपास राजै द्विजराज तन परम पुनीत सों ॥ फूलेई रहत दोऊ दीबेही को प्रतिपल देत कामनानि सम मीतहू अमीत सों । लोचन वचन गति बिन इतनोई भेद इन्द्र तरुवर अरु इन्द्र इन्द्रजीतसों ॥ ७९ ॥

सहजव्यतिरेक । सवैया ।

गाय बरावरि धाम सबै धन जाति बराबरिही चलिआई ।
केशव कंस दिवान पितानि बराबरिही पहिरावनि पाई ॥
वैस बरावरि दीपति देह बराबरि ही बिधि बुद्धि बड़ाई ।
ये अलि आजुही होहुगी कैसे बड़ी तुम आँखिनहींकी बड़ाई ॥८०॥

अथ अपह्नुति । दोहा ।

मनकी वस्तु दुराय मुख, औरै कहिये बात ।
कहत अपह्नुति सकल कवि, यासों बुधि अवदात ॥८१॥

कवित्त ।

सुन्दर ललित गति बलित सुवास अति सरस सुवृत्ति मति मेरे मन मानी है । अमल अदूषित सुभूषणनि भूषित सुवरण हरण मन सुर सुखदानी है ॥ अंग अंग हीको भाव गूढ़ भाव के प्रभाव जाने को सुभाव रूप पचिपहिचानी है । केशौदास देवी कोऊ देखी

रसिकप्रियायाम् । सवैया ।

ज्यों ज्यों हुलाससों केशवदास विलास निवास हिये अवरेख्यो ।
त्यों त्यों बढ़यो उर कंप कछू भ्रम भीत भयो किधौं शीत विशेख्यो ॥
मुद्रित होत सखी वरही मेरे नैन सरोजनि सांच कै लेख्यो ।
तैं जु कह्यो मुख मोहनको अरविंद सोहै सोतो चन्द सो देख्यो ॥ ४ ॥

अथ अन्योक्ति । दोहा ।

औरहि प्रति जु बखानिये, कछू और की बात ।
अन्य उक्ति यह कहत हैं, बरणत कवि न अघात ॥ ५ ॥

सवैया ।

दल देखौ नहीं जड़ जाड़ो बड़ो अरु घाम घनो जल क्यों हरिहै ।
कहि केशव बाव बहै दिन दाव दहै घर धीरज क्यों धरिहै ॥
फलहै फुलनाहीं कि तोलौं तुहीं कहि सो पहि भूख सही परिहै ।
कछु छांह नहीं सुख शोभा नहीं रहि कीर करील कहा करिहै ॥ ६ ॥

पुनः ।

अंग अली धरिये अँगियाउ न आजतें नींदो न आउन दीजै ।
जानत हौं जिय तातें सखीनके लाजहू तो अब साथ न लीजै ॥
थोरहि द्यौसते खेलत तेऊ लगीं उनसों जिन्हैं देखत जीजै ।
नाहके नेहके मामिले आपनी छांहहु की परतीति न कीजै ॥ ७ ॥

व्यधिकरणोक्ति । दोहा ।

औरहि में कीजे प्रकट, औरहि को गुण दोष ।

उक्ति यहै व्यधिकरन की, सुनत होत संतोष ॥ ८ ॥

कवित्त ।

जानु कटि नाभि कूल कंठ पीठ भुजमूल उरज करज रेख रेखी बहु भांति है । दलित कपोल रद ललित अधर रुचि रसना रसनरस रसमें रिसाति है ॥ लेटिलेटि लोटिपोटि लपटाति बीचबीच हांहां हूंहूं नेतिनेति बाणी होति जाति है । आलिंगन अंग अंग पीड़ियत पद्मिनीके सौतिनके अंग अंग पीड़नि पिराति है ॥ ९ ॥

पुनः ।

राजभार साजभार लाजभार भूमिभार भवभार जयभार नीके हीं अटतु हैं । प्रेमभार पनभार केशव संपत्तिभार पतिभारहुन अति युद्धनि जटतु हैं ॥ दानभार मानभार सकल सयानभार भोगभार भागभार घटना घटतु हैं । एते भार फूलनि ज्यों राजै राजा राम शिर तिहि दुख शत्रुनके शीरप फटतु हैं ॥ १० ॥

सवैया ।

पूत भयो दशरत्थको केशव देवनके घर बाजी बधाई ।
फूलिकै फूलनकों बरषै तरु फूलि फलै सबही सुखदाई ॥
क्षीर बही सरिता सब भूतल धीर समीर सुगंध सुहाई ।
सर्वसु लोग लुटावत देखिकै दारिद देह दरारसी खाई ॥ ११ ॥

विशेषोक्ति । दोहा ।

विद्यमान कारण सकल, कारज होइ न सिद्ध ।
सोई उक्ति विशेषमय, केशव परम प्रसिद्ध ॥ १२ ॥

सवैया ।

कर्णसे दुष्ट रे पुष्ट हुते भट पाप सुपुष्ट न शासन टारे ।
सोदरसे न दुशासनसे सब साथ समर्थ भुजा उसकारे ॥
हाथी हज़ारन के बल केशव खैंचि थके पट को डरडारे ।
द्रौपदीको दुरयोधन पै तिल अंग तऊ उघस्यो न उघारे ॥१३॥

रसिकप्रियायाम् । कवित्त ।

सिखैहारी सखी डरपायहारी कादंबिनी दामिनी दिखायहारी दिशि अधिरात की । झुकि झुकि हारी रति मारिमारि हास्यो मार हारी झकझोराति त्रिविधगति वातकी ॥ दई निरदई दई वाहि ऐसी काहे मति जारत जु रैनि दिन दाह ऐसे गातकी । कैसेहू न मानेही मनाय हारी केशौदास बोलिहारी कोकिला बोलाय-हारी चातकी ॥ १४ ॥

पुनः । सवैया ।

कर्ण कृपा द्विज द्रोण तहां तिनको पन काहू पै जाय न टास्यो ।
भीम गदाहि धरे धनु अर्जुन युद्ध जुरे जिनसों यम हास्यो ॥
केशवदास पितामह भीषम मीच करी बश लै दिशि चास्यो ।
देखतही तिनके दुरयोधन द्रौपदी सामुहे हाथ पसास्यो ॥ १५ ॥

वेई हैं वान बिधान निधान अनेक चमू जिन जोर हईजू ।
वेई हैं बाहु वहै धनु धीरज दीह दिशा जिन युद्ध जई जू ॥
वेई हैं अर्जुन आन नहीं जगमें यशकी जिनि बेलि वई जू ।
देखतही तिनके तब का बनि नीकहि नारि छिनाय लई जू ॥१६॥

असहोक्ति । दोहा ।

हानि वृद्धि शुभ अशुभ कछु, करियै गूढ़ प्रकास ।
होय सहोक्तिसु साथहीं, वर्णत केशवदास ॥ १७ ॥

यथा । कवित्त ।

शिशुता सहित भई मंदगति लोचननि गुणनिसों वलित ललित गति पाई है । भौंहनिकी होड़ाहोड़ ह्वैगई कुटिल अति तेरी बानी मेरी रानी सुनत सुहाई है ॥ केशौदास मुखहासही सिखैंही कटि तटि छिनछिन सूछम छबीली छबि छाई है । बारबुद्धि बालनि के साथही बढ़ीहै बीर कुचन के साथही सकुच उर आई है ॥१८॥

अथ व्याजस्तुतिनिंदा । दोहा ।

स्तुति निंदा मिस होय जहँ, स्तुतिमिस निंदा जानि ।
व्याजस्तुति निंदा यहै, केशवदास बखानि ॥ १९ ॥

स्तुतिके व्याजकरि निंदा । रसिकप्रियायाम् । कवित्त ।

शीतलहू हीतल तुम्हारे न बसति वह तुम न तजत तिल ताको उरताप गेहु । अपनो ज्यों हीरा सो पराये हाथ ब्रजनाथ दैकै तौ अकाथ साथ मैन ऐसो मन लेहु ॥ येते पर केशौदास तुम्हें न

प्रवाहि वाहि वहै अकुलागी भागी भूख सुख भूल्यो देहु । मार्‍यो मुँह छांड्यो छन छलनि छबीले लाल ऐसी तौ गमारिन सों तुमहीं निबाहो नेहु ॥ २० ॥

अथ व्याजनिन्दास्तुति ।

केसरि कपूर कंज केतकी गुलाब लाल सूंघत न चम्पक चँबेली चारु तोरी है । जिनकी तू पासवान बूझियेते आसपास ठाढ़ी केशौदास कीनी भय भ्रमभोरी है ॥ तेरी कौनेकृत किधौं सहज सुवास हीतें बसिगई हरि चित्त केहूं चोरा चोरी है । सुनहिं अचेत आई इह हेतु नाहीं तरु तोसी ग्वारि गोकुल गुवरहारि थोरी है ॥ २१ ॥

यथा ।

जानिये न जाकी माया मोहति मिलेहूं मोहिं एक हाथ पुण्य एक पापको बिचारिये । परदार प्रिय मत्त मातंग सुताभिगामी निशिचर कैसो मुख देखो देह कारिये ॥ आजलों अजादिराखै वरद विनोद भावै येते पै अनाथ अति केशव निहारिये । राजनिके राजा छांड़ि कीजतु तिलक ताहि भीषमसों कहा कहों पुरुष न नारिये ॥ २२ ॥

अथ अमितलक्षण । दोहा ।

जहां साधनैं भोग वै, साधक की शुभ सिद्धि ।
अमित नाम तासों कहत, जाकी अमित प्रसिद्धि ॥ २३ ॥

यथा । सवैया ।

आनन सीकर सीक कहा हिय तोहितते अतिआतुर आई ।
फीको भयो सुखही मुखराग क्यों तेरे पिया बहुबार बकाई ॥
प्रीतमको पट क्यों पलट्यो अलि केवल तेरी प्रतीति कों ल्याई ।
केशव नीकेहि नायक सों रमि नायका बातनहीं बहराई ॥ २४ ॥
को गनै कर्ण जगन्मणिसे नृप साथ सबैं दल राजनही को ।
जानै को खान किते सुलतानसो आयो शहाबुदी शाह दिलीको ॥
ओड़छे आनि जुर्‍यो कहि केशव शाहि मधूकरसों शक जीको ।
दौरिकै दूलह राम सुजीति कर्‍यो अपने शिर कीरति टीको ॥२५॥

अथ पर्यायोक्ति । दोहा ।

कौनहुँ एक अदृष्टते, अनहीं किये जु होय ।
सिद्ध आपने इष्टकी, पर्यायोकति सोय ॥ २६ ॥

कवित्त ।

खेलतही सतरंज अलिन में आपुहिते तहां हरि आये किधौं काहूके बुलायेरी । लागे मिलि खेलन मिलैकै मन हरे हरे दैन लागे दावु आपु आपु मन भायेरी ॥ उठि उठि गई मिस मिसहीं जितही तित केशौरायकीसों दोऊ रहे छबि छायेरी । चौंकि चौंकि तिहि छिन राधाजूके मेरी आली जलज से लोचन जलद से है आयेरी ॥ २७ ॥

अथ युक्तिअलंकार । दोहा ।

जैसो जाको बुद्धि बल, कहिये तैसो रूप ।
तासों कविकुल युक्ति यह, बरणत बहुत सुरूप ॥ २८ ॥

यथा । कवित्त ।

मदन बदन लेति लाजको सदन देखि यदपि जगत जीव मोहिबेको है छमी । कोटि कोटि चन्द्रमा सँवारि वारि वारि डारों जाके काज ब्रजराज आजुलों हैं संयमी ॥ केशौदास सविलास तेरे मुखकी सुवास सखी सुनि आरसही सारसनि सों रमी । मित्र देव क्षिति दुर्ग दंड दल कोश कुल बल जाके ताके कहो कौन बात की कमी ॥ २६ ॥

इति श्रीमद्विविधभूषणभूषितायां कविप्रियायां विशिष्टा-
लंकारवर्णनंनाम द्वादशः प्रभावः॥ १२ ॥

अथ समाहितालंकार । दोहा ।

हेतु न क्योंहूं होत जहँ, दैवयोग तें काज ।
ताहि समाहित नाम कहि, बरणत कविशिरताज ॥ १ ॥

रसिकप्रियायाम् । कवित्त ।

छविसों छबीली वृषभानुकी कुँवरि आजु रहीहुती रूप मद मान मद छकिकै । मारहूतें सुकुमार नंदके कुमार ताहि आयेरी मनावन सयान सब ताकिकै ॥ हँसि हँसि सौंहें करिकरि पांय परि-

परि केशौरायकी सों जब रहे जिय जकिकै। ताहीसमै उठे घन घोर घोर दामिनीसी लागी लौटि श्यामघन उरसों लपकिकै॥ २॥

पुनः सवैया।

सातहु दीपनि के अवनीपति हारि रहे जियमें जब जाने।
बीस बिसे व्रत भंगभयो सु कह्यो अब केशव को धनु ताने॥
शोक कि आगि लगी परिपूरण आइगये घनश्याम बिहाने।
जानकी के जनकादिक केशव फूलिउठे तरुपुण्य पुराने॥ ३॥

सुसिद्धालंकार। दोहा।

साधिसाधि औरै मरै, औरै भोगै सिद्धि।
तासों कहत सुसिद्ध सब, जे हैं बुद्धि समृद्धि॥ ४॥

यथा। सवैया।

मूलनिसों फल फूल सबै दल जैसी कछू रसरीति चलीजू।
भाजन भोजन भूषण भामिनि भौन भरी भव भांति भलीजू॥
डासन आसन वास निवास सुवाहन यान विमान थलीजू।
केशव कैकै महाजन लोग मरैं भुव भोगवै लैलै बलीजू॥ ५॥

छप्पै।

सरघा सँचि सँचि मरै शहर मधु पानकरत मुख।
खनि खनि मरत गँवार कूप जल पथिक पियत सुख॥
बागवान बहिमरत फूल बांधत उदार नर।

पचि पचि मरहिं सुवार भूप भोजननि करत वर ॥
भूषण सुनार गढ़ि गढ़ि मरहिं भामिनि भूषित करत तन ।
कहि केशव लेखक लिखिमरहिं पंडित पढ़हिं पुराणगन ॥ ६ ॥

प्रसिद्धालंकार । दोहा ।

साधन साधै एक भुव, भुगवै सिद्धि अनेक ।
तासों कहत प्रसिद्ध सब, केशव सहित विवेक ॥ ७ ॥

यथा । सवैया ।

माताके मोह पिता परितोषन केवल राम भरे रिसभारे ।
औगुण एकहि अर्जुन को छितिमंडल के सब क्षत्रिय मारे ॥
देवपुरीकहँ औधपुरी जन केशवदास बड़े अरु बारे ।
शूकर श्वान समेत सबै हरिचन्दके सत्य सदेह सिधारे ॥ ८ ॥

विपरीतालंकार । दोहा ।

कारज साधकको जहां, साधन बाधक होय ।
तासों सब विपरीत यों, कहत सयाने लोय ॥ ९ ॥

कवित्त ।

नाहतें नाहर त्रिय जेवरीतें सांप करि घालै घर वीथिका बसावति बनानिकी । शिवहि शिवाही भेद पारति जिनकी माया माया हू न जानै छाया छलनि तनानिकी ॥ राधाजूसों कहा कहों ऐसिनकी सुनै सिख सांपिनि सहित विष रहित फनानिकी ।

क्यों न परै बीच बीच आगिऔ न साहिसकै बीच पारी अंगना अनेक अंगननि की ॥ १० ॥

साथ ना सयानो कोऊ हाथना हथ्यार रघुनाथजूके यज्ञको तुरंग गहि राख्योई । काहू न कह्यौटी शिर छोटी छोटी काकपक्ष पांचही बरसके न युद्ध अभिलाख्योई ॥ नल नील अंगद सहित जाम्बवंत हनुमंत से अनंत जिन नीरनिधि नाख्योई । केशौदास दीप दीप भूपनिसों रघुकुल कुश लव जीतिकै विजयको रस चाख्योई ॥ ११ ॥

अथ रूपक । दोहा ।

उपमाही के रूपसों, मिल्यो बरणिये रूप ।
ताही सों सब कहत हैं, केशव रूपक रूप ॥ १२ ॥

यथा ।

बदन चन्द्र लोचन कमल, बांह पाश ज्यों जान ।
कर पल्लव अरु भ्रूलता, बिंबाधरणि बखान ॥ १३ ॥
ताके भेद अनेक सब, तीनै कहे सुभाव ।
अद्भुत एक विरुद्ध अरु, रूपकरूपक नाव ॥ १४ ॥

अद्भुतरूपक ।

सदा एकरस बर्णिये, और न जाहि समान ।
अद्भुत रूपक कहत हैं, तासों बुद्धिनिधान ॥ १५ ॥

कवित्त ।

शोभा सरवरमाहिं फूल्योई रहत सखि राजै राजहंसनि समीप सुखदानिये । केशौदास आसपास सौरभके लोभवने प्राणनिके देव भौंर भ्रमत बखानिये ॥ होति जोति दिन दूनी निशि में सहस गुनी सूरज सुहृद चारु चंद्रमा न मानिये । प्रीतिको सदन छूयसकै न मदन ऐसो कमलवदन जग जानकीको जानिये ॥ १६ ॥

अथ विरुद्धरूपक । दोहा ।

जहँ कहिये अनमिल कछू, सुमिल सकल विधि अर्थ ।
सो विरुद्ध रूपक कहत, केशव बुद्धि समर्थ ॥ १७ ॥

सवैया ।

सोनेकी एकलता तुलसीबन क्यों बरणों सुनि बुद्धि सकै छ्वै ।
केशवदास मनोज मनोहर ताहि फले फल श्रीफल से ग्वै ॥
फूलि सरोज रह्यो तिन ऊपर रूप निरूपन चित्त चलै च्वै ।
तापर एक सुवा शुभ तापर खेलत बालक खंजन के द्वै ॥ १८ ॥

अथ रूपकरूपक । दोहा ।

रूप भाव जहँ बरणिये, कौनहु बुद्धि विवेक ।
रूपकरूपक कहत कवि, केशवदास अनेक ॥ १९ ॥

सवैया ।

काछे सितासित काछनी केशव पातुर ज्यों पुतरीनि विचारो ।
कोटि कटाक्ष चलैं गति भेद नचावत नायक नेह न न्यारो ॥

बाजत है मृदुहास मृदंग सुदीपति दीपन को उजियारो ।
देखतहौं हरि देखि तुम्हें यह होत है आंखिनही में अखारो ॥२०॥

अथ दीपक । दोहा ।

वाचि क्रिया गुण द्रव्य को, वरणहु करि इक ठौर ।
दीपक दीपति कहत हैं, केशव कवि शिरमौर ॥ २१ ॥
दीपक रूप अनेक हैं, मैं वरणे द्वै रूप ।
मणिमाला तासों कहैं, केशव सब कविभूप ॥ २२ ॥

मणिदीपक ।

बरषा शरद वसंत शशि, शुभता शोभ सुगंध ।
प्रेम पवन भूषण भवन, दीपक दीपकबंध ॥ २३ ॥
इनमें एक जु वरणिये, कौनहु बुद्धि विलास ।
तासों मणिदीपक सदा, कहिये केशवदास ॥ २४ ॥

कवित्त ।

प्रथम हरिणनैनि हेरि हरि हरकी सों हरषि हरषि तमतेजनि हरतु है । केशौदास आसपास परमप्रकास सो विलासनि विलास कछू कहि न परतु है ॥ भांति भांति भामिनी भवन कहँ भूखे भव सुभग सुभाय शुभ शोभा को धरतु है । मानिनि समेत मानि मानिनीनि वशकरि मेरो मन मेरो दीप दीपति करतु है ॥ २५ ॥

पुनः ।

दक्षिणपवन द[illegible] य[illegible] लगि लोलन करतु लौंग

लवली लताको फरु। केशौदास केसर कुसुमके सरसकन तनु तनु तिनहूं को सहि न सकति भरु॥ क्योंहूं क्योंहूं होत हठि साहस विलास सब चम्पक चमेली मिलि मालती सुवास हरु। शीतल सुगन्ध मन्द गति नन्दनन्दकी सौं पावत कहां ते तेज तोरिबेको मानतरु॥ २६॥

मालादीपक। दोहा।

सबै मिलै जहँ बरणिये, देशकाल बुधिवन्त।
मालादीपक कहत हैं, ताके भेद अनन्त॥ २७॥

सवैया।

दीपक देहदशा सों मिलै सुदशा मिलि तेजहि ज्योति जगावै।
जागिकै ज्योति सबै समुझै तमशोधि सु तौ शुभता दरशावै॥
सो शुभता रचै रूपक रूपको रूप सु कामकला उपजावै।
काम सु केशव प्रेम बढ़ावत प्रेमलै प्राणप्रियाहि मिलावै॥ २८॥

पुनः। कवित्त।

घननकी घोर सुनि मोरनि के शोर सुनि सुनि सुनि केशव अलाप आलीजनको। दामिनी दमक देखि दीपकी दिपति देखि देखि शुभसेज देखि सदन सुवन को॥ कुंकुम की वास घनसारकी सुवास भई फूलनि की वास मन फूलिकै मिलनको। हँसिहँसि मिले दोऊ अनहीं मनाये मान छूटि गयो येही बेर राधिका-रमनको॥ २९॥

अथ प्रहेलिका । दोहा ।

बरणत वस्तु दुराय जहँ, कौनहु एक प्रकार ।
तासों कहत प्रहेलिका, कविकुल सुबुधि विचार ॥ ३० ॥

यथा ।

शोभित सत्ताइस शिर, उनसठि लोचन लेखि ।
छप्पन पद जानौं तहां, बीस बाहु वर देखि ॥ ३१ ॥

अथ सुधाकरमण्डल ।

चरण अठारह बाहु दश, लोचन सत्ताइश ।
मारतहै प्रति पालि कै, शोभित ग्यारह शीश ॥ ३२ ॥

हरिहरात्मक शरीर ।

नौ पशु नवही देवता, द्वै पक्षी जिहि गेह ।
केशव सोई राखि है, इन्द्रजीत जस देह ॥ ३३ ॥

अर्कमण्डल ।

देखै सुनै न खाय कछु, पांय न युवती जाति ।
केशव चलत न हारई, वासर गनै न राति ॥ ३४ ॥
केशव ताके नामके, आखर कहिये दोय ।
सूधे भूषण मित्रके, उलटे दूषण होय ॥ ३५ ॥
जाति लता दुहुँ आखरहि, नाम कहै सब कोय ।
सूधे सुख मुख भक्षिये, उलटे अम्बर होय ॥ ३६ ॥
सब सुख चाहे भोगयो, जो पिय एकहिवार ।

चन्द्र गहै जहँ राहुकों, जैसे तिहि दरबार ॥ ३७ ॥

बीरबलको चंद्रदरवान।

ऐसी मूर देखाव सखि, जिय जानत सब कोय ।
पीठ लगावत जासु रस, छाती सीरी होय ॥ ३८ ॥

अथ परिवृत्तअलंकार ।

जहां करत कछु औरई, उपजि परत कछु और ।
तासों परिवृत जानियहु, केशव कविशिरमौर ॥ ३९ ॥

रसिकप्रियायाम्। सवैया।

हँसि बोलतहीं सु हँसै सब केशव लाज भगावत लोक भगै ।
कछु बात चलावत घेरु चलै मन आनतहीं मनमत्थ जगै ॥
सखि तूं जू कहै सु हुती मन मेरेहू जानि इहै न हियो उमगै ।
हरि त्यों निकु डीठि पसारतहीं अंगुरीनि पसारन लोग लगै ॥४०॥

पुनः ।

हाथ गह्यो ब्रजनाथ सुभायही छूटिगई धुरि धीरजताई ।
पान भखै मुख नैन रचीरुचि आरसी देखि कह्यो हम ठाई ॥
दै परिरंभन मोहन मोमन मोहि लियो सजनी सुखदाई ।
लाल गुपाल कपोल नखक्षत तेरे दिये तें महाछवि छाई ॥ ४१ ॥

पुनः ।

जीव दियो जिन जन्म दियो जगी जाहीकी जोति बड़ी जग जानैं ।
ताहीसों बैर मनो वच काय करै कृत केशव को उरआनैं ॥

मूषक तौ ऋषि सिंह कस्यो फिरि ताही कों मूरुख रोप बितानैं।
ऐसो कछू यह कालहै जाको भलो करिए सु बुरो करि मानैं ॥४२॥

इति श्रीमद्विविधभूषणभूषितायां कविप्रियायां वरणा-
ख्यायां त्रयोदशः प्रभावः ॥ १३ ॥

अथ उपमालंकारवर्णन। दोहा।

रूप शील गुण होय सम, ज्यों क्योंहू अनुसार।
तासों उपमा कहत कवि, केशव बहुत प्रकार ॥ १ ॥

उपमा नाम।

संशय हेतु अभूत अति, अद्भुत विक्रय जान।
दूषण भूषण मोहमय, नियम गुणाधिक आन ॥ २ ॥
अतिशय उत्प्रेक्षित कहो, श्लेष धर्म विपरीत।
निर्णय लांछनिकोपमा, असंभाविता मीत ॥ ३ ॥
बुधि विरोध मालोपमा, और परस्पर ईश।
उपमा भेद अनेक हैं, मैं बरणे इकबीश ॥ ४ ॥

अथ संशयोपमा।

जहां नहीं निरधार कछु, सब सन्देह सुरूप।
सो संशय उपमा सदा, बरणत हैं कविभूप ॥ ५ ॥

रसिकप्रियायाम्। सवैया।

खंजन है मनरंजन केशव रंजननैन किधौं मतिजीकी।
मीठी सुधा कि सुधाधरकी द्युति दंतनकी किधौं दाड़िम हीकी ॥

चन्द भलो मुखचन्द किधौं सखि सूरति कामकी काहूकी नीकी ।
कोमलपंकज कै पदपंकज प्राणपियारे कि मूरति पीकी ॥ ६ ।

हेतुउपमा । दोहा ।

होत कौनहू हेतुतें, अति उत्तम सों हीन ।
ताही सों हेतूपमा, केशव कहत प्रवीन ॥ ७ ॥

यथा । कवित्त ।

अमल कमलकुल कलित ललित गति बेलिसों बलित मधुमाधवीको पानिये । मृगमद मरदि कपूरधूरि चूरि पग केसरिको केशव विलास पहिंचानिये ॥ झेलिकै चमेली करि चंपक सों केलि सेइ सेवती समेत हेतुकेतकी सों जानिये । हिलि मिलि मालतीसों आवत समीर जब तब तेरो मुखवास श्वास सों बखानिये ॥ ८ ॥

अभूतोपमा । दोहा ।

उपमा जाय कही नहीं, जाको रूप निहारि ।
सो अभूत उपमा कही, केशवदास विचारि ॥ ९ ॥

रसिकप्रियायाम् । कवित्त ।

दुरिहै क्यों भूषण वसन द्युति यौवनकी देहहूकी ज्योति होत द्यौस ऐसी राति है । नाह को सुवास लागे है है कैसी केशव सुभावहीकी वास भौंर भीर फारे खाति है । देखि तेरी सूरति की मूरति बिसूरतिहौं लालन के दृग देखिबेको ललचाति है । चालि

है क्यों चन्द्मुखी कुचनिके भार भये कचनके भार तो लचकि लंक जाति है ॥ १० ॥

अद्‌भुतोपमा । दोहा ।

जैसी भई न होति अब, आगे कहै न कोय ।
केशव ऐसी बरणिये, अद्‌भुत उपमा होय ॥ ११ ॥

यथा । सवैया ।

पीतमको अपमान न माननि ज्ञान सयाननि रीझि रिझावै ।
बंकबिलोकनि बोल अमोलनि बोलि तो केशव मोद बढ़ावै ॥
हावहू भाव विभाव के भाव प्रभावके भावनि चित्त चुरावै ।
ऐसे विलास जो होयँ सरोज में तौ उपमा मुख तेरे कि पावै ॥ १२॥

अथ विक्रयोपमा । दोहा ।

क्योंहू क्योंहू वर्णिये, कौनहु एक उपाइ ।
विक्रय उपमा होत तहँ, बरणत केशवराइ ॥ १३ ॥

कवित्त ।

केशौदास कुंदनके कोशतें प्रकाशमान चिंतामणि ओपनी सों ओपिकै उतारीसी । इंदुके उदोततें उकीरि ऐसी काढ़ी सब सारस सरस शोभा सार तें निकारीसी ॥ सोंधे कैसी सोंधीदेह सुधासों सुधारी पांव धारी देवलोकतें कि सिंधुतें उधारीसी । आजु यासों हँसि खेलि बोलि चालि लेहु लाल कालि एक ग्वालि ल्यावों कामकी कुमारीसी ॥ १४ ॥

अथ दूषणोपमा । दोहा ।

जहँ दूषणगण बर्णिये, भूषण भाव दुराय ।
दूषण उपमा होति तहँ, बुधजन कहत बनाय ॥१५

रसिकप्रियायाम् । सवैया ।

ज्यों कहूँ केशव सोम सरोज सुधा सुरभृङ्गनि देह दहे हैं ।
दाड़िम के फल श्रीफल विद्रुम हाटक कोटिक कष्ट सहे हैं ॥
कोक कपोत करी अहि केसरि कोकिल कीर कुचील कहे हैं ।
अंग अनूपम वा तिय के उनकी उपमा कहँ वेई रहे हैं ॥१६

भूषणोपमा । दोहा ।

दूषण दूरि दुराय जहँ, बरणत भूषण भाय ।
भूषण उपमा होत तहँ, बरणत कवि कविराय ॥ १७ ॥

कवित्त ।

सुबरणयुत सुरबरणि कलित पुनि भैरोंसो मिलित गति ललित बितानी है । पावन प्रकट द्युति द्विजनकी देखियत दीपति दिपति अति श्रुति सुखदानी है । शोभा सुखसानी परमारथ निधानी दीह कलुष कृपानी मानी सब जग जानी है । पूरबके पूरे पुण्य सुनिये प्रवीणराय तेरी वाणी मेरी रानी गंगाकोसो पानी है ॥ १८ ॥

अथ मोहोपमा । दोहा ।

रूपकके अनुरूप ज्यों, कौनहु विधि मन जाय ।
ताहीसों मोहोपमा, सकल कहत कविराय ॥ १९ ॥

कवित्त ।

खेलत न खेल कछु हांसी न हँसत हरि सुनत न कान गान तान बान सी बहै। ओढ़त न अम्बरनि डोलत दिगम्बर से शम्बर ज्यों शम्बरारि दुःखदेहको कहै॥ भूलिहू न सूंघै फूल फूलि फूलि कुंभिलात जात खात बीराहू न बात काहूसों कहै। देखि देखि मुखचंद्र केशव चकोर सम चंद्रमुखी चंद्रहूके बिंब त्यों चितै रहै ॥ २० ॥

नियमोपमालक्षण। दोहा।

एकहि सम जहँ बरणिये, मन क्रम वचन विशेष।
केशवदास प्रकास बस, नियमोपमा सुलेष॥ २१ ॥

कवित्त ।

कलित कलंक केतु केतुअरि सेतुगात भोग योगको अयोग रोगही को थलसो। पूनोही को पूरन पै प्रतिदिन दूनो होत छिन छिन छीन छवि छीलरको जलसो॥ चंद्रसो जु बरणत रामचंद्रकी दुहाई सोई मतिमंद कवि केशव कुशलसो। सुंदर सुवास अरु कोमल अमल अति सीताजूको मुख सखि केवल कमलसो॥ २२॥

गुणाधिकोपमा। दोहा।

अधिकनहूं तें अधिकगुण, जहां बरणियतु होय।
तासों गुण अधिकोपमा, कहत सयाने लोय॥ २३ ॥

कवित्त ।

वे तुरंग श्वेत रंग संग एक ये अनेक है सुरंग अंग रंगपै कुरंगमीत से । ये निशंक अंक यज्ञ वे सशंक केशौदास ये कलंक रंक वे कलंक ही कलीत से ॥ वे पिये सुधाहि ये सुधानिधीशके रसै जु सांचहू सुनीत ये पुनीत वे पुनीत से । देहिये दिये बिना बिना दिये न देहि वे भये न हैं न होहिंगे न इंद्र इंद्रजीत से ॥ २४ ॥

अथ अतिशयोपमा । दोहा ।

एक कछू एकै विषे, सदा होय रस एक ।
अतिशय उपमा होति तहँ, बरणत सहित विवेक ॥ २५ ॥

कवित्त ।

केशौदास प्रकट प्रकास सो प्रकास पुनि ईश्वरके शीश रजनीश अवरेखिये । थल थल जल जल अमल अचल अति कोमल कमल बहु बरण विशेषिये ॥ मुकुर कठोर बहु नाहिंन अचलयश वसुधा सुधानि त्रिय अधरनि लेखिये । एकरस एकरूप जाकी गीता सुनि सुनि तेरो सो वदन तैसो ताही विषे देखिये ॥ २६ ॥

उत्प्रेक्षोपमा । दोहा ।

एकै दीपति एककी, होय अनेकनि माह ।
उत्प्रेक्षित उपमा सुनो, कही कविनके नाह ॥ २७ ॥

कवित्त ।

न्यारयो ही गुमान मनमीननके मानियतु जानियतु सबही सु कैसे

न जताइये । पंचवान वाननिके आनआन भांति गर्व बाढ़्यो परिमान विनु कैसेकै बताइये ॥ केशौदास साविलास गीत रंग अंगनि कुरंग अंगनानिहू के अंगननि गाइये । सीताजीके नयन निकाई हमही में है सु झूठे हैं कमल खंजरीटहूमें पाइये ॥ २८ ॥

श्लेषोपमा । दोहा ।

जहां स्वरूप प्रयोगिये, शब्द एकही अर्थ ।
केशव तासों कहत हैं, श्लेषोपमा समर्थ ॥ २९ ॥

कवित्त ।

सगुन सरस सब अंगराग रंजितहै सुनहु सभाग बड़े भाग बाग पाइये । सुन्दर सुवास तन कोमल अमल मन षोड़श वरष महँ हरष बढ़ाइये ॥ वलित ललित वास केशौदास साविलास सुन्दर शृंगार ल्याई गहरु न लाइये । चातुरी कि शाला मांझ चातुर है नन्दलाल चम्पे कीसी माला बाला उर उरझाइये ॥ ३० ॥

धर्मोपमा । दोहा ।

एक धर्मको एक अँग, जहां जानियतु होय ।
ताहीसों धर्मोपमा, कहत सयाने लोय ॥ ३१ ॥

कवित्त ।

ऊजेर उदार उर वासुकी विराजमान हारके समान उपमा न आन टोहिये । शोभित जटानि बीच गंगाजी के जलविन्दु कुन्दकालिका से केशौराय मन मोहिये ॥ नख की सी रेखा चन्द चन्दन सी

चारुरज अंजन सिंगारे है गरल रुचि रोहिये । सब सुख सिरि शिवा सोहै शिवजूके संग जावक सो पावक लिलार लग्यं सोहिये ॥ ३२ ॥

विपरीतोपमा । दोहा ।

केशव पूरे पुण्यके, तेई कहिये हीन ।
तासों विपरीतोपमा, केशव कहत प्रवीन ॥ ३३ ॥

सवैया ।

भूषितदेह विभूति दिगम्बर नाहिंन अम्बर अंग नवीनो ।
दूरिकै सुन्दर सुन्दरी केशव दौरि दरीन में मन्दिर कीनो ॥
देखि विमंडित दंडिनसों भुजदंड दुवो असि दण्ड विहीनो ।
राजनि श्रीरघुनाथके राज कुमण्डल छोड़ि कमण्डल लीनो ॥ ३४ ॥

निर्णयोपमा । दोहा ।

उपमा अरु उपमेय को, जहँ गुण दोष विचार ।
निर्णय उपमा होत तहँ, सब उपमनि को सार ॥ ३५ ॥

कवित्त ।

एक कहै अमल कमल मुख सीताजी को एक कहै चन्द्रमाई आनँद को कन्दरी । होइ जोपै कमल तो रैनि माहिं सकुचैरी चन्द जो तो बासर में होय द्युति मन्दरी । बासर कमल रजनीही में सुमुखचन्द बासरहू रजनि विराजै जगबन्दरी । देखे मुख भावत न देख्योई कमल चन्द ताते मुख मुखै सखि कमल न चन्दरी ॥ ३६ ॥

लक्षणोपमा। दोहा।

लक्षण लक्ष्य जु वरणिये, वुधि बल बचन विलास।
है लक्षण उपमा सु यह, वरणत केशवदास॥ ३७॥

कवित्त।

वासों मृगअंक कहैं तोसों मृगनैनी सबै वासों सुधाधर तोहू सुधाधर मानिये। वह द्विजराज तेरे द्विजराजि राजै वह कलानिधि तोहूं कलाकलित बखानिये॥ रतनाकर के दोऊ केशव प्रकाशकर अंबर विलास कुवलय हित गानिये। वाके शीतकर कर तूहीं सीता शीतकर चन्द्रमासी चन्द्रमुखी सब जग जानिये॥ ३८॥

असंभवोपमा। दोहा।

जैसे भावन संभवै, तैसे करत प्रकास।
होत असंभावित तहां, उपमा केशवदास॥ ३९॥

कवित्त।

जैसे अति शीतल सुवास मलयजमाहिं अमल अनल बुधि बल पहिंचानिये। जैसे कीनों कालवश कोमल कमलमाहिं केसरोई केशौदास कंटक से जानिये॥ जैसे विधु सधर मधुर मधुमय माहि मोहै मोहरुख बिष विषम बखानिये। सुन्दरि सुलोचनि सुवचनि सुहृदि तैसे तेरे मुखआखर परुषरुख मानिये॥ ४०॥

विरोधोपमालक्षण। दोहा।

जहँ उपमा उपमेयसों, आपस मांझ विरोध।

सो विरोध उपमा सदा, बरणत जिनहिं प्रबोध ॥ ४१ ॥

कवित्त ।

कोमल कमलकर कमलाके भूषण को केशौदास दूषण शरदशशि गाई है। शशि अति अमल अमृतमय मणिमय सीताको वदन देखि ताको मलिनाई है ॥ सीताको बदन सब सुखको सदन जाहि मोहत मदन दुखकदन निकाई है। आंधोपल माधो जू के देखे विन सोई शशि सीताके बदन कहँ होत दुखदाई है ॥ ४२ ॥

अथ मालोपमा । कवित्त ।

मदन मोहन कोहै रूपको रूपक कैसो मदनबदन ऐसो जाहि जग मोहिये। मदनवदन कैसो शोभाको सदन श्याम जैसो है कमल रुचि लोचननि जोहिये ॥ कैसो है कमल जैसो आनँदको कन्द शुभ कैसो है सुकन्द चन्द उपमा न टोहिये । कैसो है सु चन्द वह केशव कुँवर कान्ह सुनो प्राणप्यारी जैसो तेरो मुख सोहिये ॥ ४३ ॥

परस्परोपमा । दोहा ।

जहां अभेद बखानिये, उपमा अरु उपमान ।
तासों परस्परोपमा, केशवदास बखान ॥ ४४ ॥

कवित्त ।

बारे न वड़े न बृद्ध नाहिंनै गृहस्थ सिद्ध बावरे न बुद्धिवन्त नारी औ न नरसे। अंगी न अनंगी गात ऊजरे न मैले मन स्यारऊ न सूरे रण थावर न चरसे ॥ दूबरे न मोटे रंक राजाऊ कहे न जाय

मरण अमर अरु आपनै न परसे । वेदहू न कछू भेद पावतहै केशौ-
दास हरिजूसे हेरे हर हरि हेरे हरसे ॥ ४५ ॥

संकीर्णोपमा । दोहा ।

बन्धु चोर वादी सुहृद, कल्पवृक्ष प्रभु जान ।
सम रिपु सोदर आदिदै, इनके अर्थ बखान ॥ ४६ ॥

कवित्त ।

बिधु कोसो बन्धु किधौं चोर हास्यरसकोकि कुन्दनिको वादी
किधौं मोतिनको मीत है । कल्प कलहंसको कि क्षीरनिधि छविप्रभ
हिमगिरिप्रभा प्रभु परम पुनीत है ॥ अमल अमितअंग गंगाके
तरंग सम सुधाको समूह रिपुरूपको अभीत है । देशदेश दिशिदिशि
परम प्रकाशमान किधौं केशौदास रामचन्द्रजी को गीत है ॥ ४७ ॥

इति श्रीमद्विविधभूषणभूषितायां कविप्रियायां विशेषा-
लंकारवर्णनं नाम चतुर्दशः प्रभावः ॥ १४ ॥

अथ नखशिखवर्णन । दोहा ।

सविताके परताप ज्यों, वरणे कविताअंग ।
कहौंयथामति वरणि त्यों, बनिताके प्रत्यंग ॥ १ ॥
कही जो पूरब पंडितन, जाकी जितनी जानि ।
तिनकी कविताअंगकी, उपमा कहौं बखानि॥ २ ॥
जगके देवी देवके, श्रीहरिदेव बखानि ।
तिन हरिकी श्रीराधिका, इष्ट देवता जानि ॥ ३ ॥

भूषित तिनके भूषणनि, त्रिभुवनपति के अंग ।
तिनके केशवदास कवि, बरणतहैं प्रत्यंग ॥ ४ ॥
नखतें शिखलौं बरणिये, देवीदीपति देखि ।
शिखतें नखलों मानुषी, केशवदास बिशेषि ॥ ५ ॥

चरणउपमा । दोहा ।

उपमा और समान सब, इतनो भेद बखानि ।
जावकयुत पग बरणिये, मेहँदी संयुत पानि ॥ ६ ॥

जावकवर्णन । दोहा ।

राग रजोगुन को प्रकट, प्रतिपक्षी को भाग ।
रंगभूमि जावक बरणि, को पराग अनुराग ॥ ७ ॥

कवित्त ।

कोमल अमलता की रंगभूमि कैधौं यह शोभियत आंगन कै शोभाके सदन को । अरुणदलानिपर कीनो कै तरणि कोय जीत्यो किधौं रजोगुन राजिवके गन को ॥ पलपल प्रणय करत किधौं केशौ-दास लागिरह्यो पूरबानुराग पियमन को । एरी वृषभानुकी कुमारी तेरे पांय सोहैं जावकको रंग कै सुहाग सौतिजन को ॥ ८ ॥

पाँवँवर्णन । दोहा ।

अतिकोमल पद बरणिये, पल्लव कमल समान ।
जलज कमलसे चरण कहि, कर कहि थलज प्रमान ॥ ९ ॥

कवित्त।

गंगाजू के जल मध्य कंठके प्रमाण पैठि पढ़ि पढ़ि सूरमंत्र आनँद बढ़ावहीं। केशौदास घाम जल शीत सहैं एकरस ठाढ़े एक पावँ कोटिकल्प नशावहीं॥ कोमल अमल भये कमलनिवास भये सुंदरसुवास मन यदपि भ्रमावहीं। पायो पद ब्रह्मसुत पदमिनि पदमिनि तेरे पदपदवीको पद्पै न पावहीं॥ १०॥

पादांगुलीवर्णन। दोहा।

अँगुली चंपक की कली, जीवनमूरि प्रमान।
तारा रवि शशि सुमनगन, मनगनि नखनि समान॥ ११॥
बिछिया बांक अनौट की, नाहिंन उपमा आन।
शोभा प्रभा तरंग गति, हंस अंस तनुत्रान॥ १२॥

सवैया।

चंपकली दलहूते भली पदअंगुली बालकी रूप रसैहैं।
शोभ सुदेश लसैं नख यों जनु प्रीतमके दृग देव बसैहैं॥
बांक अनौट बनी बिछियानि विभूषित ज्योति जराइ गसैहैं।
केशव सोम सरोजनि ऊपर कोपि मनो [illegible] कसैहैं॥ १३॥

नूपुरवर्णन। दोहा।

नूपुर रक्षा यंत्र मुनि, लोचन गुनगनहार।
याचक यश पाठक मधुप, जाभिक [illegible]दानिवार॥ १४॥

कवित्त ।

गतिनके हार कि विहारके पाहरू रूप किधौं प्रतिहार रतिपति के निलयके । हंसगति नायक कि गूढ़ गुनगायक कि श्रवनसुहा-यकाकि मायक हैं मयके ॥ केशव कमलमूल अलिकुल कुनित कि कैधौं प्रतिधुनित सुमनितानिचयके । हाटक घटित मणिश्यामल जटित पग नूपुर युगल किधौं बाजे हैं विजयके ॥ १५ ॥

जेहरिवर्णन । दोहा ।

जेहरि जयकंकणकलित, केशवदास सुजान ।
माला शाला शुभ सभा, सीमासम सोपान ॥ १६ ॥

कवित्त ।

कोमल कमल कूल नूपुर नवल अलि कुलनकी शाला किधौं केशव सुभायकी । चरण सरोवर समीप किधौं बिछिया क्वणित कलहंसन की बैठकबनायकी ॥ गजनि की हंसनि की जीती गति तेरी गति बाँधी जयकंकन की शोभा सुखदायकी । अमिल सुमिल सीढ़ी मदनसदनकी कि जगमगै पगयुग जेहरि जरायकी ॥ १७ ॥

ऊरुवर्णन । दोहा ।

ऊरु करिकर केलि सम, करभ शोभ सों लीन ।
चक्रवाक थल पुलिन सम, बरणे नितम्बनि पीन ॥ १८ ॥

कवित्त ।

कोमल कमलमुखी तेरे ये युगल जानु मेरे बलबीरजूके मनहि

हरतु हैं । सौरभ सुभाय शुभ रम्भा सो सदन अरु केशव करभहू की शोभा निदरतु हैं ॥ कोटि रतिराज सिरताज व्रजराज की सों देखि देखि गजराज लाजनि मरतु हैं । सोचि मोचि मद रुचि सकल सकोच शोच सुधि आये शुण्डनकी कुंडली करत हैं ॥ १९ ॥

नितम्बवर्णन । कवित्त ।

चहूंओर चितचोर चाक चक्य चक्रमणि सुन्दर सुदरशन दरशन हीने हैं । दितिसुत सुखनि घटाइबे को सुख रुख सुरनि बढ़ाइबे को केशव प्रबीने हैं ॥ सबहीके मनानि हरानि करि हरिहूके मन माथिबे को मनमथ हाथ लीने हैं । रुचि सुचि सकुचि सकेलिकै तरुनि तेरे काहू नये चतुर नितम्ब चक्र कीने हैं ॥ २० ॥

कटि उदर रोमावलीवर्णन । दोहा ।

कटि अति सूक्षम उदर द्युति, चलदलदल उपमान ।
रोमलता तमधूम अति, चारु चिटीन समान ॥ २१ ॥

कटिवर्णन । कवित्त ।

भूतकी मिठाई जैसी साधुकी झुठाई जैसी स्यारकी ढिठाई ऐसी क्षीण छहू ऋतु है । धीरा कैसो हास केशौदास दासी कैसो सुख शूर कीसी शंक अंक रंक कैसो वितु है । सूम कैसो दान महा मूढ़ कैसो ज्ञान गौरी गौरा कैसो मान मेरे जान समुदितु है । कौने है सँवारी वृषभानुकी कुमारी यह तेरी कटि निपट कपट कैसो हितु है ॥ २२ ॥

रोमावली औ उदरवर्णन ।

किधौं काम बागवान बोई है सिंगारबेलि सींचिकै बढ़ाई नाभी कूप मन मोहिये । किधौं हरिनैन खंजरीटन के खेलिबे की भूमि केशौदास नख पंकरेख सोहिये ॥ किधौं चलदल पर पियको कपट ज्वर टूटिबे को मंत्र लिखि लोचननि जोहिये । सुन्दर उदर शुभ सुन्दरीकी रोमराजी किधौं चित्तचातुरी की चोटी चारु सोहिये॥२३॥

कुचवर्णन । दोहा ।

चक्रवाक कुच बरणिये, केशव कमल प्रमान ।
शिवगिरि घट मठ गुच्छफल, शुभ इभकुंभ समान ॥ २४ ॥

कवित्त ।

किधौं मनोहर मणिहार द्युति सुर खेलैं यौवन कलभकुंभ शोभन दरस हैं । मोहनी के मठ किधौं इंदिराके मन्दिर कि इंदीवर इंदुमुखी सौरभ सरस हैं ॥ आनँदके कन्द किधौं अंग द्वै अनंगहीके बाढ़त जु केशौदास बरसबरस हैं । एरी वृषभानुकी कुमारी तेरे कुच किधौं रूप अनुरूप जातरूप के करस हैं ॥ २५ ॥

कर भुज [illegible]वर्णन । दोहा ।

कर पंकज [illegible], भुज बिसलता सुपास ।
रत्न [illegible] [illegible] सम, नख रुचि केशवदास ॥ २६ ॥

[illegible] ।

केशौदास गोरे गोरे गोल काम शूलहर भामिनीके भुजमूल

रोमावली औ उदरवर्णन।

किधौं काम बागवान बोई है सिंगारबेलि सींचिकै बढ़ाई नाभी कूप मन मोहिये। किधौं हरिनैन खंजरीटन के खेलिबे की भूमि केशौदास नख पंकरेख सोहिये॥ किधौं चलदल पर पियको कपट ज्वर टूटिबे को मंत्र लिखि लोचननि जोहिये। सुन्दर उदर शुभ सुन्दरीकी रोमराजी किधौं चित्तचातुरी की चोटी चारु सोहिये॥२३॥

कुचवर्णन। दोहा।

चक्रवाक कुच बरणिये, केशव कमल प्रमान।
शिवगिरि घट मठ गुच्छफल, शुभ इभकुंभ समान॥ २४॥

कवित्त।

किधौं मनोहर मणिहार द्युति सुर खेलैं यौवन कलभकुंभ शोभन दरस हैं। मोहनी के मठ किधौं इंदिराके मन्दिर कि इंदीवर इंदुमुखी सौरभ सरस हैं॥ आनँदके कन्द किधौं अंग द्वै अनंगहीके बाढ़त जु केशौदास बरसबरस हैं। एरी वृषभानुकी कुमारी तेरे कुच किधौं रूप अनुरूप जातरूप के करस हैं॥ २५॥

कर भुज [illegible]वर्णन। दोहा।

कर पंकज पल्लव [illegible], भुज बिसलता सुपास।
रत्न [illegible] [illegible] मय, नख रुचि केशवदास॥ २६॥

[illegible]।

केशौदास गोरे गोरे गोल काम शूलहर भामिनीके भुजमूल

रोमावली औ उदरवर्णन ।

किधौं काम बागवान बोई है सिंगारबेलि सींचिकै बढ़ाई नाभी कूप मन मोहिये । किधौं हरिनैन खंजरीटन के खेलिबे की भूमि केशौदास नख पंकरेख सोहिये ॥ किधौं चलदल पर पियको कपट ज्वर टूटिबे को मंत्र लिखि लोचननि जोहिये । सुन्दर उदर शुभ सुन्दरीकी रोमराजी किधौं चित्तचातुरी की चोटी चारु सोहिये ॥२३॥

कुचवर्णन । दोहा ।

चक्रवाक कुच बरणिये, केशव कमल प्रमान ।
शिवगिरि घट मठ गुच्छफल, शुभ इभकुंभ समान ॥ २४ ॥

कवित्त ।

किधौं मनोहर मणिहार द्युति सुर खेलैं यौवन कलभकुंभ शोभन दरस हैं । मोहनी के मठ किधौं इंदिराके मन्दिर कि इंदीवर इंदुमुखी सौरभ सरस हैं ॥ आनँदके कन्द किधौं अंग द्वै अनंगहीके बाढ़त जु केशौदास बरसबरस हैं । एरी वृषभानुकी कुमारी तेरे कुच किधौं रूप अनुरूप जातरूप के करस हैं ॥ २५ ॥

कर भुज मूलवर्णन । दोहा ।

कर पंकज पल्लव बरणि, भुज बिसलता सुपास ।
रत्न ताम्र कुंकुम सम, नख रुचि केशवदास ॥ २६ ॥

कवित्त ।

केशौदास गोरे गोरे गोल काम शूलहर भामिनीके भुजमूल

भाइँसे उतारे हैं । शोभा सुख वरसत माखन से परसत दरसत कंचनसे कठिन सुधारे हैं ॥ बलय बलित बाहु देखि रीझै हरि नाहु मानो मन पासिबेको पासी यों विचारे हैं । मलिन मृणाल मुख पंकमें दुराय दुख देखौ जाय छातिनमें छेद करिडारे हैं ॥ २७ ॥

करभूषणवर्णन ।

गजरा बिराजैं गजमोतिनके अतिनीके जिनकी अजीत ज्योति केशौदास गाई है । वलय बलित कर कंचन कलित मणि लाल की ललित पौंची पौंचन बनाई है ॥ सेत पीत हरित झलक झलकति लाल श्यामल सुमिल मेरे श्याम मन भाई है । मानो सूर सोमकी कलासकेलि आपनी औ आपनी सखीको सुखपाइ पहिराई है ॥ २८ ॥

नखांगुलीमुद्रिकावर्णन ।

गोरी गोरी आंगुरीनि रातेसे रुचिर नख और अति पैने पैन रचि रुचि कीने हैं । रतिजय लिखिबे की लेखनी सुरेख किधौं मीनरथ सारथी के नोदन नवीने हैं ॥ किधौं केशौदास पंचबाणजूके पंचबाण सकल भुवन जिन वश करि दीने हैं । कंचन कलित मणि मूंदरी ललित मानो पिय परिजन मन हाथ करिलीने हैं॥२९॥

मेहँदीसंयुक्त हाथवर्णन । दोहा ।

सब शोभा तिहुँ लोककी, राची मेहँदी साथ ।
तिहुँ पुरनायक तौ भये, तासु नायका हाथ ॥

सवैया ।

राधिका रूपनिधान के पानिन आनि मनो छिति की छबि छाई ।
दीह अदीह न सूक्षम थूल गही दृग गोरी की दौरि गोराई ॥
मिहँदी मय बिन्दु घने तिन में मनमोहन के मन मोहिनी लाई ।
इन्द्रवधू अरविन्द के मन्दिर इन्दिरा को मनु देखन आई ॥ ३० ॥

कंठ और पीठ वर्णन । दोहा ।

कंठ सुकंबु कपोत द्युति, केशवदास बखान ।
पीठ कनक की पट्टिका, जानत सकल सुजान ॥ ३१ ॥

कवित्त ।

सुर नर प्राकृत कवित्व रीति आरभटी सात्त्विकी सुभारती की भारतीयो भोरीकी । किधौं केशौदास कलगानता सुजानता निशंकता सों वचनविचित्रता किशोरीकी ॥ अंबुसांईकी सौं मोहै अम्बिकाऊ देखि देखि अंबुजनयन कंबुग्रीव गोल गोरीकी । वीणा वेणु पिक सुर शोभाकी त्रिरेख रुचि मन वच क्रमन कि पिय मन चोरीकी ३२ ॥

कंठभूषणवर्णन ।

लेति मोल लालको अमोल चित्त गोलग्रीव लोल नैन देखि देखि जात गर्व भागिकै । श्याम सेत पीत लाल कंबु कंठ कंठ-माल जाति नाहिंनै कही रही जु ज्योति जागिकै ॥ केशौदास

आसपास बासकै रहे मनो समेत रागिनीनि रागराज रंगरागिकै । सूरके निवास तें प्रकास सोमजू कस्यो अनेक भांतिकी किधौं रही मयूख लागिकै ॥ ३३ ॥

पीठवर्णन ।

केशव कुँवर देखी राधिका कुँवरि आजु सोवत सुभाय सेज जननी जनककी । बेनी में बनाय गुही काहू अली भांति भली कुन्दन की कली तन तनक तनककी ॥ पीठि में तिनकी प्रति मूरति बिलोकियत पूरत नयन युग सूरति बनककी । हरि मन मथिबेको मानो मनमथ लिखे रूपे के रुचिर अंक पट्टिका कनक की ॥ ३४ ॥

चिबुकवर्णन । दोहा ।

कज्जल मनिरस छीटि छबि, रदन राहु को आन ।
फोंक काम शर चिबुक को, श्यामल बिन्दु बखान ॥ ३५ ॥

कवित्त ।

शोभन शृंगार रसकी सी छीटि सोहै फोंक काम शर कीसी कहीं युगतानि जोरि जोरि । राहु कैसो रदन रह्यो है चुभि चन्द्रमाहिं तमी को सुहाग किधौं डास्यो तृन तोरि तोरि ॥ चतुर बिहारी जी को चित्त सो चिहुँटि रह्यो चितये ते केशौदास लेति चित चोरि चोरि । तनक चिबुकतिल तेरे पर मेरी सखी वारौं डारि तरुणी तिलोत्तमा सी कोरि कोरि ॥ ३६ ॥

अधर दांतवर्णन । दोहा ।

अधर बिम्ब पल्लव बरणि, प्रकट प्रवाल समान ।
मुक्ता दाड़िम कुन्द मणि, हीरा दशन प्रमान ॥ ३७ ॥

कवित्त ।

अधर अरुण अति सुबुधि सुधाके धर कोमल अमल दल द्युति छीनि लीनी है । केशव सुगन्ध मंद हासयुत कौन काम विद्रुम कठोर कटु बिम्ब मति हीनी है ॥ सूक्षम सुरेख अति सूधी मूधी सविशेष चतुर चतुरमुख रेखा रचि कीनी है । मानों मैन गुरु हरि नाहके नयन गति गनि गनि लेवे कहूं विद्या गनि दीनी है ॥ ३८ ॥

दशनवर्णन ।

सूक्षम सुवेष सुधी सुमन बतीसी मानों लक्षन बतीसहू की मूरति बिशेखिये । राती है रतीके रुचि सेत सब किधौं शशिमण्डल में सुरनकी सभा अवरेखिये ॥ किधौं पिय युगति अखंडता के खंडिबे को खंडन कै केशव तरककुल लेखिये । दीनी दूनी कला विधि तेरे मुखचन्दको सुन्यायही अकाशचन्द मन्द द्युति देखिये ॥ ३९ ॥ किधौं सातो मण्डलके मण्डन मयंक मधि बीजुरी के बीज सुधा सींचि कै उगाये हैं । किधौं अलबेली की चँबेली की चमक चौक किधौं कीर कमल में दाड़िम दुराये हैं ॥ किधौं मुकताहल महावर में राखे रंगि किधौं मणि मुकुर में सुघर सुहाये

अधर दांतवर्णन । दोहा ।

अधर बिम्ब पल्लव बरणि, प्रकट प्रवाल समान ।
मुक्ता दाड़िम कुन्द मणि, हीरा दशन प्रमान ॥ ३७ ॥

कवित्त ।

अधर अरुण अति सुबुधि सुधाके धर कोमल अमल दल द्युति छीनि लीनी है । केशव सुगन्ध मंद हासयुत कौन काम विद्रुम कठोर कटु बिम्ब मति हीनी है ॥ सूक्षम सुरेख अति सूधी सूधी सविशेष चतुर चतुरमुख रेखा रचि कीनी है । मानों मैन गुरु हरि नाहके नयन गति गनि गनि लेवे कहूं विद्या गनि दीनी है ॥ ३८ ॥

दशनवर्णन ।

सूक्षम सुवेष सुधी सुमन बतीसी मानों लक्षन बतीसहू की मूरति बिशेखिये । राती है रतीक रुचि सेत सब किधौं शशिमण्डल में सुरनकी सभा अवरेखिये ॥ किधौं पिय युगति अखंडता के खंडिबे को खंडन कै केशव तरककुल लेखिये । दीनी दूनी कला विधि तेरे मुखचन्दको सुन्यायही अकाशचन्द मन्द द्युति देखिये ॥ ३९ ॥ किधौं सातो मण्डलके मण्डन मयंक मधि बीजुरी के बीज सुधा सींचि कै उगाये हैं । किधौं अलबेली की चँबेली कीं चमक चौक किधौं कीर कमल में दाड़िम दुराये हैं ॥ किधौं मुकताहल महावर में राखे रंगि किधौं मणि मुकुर में सुघर सुहाये

हैं। केशौदास प्यारी के बदन में रदन छबि सोरह किरण काटि बत्तिस बनाये हैं ॥ ४० ॥

हासवर्णन। दोहा।

ज्योति जुन्हाई दामिनी, दीपति सुधा प्रकास।
महिमा मोहमरीचिका, रुचि मोहनी सुहास ॥ ४१ ॥

कवित्त।

किधौं मुखकमलमें कमलाकी जोति होति किधौं चारु मुख चंद्रचंद्रिका चुराई है। किधौं मृगलोचनि मरीचिका मरीचि कैधौं रूपकी रुचिर रुचि शुचिसों दुराई है ॥ सौरभ की शोभाकी दशन घनदामिनी की केशव चतुरचित ही की चतुराई है। एरी गोरी भोरी तेरी थोरी थोरी हांसी मेरी मोहन की मोहनी कि गिरा की गुराई है ॥ ४२ ॥

मुखवासवर्णन। दोहा।

मदनजीविका सुखजननि, मनमोहनीविलास।
निपट कृपानी कपटकी, रतिसुषमा मुखवास ॥ ४३ ॥

कवित्त।

किधौं भयों उदित अनंगजूको अंग उर सुरभित अंगराग दाहै देह दुखको। किधौं चित चातुरी चमेली चारु फूलि रही फैल्यो वास केशव प्रकासकर मुखको। किधौं परिमल प्रेम पूरणावतंस-निको किधौं बरबानी बनमाली के बपुषको। किधौं पाय प्राणपति

हृदयकमल फून्यो ताको बंध गंध कै सुगंध सुख मुख को ॥४४॥

मुखराग वर्णन। दोहा।

अरुणोदय राजीव में, अंगराग अनुराग।
रूपभूप रतिराज सो, राजत सुख मुखराग ॥ ४५ ॥

कवित्त।

केशौदास राग रागिनीनि को कि अंगराग किधौं द्विज सेवत हैं संध्या भली भोरकी। अरुन रदन बहु रतनकी खानि किधौं वहही झलक झलकति चहुँओरकी ॥ किधौं भाषा भूषन कि मणिनको चाक चक्य चोरे लेति चित्त चालि तेरे चितचोरकी। लागि रह्यो अनुराग किधौं नाह नैननिको किधौं रुचि राची तेरे तरुणी तमोरकी ॥ ४६ ॥

रसनावर्णन। दोहा।

रसना कोमल बरणिये, कोविद अमल अमोल।
केशव देवी रसनकी, रसहि स्रवत मृतबोल ॥ ४७ ॥

कवित्त।

देखतहीं आधापल बाधी जाति बाधा सब राधाजू की रसना सुरूप की सी रानी है। आछी आछी बातन की जननी जगमगात रसन की देवी किधौं पचि पहिचानी है ॥ केशौदास सकल सुवास कीसी सेज किधौं सकल सुजानता की सखी

सुखदानी है। किधौं मुखपंकज में शक्ति कौनो सेवैं द्विज सविता की छविता की कविता निधानी है ॥ ४८ ॥

वाणीवर्णन। दोहा।

वाणी वीणा वेणु अलि, शुक पिक किन्नर गान।
शोभत शुभ बहु अर्थमय, केशवदास बखान ॥ ४९ ॥

कवित्त।

कामकी दुहाई कै सुहाई सखी माधुरी कि इन्दिराके मन्दिर में झाई उपजति है। सुरनकी सुरी किधौं मोदहू की सोदरी कि चातुरी की मातु ऐसी बातनि सजति है ॥ राग राजधानी अनुरागनि की ठकुरानी मोहै दधिदानी केशौ कोकिला लजति है। एरी मेरी ब्रजरानी तेरी बरबानी किधौं बानीही की बीन सुख मुख मैं बजति है ॥ ५० ॥

कपोल नासिका वर्णन। दोहा।

मुकुर मधूक कपोल सम, केशवदास प्रमान।
तिल प्रसून तूणीर सम, शुकनासिका बखान ॥ ५१ ॥

कवित्त।

किधौं हरि मनोरथ रथकी सुपथ भूमि मीनरथ मनहू की गति न सकति छ्वै। किधौं रूप भूपतिकी आसन रुचिर रुचि मिली मृगलोचनि मरीचिका मरीचि है। किधौं श्रुतिकुण्डल मकर सर केशौदास चितयेतें चित चकचौंधिकै चलत च्वै। गोरे गोरे गोल

अति अमल अमोल तेरे लालित कपोल किधौं मैनके मुकुरद्वै ॥५२॥

नासिकावर्णन । कवित्त ।

केशव सुगन्ध श्वासासिद्धिनकी गुहा किधौं परम प्रसिद्ध शुभ शोभन सुवासिका । किधौं मनमथ मन मीनकी कुबेनी किधौं कुन्दन की सींव लोल लोचन विलासिका ॥ मुकुता मणिन की है मुकुतपुरी सी किधौं किधौं सुर सेवत हैं काशी की प्रकासिका । त्रिभुवनरूपता को तुंग तोयनिधि ताके तोय की तरंग कै तरणि तेरी नासिका ॥ ५३ ॥

नाकमोतीवर्णन । दोहा ।

केशव आनँद कंद फल, सुधा बूंद मकरंद ।
मन मतंग को दीप गनि, नकमोती जगवंद ॥ ५४ ॥

कवित्त ।

केशौदास सकल सुवास को निवास सखि किधौं अरविंदमाधि बिन्दु मकरंद को । किधौं चंद्रमंडल में शोभित असुरगुरु किधौं गोद चंदजूके खेलै सुतचंद को ॥ बाढ़ै रूप काम गुन दिन दूनो होत किधौं चंद फूल सूंघत है आनँद के कंद को । नाक नायिकानिहूं ते नीको नकमोती नाक मानो मन उरझि रह्यो है नँदनंद को ॥५५॥

लोचनवर्णन । दोहा ।

लोचन चारु चकोर सम, चातक मीन तुरंग ।
अंजन युत आलि कामसर, खंजन कंज कुरंग ॥ ५६ ॥

कवित्त।

पियमनदूत किधौं प्रेमरथसूत किधौं भँवरअभूत वपु वास के सुरंग हैं। चितवत चहूं ओर प्रीतम के चित्त चोर चंद के चकोर किधौं केशव कुरंग हैं॥ बाण मदभंजन कै खेलिबे के खंजन कि रंजन कुँवर कामदेव के तुरंग हैं। शोभासर लीन मीन कुवलयरस भीन नलिन नवीन किधौं नैन बहुरंग हैं॥ ५७॥

अंजनवर्णन। दोहा।

विष सिंगार रस तूल तम, पूरे पातक लाज।
मनरंजन अंजन सबै, बरणत हैं कविराज॥ ५८॥

कवित्त।

किधौं रसराज रस रसित असित किधौं ललित विशिख विष वलित सुभाल के। किधौं जग जीतिबे को राजा रतिनाथ हाथ बाहन बनाये केशौदास चल चाल के॥ ब्रत घात पातक किं चित चोरिबे को तम देखिबे को नंदलाल लालि करै कालके। लागि रही लोक लाज खंजन नयनि किधौं पिय मन रंजन कि अंजन हैं बाल के॥ ५९॥

भृकुटीवर्णन। दोहा।

भृकुटी कुटिल लता धनुष, रेखा खड्ग अनूप।
केशवदास सुपाश सम, बरण श्रवण करि कूप॥ ६०॥

कवित्त ।

किधौं लागी पंकज के अंक पंकलीक किधौं केशव मयंक अंक अंकित सुभाय को । यंत्र है सुहाग को कि मंत्र अनुराग को कि मंत्रनिको बीज अध ऊरध अभाय को ॥ आसन सिंगार को कि काम को शरासन है शासन लिखो है प्रेम पूरन प्रभाय को । रोष रुख वेष विष पियूषमविशेष मैं भामिनी की भौंहैं किधौं भौन हायभाय को ॥ ६१ ॥

श्रवणवर्णन । दोहा ।

राग रवन भाजन भवन, शोभन श्रवण पवित्र ।
केशव लोचन लाज के, मन के मंत्री मित्र ॥ ६२ ॥

कवित्त ।

रागनि के आगर विराग के विभागकर मंत्र के भँडार गूढ़रूढ़ के रवन हैं । ज्ञान के विवर किधौं तनक तनक तन कनक कचोरी हरिरस अचवन हैं ॥ श्रुतिन के कूप किधौं मन के सुमित्र रूप किधौं केशौदास रूपभूप के भवन हैं । लाज के नयन किधौं नयन सचिव किधौं नयन कटाक्ष शर लक्ष्य के श्रवन हैं ॥ ६३ ॥

कर्णफूल ताटंकवर्णन । दोहा ।

मणि मणिमय ताटंक युग, लसित लक्ष्य परिमान ।
तरुण तरणि चल चक्र से, केशव कुसुम समान ॥ ६४ ॥

कवित्त ।

पहिरे करणफूल देखी है कुमारी एक सुनहु कुँवर कान्ह शोभै सुखदानिये । तिनके तनकी जोति जीते जोतिवत सब केशव अनंत गति कैसे उर आनिये ॥ मानो कामदेव वामदेव जूके वैर काम साधै शरसाधनानि लक्ष्य उर मानिये । दुहुं दिशि दुहूँ भुज भृकुटी कमान तानि नयन कटाक्ष बान बेधत न जानिये ॥ ६५ ॥

कर्णभूषण खोटिलादि वर्णन । दोहा ।

चलदलदल सी तीतरी, जनु पताक सम मीन ।
सरस करस आकाश के, शोभत दीप नवीन ॥ ६६ ॥

कवित्त ।

खुटिला खचित मणि सोहत बनक बनि कनककरस रुचि रुचिर स्रवन हैं । तनक तनक तन तीतरी तरल गति मानहु पताका पीत पीड़ित पवन हैं ॥ कालिंदी के कूल कूल जात जल कोलि कहँ कालिही सराहैं मेरे काली के दमन हैं । केशौदास सुन्दर श्रवण ब्रज सुन्दरी के मानों मन भावते के भावत भवन हैं ॥ ६७ ॥

ललाटवर्णन । दोहा ।

कनक पट्टिका सम कहौं, केशव ललित लिलारु ।
शोभन शोभा की सभा, अर्ध चंद्रमा चारु ॥ ६८

कवित्त ।

केशव अशोक किधौं सुन्दर सिंगार लोक कनक केदार किधौं आनंद के कन्द को । शोभा को सुभाव किधौं प्रभा को प्रभाव देखि मोहे हरिराव सखी नन्दन सुनन्द को ॥ चमकत चारु रुचि गंगा को पुलिन किधौं चकचौंधै चित मति मन्दहू अमन्द को । सेज है सुहाग की कि भाग की सभा सुभाग भामिनी को भाल किधौं भाग चारु चन्द को ॥ ६९ ॥

अलकवर्णन । दोहा ।

अलक चिलक सों बरणिये, श्यामल अमल सुपास ।
अति चंचल अति चारु अति, सूक्षम केशवदास ॥ ७० ॥
डोर डार डग डीठि गुन, तमप्रिय यमुना जान ।
छाया माया काम की, काया कुशल बखान ॥ ७१ ॥

कवित्त ।

केशव कसा है कि अनंग की सुरङ्ग भूमि लोचन कुरंगन की चाल हटकति है । पिय मन पासिबे को पासीसी पसारी किधौं किधौं उपमाकी मेरी मति भटकति है ॥ तरणितनूजा खेलैं तारानाथ साथ किधौं हाथ परी तमकी तरुणि मटकति है । सुनि लोल लोचनि नवल निधि नेहनि की अलकैं कि अलिक अलक लटकति है ॥ ७२ ॥

मुखमंडलवर्णन । दोहा ।

अमल मुकुर सो बरणिये, कोमल कमल समान ।
अकलंकित मुख बरणिये, चारु चन्द परिमान ॥ ७३ ॥

कवित्त ।

ग्रहनि में कीनो गेह सुरनि दै देख्यो देह शिव सों कियो सनेह जाग्यो युग चार्यो है । तपन में तप्यो तप जलधि में जप्यो जप केशवदास वपु मास मास प्रति गार्यो है ॥ उडुगनईश द्विज ईश औषधीष भयो यदपि जगत ईश सुधा सों सुधार्यो है । सुनि नँदनंदप्यारी तेरे मुखचंद सम चंद पै न भयो कोटि छंद करि हार्यो है ॥ ७४ ॥

केशपाशवर्णन । दोहा ।

भौंर चौंर से बाल तम, यमुना को जल मेह ।
मोरपक्ष सम बरणिये, केशव सहित सनेह ॥ ७५ ॥

कवित्त ।

कोमल अमल चल चीकने चिकुर चारु चितयेते चित चकचौंधियत केशवदास । सुनहु छबीली राधा छूटे ते छुवै छवानि कारे सटकारे हैं सुभावहीं सदा सुवास ॥ सुनि कै प्रकास उपहास निशि वासर को कीनो है सुकेशव सुवास जाय कै अकास । यद्यपि अनेक चन्द्र साथ मोरपक्ष तऊ जीत्यो एक चंद्रमुख तेरे केशपास ॥ ७६ ॥

कवित्त ।

केशव अशोक किधौं सुन्दर सिंगार लोक कनक केदार किधौं आनंद के कन्द को । शोभा को सुभाव किधौं प्रभा को प्रभाव देखि मोहे हरिराव सखी नन्दन सुनन्द को ॥ चमकत चारु रुचि गंगा को पुलिन किधौं चकचौंधै चित मति मन्दहू अमन्द को । सेज है सुहाग की कि भाग की सभा सुभाग भामिनी को भाल किधौं भाग चारु चन्द को ॥ ६९ ॥

अलकवर्णन । दोहा ।

अलक चिलक सों बरणिये, श्यामल अमल सुपास ।
अति चंचल अति चारु अति, सूक्षम केशवदास ॥ ७० ॥
डोर डार डग डीठि गुन, तमत्रिय यमुना जान ।
छाया माया काम की, काया कुशल बखान ॥ ७१ ॥

कवित्त ।

केशव कसा है कि अनंग की सुरङ्ग भूमि लोचन कुरंगन की चाल हटकति है । पिय मन पासिबे को पासीसी पसारी किधौं किधौं उपमाकी मेरी मति भटकति है ॥ तरणितनूजा खेलैं तारानाथ साथ किधौं हाथ परी तमकी तरुणि मटकति है । सुनि लोल लोचनि नवल निधि नेहनि की अलकैं कि अलिक अलक लटकति है ॥ ७२ ॥

मुखमंडलवर्णन । दोहा ।

अमल मुकुर सो वरणिये, कोमल कमल समान ।
अकलंकित मुख वरणिये, चारु चन्द परिमान ॥ ७३ ॥

कवित्त ।

ग्रहनि में कीनो गेह सुरनि दै देख्यो देह शिव सों कियो सनेह जाग्यो युग चास्यो है । तपन में तप्यो तप जलधि में जप्यो जप केशवदास वपु मास मास प्रति गास्यो है ॥ उडुगनईश द्विज ईश औषधीष भयो यदपि जगत ईश सुधा सों सुधास्यो है । सुनि नँदनंदप्यारी तेरे मुखचंद सम चंद पै न भयो कोटि छंद करि हास्यो है ॥ ७४ ॥

केशपाशवर्णन । दोहा ।

भौंर चौंर से वाल तम, यमुना को जल मेह ।
मोरपक्ष सम वरणिये, केशव सहित सनेह ॥ ७५ ॥

कवित्त ।

कोमल अमल चल चीकने चिकुर चारु चितयेते चित चकचौंधियत केशवदास । सुनहु छबीली राधा छूटे ते छुवै छवानि कारे सटकारे हैं सुभावहीं सदा सुवास ॥ सुनि कै प्रकास उपहास निशि वासर को कीनो है सुकेशव सुवास जाय कै अकास । यद्यपि अनेक छन्द साथ मोरपक्ष तऊ जीत्यो एक चंद्रमुख छन तेरे केशपास ॥ ७६ ॥

वेणीवर्णन । दोहा ।

एसी बेणी बरणिये, केशवदास बनाय ।
असि निशि यमुनाधार अहि, अलिअवली सुखपाय ॥ ७७ ॥

कवित्त ।

चंदन चढ़ाय चारु कुंकुम लगाय पीछे किधौं निशिनाथ निशि नेहसौं दुराई है । किधौं बंदी बन्दन छिरकि क्षीर सांपिन सी अलिअवली समीप सुधा सुध आई है ॥ केशवदास हासरस मिलि अनुरागरस सरस सिंगाररस धाराधर आई है । मेलि मालतीकी माल लाल डोरी गोरी गुहे बेणी पिक बेणी की त्रि-बेणी सी बनाई है ॥ ७८ ॥

बेंदीवर्णन । दोहा ।

वेंदी बर्णत सकल कवि, केशव लालित लिलार ।
भाग सुहाग नरेश सम, रवि शशि उदित उदार ॥ ७९ ॥

शिरभूषणवर्णन । दोहा ।

मांगफूल शिरफूल शुभ, बेणी फूल बनाव ।
रूपभूप जगज्योति जनु, सूरज प्रकट प्रभाव ॥ ८० ॥
मोतिन की लर शीशपर, शोभित है इहि भांति ।
चारु चन्द्रमा की चमू, घन मराल की पांति ॥ ८१ ॥

कवित्त ।

बेनी पिकबेनीकी त्रिबेनी सी बनाय गुही कंचन कुसुम रुचि

लोचननि पोहिये । केशवदास फैलि रही फूल शीशफूलद्युति फूल्यो तन मन मेरो न्याय हरि मोहिये ॥ वेंदी जगमगत जराय जर्‍यो ताकी ज्योति जीत्यो है अजीत उपमा न आन टोहिये । मानों इन पांवड़ेन पांव धरे आय दोऊ सोहत सुहाग शिरभाग भाल सोहिये ॥ ८२ ॥

अंगवासवर्णन । दोहा ।

सहज सुवास शरीरकी, आकर्षण विधि जानि ।
अति अदृष्ट गति दूतिका, इष्टदेवता मानि ॥ ८३ ॥

कवित्त ।

कमलवदन कर नयन चरन कुच पूरन कुरंग मद दृगनि वि-लासहै । भृकुटीकुटिल कचमेचक सुगंधमय कुंदकलिका से दंत चन्दन सो हासहै ॥ कुंकुम शरीर कुसकुसानि को स्वेद नीर अम्बर को केशवदास अम्बर विकासहै । मन कर्षण विधि किधौं इष्ट-देवता अदृष्टगति दूतिका कि सहज सुवासहै ॥ ८४ ॥

वसनवर्णन । दोहा ।

वसन सहेली सिद्धसम, काया माया हाव ।
शोभा सुभग सुहाग अति, लाज साज के भाव ॥ ८५ ॥

कवित्त ।

किधौं यह केशव शृंगारकीहै सिद्धि किधौं भागकी सहेली कै सुहागको सुहाव है । लाख लाख भांतिन के प्रीतिही की अभि-

लाष पहिरे बनाय किधौं शोभाको सुभाव है ॥ योवनकी जाया किधौं माया मनमोहिबेकी काया किधौं लाजकी कि लाजही को आव है । सारी जरकसी जगमगत शरीर किधौं भूषण जरावही की ज्योति को जराव है ॥ ८६ ॥

सर्वांगवर्णन रसिकप्रियायां । कवित्त ।

चंद्र कैसो भाग भाल भृकुटी कमान ऐसी मैन कैसे पैनेशर नैननि विलासहैं । नासिका सरोज गंधवाहसे सुगंधबाह दारयो से दशन केशौ बीजुरी सो हासहै ॥ भाई ऐसी ग्रीव भुज पान सो उदर अरु पंकज से पांय गति हंस कीसी जासहै । देखी है गुपाल एक गोपिका मैं देवता सी सोने सो शरीर सब सोंधे कीसी वासहै ॥ ८७ ॥

सर्वभूषणवर्णन । कवित्त ।

बिछिया अनौट बांके घूंघुरू जराय जरी जेहरि छबीली छुद्र-घंटिका की जालिका । मूंदरी उदार पौंची कंकन वलय चूरी कंठ कंठमाल हार पहिरे गुपालिका ॥ वेणी फूल शीशफूल कर्णफूल मांग फूल खुटिला तिलक नकमोती सोहै बालिका । केशवदास नील वास ज्योति जगमगिरही देह धरे श्यामसंग मानो दीप-मालिका ॥ ८८ ॥

अंगदीप्तिवर्णन । दोहा ।

कंचन केसर केतकी, चपला चंपक चारु ।

कमल कोस गोरोचना, तिय तनद्युति अवतारु ॥ ८९ ॥

सवैया ।

राधाके अंगगोराई सी और गोराई विरंचि बनावन लीनी ।
कै सतबुद्धि विवेकसों एक अनेक विचारनिमें दृग दीनी ॥
बानिक तैसी बनी न बनावत केशव प्रत्युत ह्वै गई हीनी ।
लैतब केसरि केतकि कंचन चंपक केदलि दामिनि कीनी ॥ ९० ॥

गतिवर्णन । दोहा ।

राजहंस कलहंस सम, अति गति मन्द विलास ।
महा मत्त गजराज सी, वरणहुँ केशवदास ॥ ९१ ॥

कवित्त ।

किधौं गजराजनिको राजतहै अंकुशसी चरणविलासनि को आरस सजतिहै । बलित अनंतगति ललित शृंगारबेलि फूले हाव भाव फल फलनि फलतिहै ॥ किधौं कलहंसनि की शंका सक केशौदास किधौं राजहंसिनी की लाजसी लगतिहै । किधौं नंदलाल लोल लोचन की शृंखला कि तेरी लोल लोचनि अलोल अंगगति है ॥ ९२ ॥

संपूर्णमूर्तिवर्णन । दोहा ।

चंद्रकला उड़दामिनी, कनक शलाका लेखि ।
दीपशिखा ओषधिलता, माला बाला देखि ॥ ९३ ॥

सवैया ।

तारा सी कान्ह तरायन संग औ चंद्रकला निशि चंद्रकला सी ।
दामिनि सी घनश्याम समीप लगै तनश्याम तमाललता सी ॥
आधि की औषधि सी कहि केशव काम के धाम में दीपशिखा सी ।
सोने की सींक सी दूरभये ते लसै उरमें उरहार प्रभा सी ॥ ९४ ॥

छप्पै ।

महि मोहन मोहिनीरूप महिमा रुचि रूरी ।
मदनमंत्र की सिद्धि प्रेम की पद्धति पूरी ॥
जीवनमूरि विचित्र किधौं जग जीव मित्रकी ।
किधौं चित्तकीवृत्ति भृत्ति अभिलाष चित्तकी ॥
कहि केशव परमानंद की आनँदशक्ति किधौं धरणि ।
आधाररूप भवधरन को राधा हरिबाधा हरणि ॥ ९५ ॥

दोहा ।

इहि विधि विधि वरणहुँ सकल, कवि अविरल छविअंग ।
कही यथामति वरणि कवि, केशव पाय प्रसंग ॥ ९६ ॥

इति श्रीमद्विविधभूषणभूषितायां कविप्रियायां नखशिख-
वर्णनंनाम चतुर्दशः प्रभावः ॥ १४ ॥

अथ जमकालंकारवर्णन । दोहा ।

अव्ययेत सव्ययेत अरु, जमक वरणि दुहुँदेत ।
अव्ययेत बिन अंतरहि, अंतर को सव्ययेत ॥ १ ॥

आदि जमक। दोहा।

सजनी सज नीरद निरषि, हरषि नचत इत मोर।
पीउ पीउ चातक रटत, चितवहु पियकी ओर ॥ २ ॥

मध्यम पद जमक। दोहा।

मान करत सखि कौनसों, हरि तूं हरितूं आहि।
मान भेद को मूल है, ताहिं देखि चित चाहि ॥ ३ ॥

तृतीय पद जमक। दोहा।

शोभा शोभित अंगननि, हय हींसत हयसार।
बारन बार न गुंजरत, बिन दीने संसार ॥ ४ ॥

चतुर्थ पद जमक। दोहा।

राधा केशव कुँवर की, बाधा हरहु प्रवीन।
नेकु सुनावहु करि कृपा, शोभन बीन नवीन ॥ ५ ॥

आद्यंत जमक। दोहा।

हरिके हरि केवल मनहिं, सुनि वृषभानुकुमारि।
गावहु कोमलगीत द्वै, सुख करता करतारि ॥ ६ ॥

द्विपद जमक। दोहा।

अलिनी अलि नीरज बसे, प्रति तरुवरनि विहंग।
है मनमथ मनमथन हरि, बसै राधिका संग ॥ ७ ॥

त्रिपद जमक। दोहा।

सारस सारसनैन सुनि, चन्द्र चन्द्रमुखि देखि।

तू रमणी रमणीयतर, तिनते हरिमुख लेखि ॥ ८ ॥

पादान्तपादादि जमक । दोहा ।

आप मनावत प्राणपिय, मानिनि मान निहार ।
परम सुजान सुजान हरि, अपने चित्त विचार ॥ ९ ॥

द्विपादांत जमक । दोहा ।

जिन हरि जगको मन हर्यो, बाम बामदृग चाहि ।
मनसा वाचा कर्मणा, हरि बनिता बनि ताहि ॥ १० ॥

उत्तरार्द्ध जमक । दोहा ।

आजु छबीली छबि बनी, छांड़ि छलिन के संग ।
तरुनि तरुनि के तर मिलौ, केशव के सब अंग ॥ ११ ॥

त्रिपाद जमक । दोहा ।

देखि प्रबाल प्रबाल हरि, मन मनमथरस भीन ।
खेलन वह सुन्दरि गई, गिरि सुन्दरी दरीन ॥ १२ ॥

दोहा ।

परमानद पर मानदहि, देखति बन उतकण्ठ ।
यह अबला अब लागिहै, मन हरि हरि के कण्ठ ॥ १३ ॥
जूझि गयो संग्राम में, सूर जु सूरजु देखि ।
दिवरमणी रमणीय करि, मूरति रति सम लेखि ॥ १४ ॥

चारिहु चरणमें जमक । दोहा ।

नहीं उरबसी उर बसी, मदन मद न बस भक्त ।

सुरतरवर तर वर तजै, नंदनंद आसक्त ॥ १५ ॥

इति अव्ययेत । दोहा ।

अव्ययेत जमकनि सदा, बरणहु इहिविधिजान ।
करों व्ययेत विकल्पना, जमकनिकी सुखदान ॥ १६ ॥

अथ सव्ययेत । दोहा ।

माधव सो धव राधिका, पावहु कान्हकुमार ।
पूजौ माधव नियम सों, गिरिजा को भरतार ॥ १७ ॥

आदिअन्त जमक । दोहा ।

सीयस्वयम्बर मांझ जिन, बनितन देखे राम ।
ता दिनतें उन सखिन सुख, तजे स्वयम्बर धाम ॥ १८ ॥

अथ पादांत निरन्तर जमक । दोहा ।

पाप नशत यों कहतही, रामचन्द्र अवनीप ।
नीप प्रफुल्लित देखि त्यों, विरही विरह समीप ॥ १९ ॥

शान्तरस । दोहा ।

जैसे छुवे न चन्द्रमा, कमलाकर सविलास ।
तैसेही सब साधुवर, कमला करन उदास ॥ २० ॥

आद्यंतर जमक । दोहा ।

परम तन्वि यों शोभियत, परमईशअरधंग ।
कल्पलता जैसी लसै, कल्पवृक्ष के संग ॥ २१ ॥

त्रिपादादि जमक । दोहा ।

दान देत यों शोभियत, दीन नरनि के हाथ ।
दान सहित यों राजहीं, मत्तगजनि के साथ ॥ २२ ॥

चतुष्पदादि जमक । दोहा ।

नरलोकहि राखत सदा, नरपति श्री रघुनाथ ।
नरक निवारण नाम जग, नर वानर को नाथ ॥ २३ ॥

सुखकर जमक । दोहा ।

सुखकर दुखकर भेद द्वै, सुखकर बरणे जान ।
जमक सुनो कविराय अब, दुखकर करौं बखान ॥ २४ ।

अथ दुखकर जमक । दोहा ।

मानसरोवर आपने, मानस मानस चाहि ।
मानस हरिके मीत को, मानस बरणेताहि ॥ २५ ॥

दोहा ।

बरणी बरणी जातक्यों, सुनि धरणीकेईश ।
रामदेव नरदेव मणि, देव देव जगदीश ॥ २६ ॥

दोहा ।

राजराज सँग ईशाद्विज, राजराज सनमान ।
विषविषधर अरु सुरसरी, विष विषमन उर आन ॥ २७ ॥

प्रमानिका छन्द ।

प्रमान मान ना चही, अमान मान राचही ।

समान मान पावही, विमान मान धावही ॥ २८ ॥

दोहा ।

कुमतिहारि संहारि हठ, हितहारिनी प्रहारि ।
कहा रिसात विहारि वन, हरि मन हारि निहारि ॥ २९ ॥

चौपाई ।

सुरतरवर में रंभा बनी, सुरत रव रमें रंभा बनी ।
सुरतरंगिनी करि किन्नरी, सुरत रंगिनी करि किन्नरी ॥ ३० ॥

दोहा ।

श्रीकंठ उर वासुकि लसत, सर्वमंगलामार ।
श्रीकंठ उर वासुकि लसत, सर्व मंगलामार ॥ ३१ ॥

सवैया ।

दूषण दूषण के यश भूषण भूषणअंगनि केशव सोहै ।
ज्ञान सपूरण पूरणके परिपूरण भावनि पूरण जोहै ॥
श्री परमानँद की परमा परमानँद की परमा कहि कोहै ।
पातुरसी तुरसी मतिको अवदात रसी तुलसीपति मोहै ॥ ३२ ॥

अनुप्रास छन्द ।

जो तू सखि न कहै कछु चालहि, तौहौं कहूँ इकबात रसालहि ।
तो कहुँ देहुँ बनी बनमालहि, मोकहँ तू मिलवै नँदलालहि ॥ ३३ ॥

पुनः ।

जैसे रचै जय श्री करवालहि । ज्यों अलिनी जलजात रसालहि ॥

ज्यों वरषा हरषै बिन कालहि । त्यों दृग देखन चहत गुपालहि ॥ ३४ ॥

सवैया ।

स्यंदन हांकत होत दुखी दिन दूरि करै सबके दुखदंदन ।
छंदनि जानी नहीं जिनकी गति नाम कहावत हैं नँदनंदन ।
फंदनपंडुके पूतनिकी मति काटि करै मनमोह निकंदन ।
चंदनचेरीके अंग चढ़ावत देव अदेव कहैं जगबंदन ॥ ३५ ॥

दोहा ।

इहिविधि औरहु जानिये, दुखकर जमक अनेक ।
बरणत चित्रकवित्त अब, सुनियो सहित विवेक ॥ ३६ ॥

इति श्रीमद्विविधभूषणभूषितायां कविप्रियायां जमकअलंकारवर्णनंनाम पंचदशः प्रभावः ॥ १५ ॥

अथ चित्रअलंकारवर्णन । दोहा ।

केशव चित्र समुद्रमें, बूड़त परम विचित्र ।
ताके बुंदक के कणहि, बरणतहौं सुनु मित्र ॥ १ ॥

दोहा ।

अधऊरध बिन बिंदुयुत, जति रसहीन अपार ।
बधिर अंध गन अगन को, कीजत अँगन विचार ॥ २ ॥

दोहा ।

केशव चित्रकवित्त में, इनके दोष न देख ।
अक्षर मोटो पातरो, बव जय एको लेख ॥ ३ ॥

दोहा ।

अतिरति मतिगति एककर, बहु विवेक युताचित्त ।
ज्यों न होय क्रमभंग त्यों, बरनो चित्रकवित्त ॥ ४ ॥

अथ निरोष्ठ । दोहा ।

पढ़त न लागै अधर सों, अधर वरण त्यों मंडि ।
और वर्ण बरणौं सबै, इक पवर्ग को छंडि ॥ ५ ॥

कवित्त ।

लोकलीक नीक लाज लीलित से नंदलाल लोचन ललित लोल लीला के निकेतहैं । सोहनको शोच ना सकोच लोक लोकन को देत सुख ताको सखी दूनो दुख देतहैं ॥ केशौदास कान्हर कनेरही के कोर कसे अंगरंग रातेरंग अंग अति सेतहैं । देखिदेखि हरिकी हरिनता हरिननैनी देखतहीं देखो नाहीं हियो हरिलेतहैं ॥ ६ ॥

मात्रारहित । दोहा ।

एकैसुर जहँ बरणिये, अद्भुतरूप अवर्ण ।
कहिये मात्रारहित जहँ, मित्र चित्र आभर्ण ॥ ७ ॥
मात्राराहित एकस्वर चित्र इति ॥ ७ ॥

कवित्त ।

जग जगमगत भगतजन रसबस भवभय हर कर करत अचर चर । कनक बसन तन असन अनल बड़ वटदल बसन सजल थलथल कर ॥ अजर अमर अज बरद चरनधर परम धरम गन

वरन शरन पर । अमल कमल बर बदन सदन जस हरनमदन-
मद मदनकदन हर ॥ ८ ॥

एकाक्षरनाम । दोहा ।

एकादिक दै वर्ण बहु, वर्णो शब्द बनाय ।
अपने अपने बुद्धिबल, समुझत सब कविराय ॥ ९ ॥

दोहा ।

गो० गो० गं० गो० गी० अ० आ०, श्री० धी० ही० भी० भा०
नु० । भू० त्रि० ष० स्व० ज्ञा० द्यौ० हि० हा०, नौ० ना० सं०
भं० मा० नु० ॥ १० ॥

द्वै अक्षर । दोहा ।

रमा० उमा० बानी० सदा०, हरि० हर० विधि० सँग० वाम० ।
क्षमा० दया० सीता० सती०, वाकी० रामा० राम ॥ ११ ॥

त्रय अक्षर । दोहा ।

श्रीधर० भूधर० केसिहा०, केशव० जगत० प्रमाण० ।
माधव० राघव० कंसहा०, पूरन० पुरुष० पुराण० ॥ १२ ॥

चतुरक्षर । कवित्त ।

सीतानाथ सेतुनाथ सत्यनाथ रघुनाथ यदुनाथ ब्रजनाथ
दीनानाथ देवगति । देव देवपक्ष देव विश्वदेव बासुदेव बसुदेव
दिव्यदेव दक्षदेव दीनरति ॥ नरवीर रघुवीर यदुवीर ब्रजवीर
बलवीर वीरवीर रामचन्द्र चारुमति । राजपति रामापति

रमापति राधापति रसपति रासपति रसापति रामपति ॥ १३ ॥

अथ षड्विंशति अक्षरादि एकाक्षरांतवर्णन । दोहा ।

अक्षर षटबिंसति सबै, भाषा वर्णि बनाव ।
एकएक घटि एक लगि, केशवदास सुनाव ॥ १४ ॥

दोहा ।

चोरीमाखन दूध घ्यो, ढूंढ़त हठ गोपाल ।
डरो न जल थल भटकि फिरि, झगरत छवि सों लाल ॥ १५ ॥

अथ पचीस अक्षर । दोहा ।

चेरी चंदन हाथ को, रीझ चढ़ायो गात ।
विह्वलक्षितिधर डिंभशिशु, फूले वपुष नमात ॥ १६ ॥

चौबीस अक्षर । दोहा ।

अघ बक शकट प्रलंब हनि, मार्यो गज चाणूर ।
धनुषभंजि दृढ़दौरि पुनि, कंसमथ्यो मद मूर ॥ १७ ॥

अथ तेईस अक्षर । दोहा ।

सूधी यशुमति नंद पुनि, भोरे गोकुलनाथ ।
माखनचोरी झूठ हठ, पढ़े कौन के साथ ॥ १८ ॥

अथ बाईस अक्षर । दोहा ।

हरि दृढ़ बल गोविंद विभु, मायक सीतानाथ ।
लोकप विट्ठल शंखधर, गरुड़ध्वज रघुनाथ ॥ १९ ॥

अथ इकईस अक्षर । दोहा ।

जैसे तुम सब जग रच्यो, दियो कालके हाथ ।
तैसे अब दुख काटिये, करमफंद दृढ़ नाथ ॥ २० ॥

अथ बीस अक्षर । दोहा ।

थके जगत समुझाय सब, निपट पुराण पुकारि ।
मेरे मनमें चुभिरहे, मधुमर्दन मुरहारि ॥ २१ ॥

उनईस अक्षर । दोहा ।

कोजानै को कहिगयो, राधा सों यह बात ।
करी जु माखनचोरिबालि, उठत बड़े परभात ॥ २२ ॥

अठारह अक्षर । दोहा ।

यतन जमायो नेहतरु, फूलत नंदकुमार ।
खंडत कंस कत जान अब, कपट कठोर कुठार ॥ २३ ॥

सत्रह अक्षर । दोहा ।

बालापन गोरस हरे, बड़े भये जिमिचित्त ।
तिमि केशव हरि देहहू, जो न मिलो तुम मित्त ॥ २४ ॥

सोरह अक्षर । दोहा ।

तुम घरघर मड़रात अति, बलिभुक से नँदलाल ।
जाकी मति तुमहीं लगी, कहा करै वह बाल ॥ २५ ॥

पंद्रह अक्षर । दोहा ।

जो काहूपै वह सुनै, ढूंढ़त डोलत सांझ ।

तौ सिगरो ब्रज डूबिहै, वाके असुवन मांझ ॥ २६ ॥

चौदह अक्षर । दोहा ।

हूका ढाकी दिनकरौ, टकाटकी अरु रैनि ।
यामें केशव कौन सुख, घरुकरैंपिकबैनि ॥ २७ ॥

तेरह अक्षर । दोहा ।

कह्यो और को मैं सुन्यों, मन दीनो हरिहाथ ।
वा दिनतें बनमें फिरै, को जानै किहि साथ ॥ २८ ॥

बारह अक्षर । दोहा ।

काहू बैरिन के कहे, जी जुरि गयो सनेहु ।
तोरेते टूटै नहीं, कहा करौं अबलेहु ॥ २९ ॥

ग्यारह अक्षर । दोहा ।

केशव सोहैं कालकी, बिसरी गोकुल राज ।
मुख देखो लै मुकुरकर, करी कलेवा लाज ॥ ३० ॥

दश अक्षर । दोहा ।

लै ताके मनमानिकहि, कत काहूपै जात ।
जब कोऊ जिय जानिहै, तब कैहै कह बात ॥ ३१ ॥

नव अक्षर । दोहा ।

चुंबनि चुँगै अँगारगन, जाको कर जियजोर ।
सोऊ जो जारै हिये, कैसे जियै चकोर ॥ ३२ ॥

आठ अक्षर। दोहा।

नैननि नैवहु नेकहू, कमलनैन नवनाथ।
बालन के मनमोहिलै, बेचे मनमथ हाथ॥ ३३॥

सात अक्षर। दोहा।

राम काम सबशिव करे, विबुध काम सब साधि।
राम काम बरबस करे, केशव श्री आराधि॥ ३४॥

षट् अक्षर। दोहा।

काम नाहिंनै कामके, सब मोहनके काम।
वश कीनो मन सबनको, का वामा का वाम॥ ३५॥

पंच अक्षर। दोहा।

कमलनैन के नैनसे, नैन न कौनो काम।
कौन कौनसो नेमकै, मिले न श्याम सकाम॥ ३६॥

चारि अक्षर। दोहा।

बनमाली बनमें मिले, बनी नलिन बनमाल।
नैन मिली मनमनामिली, बैनन मिली न बाल॥ ३७॥

तीनि अक्षर। दोहा।

लगालगी लोपौंगली, लगे लाग लै लाल।
गैल गोप गोपी लगे, पालागों गोपाल॥ ३८॥

दुइ अक्षर। दोहा।

हरि हीरा राही हस्यो, हेरि रही ही हारि।

हरि हरि हौं हाहा ररौं, हरे हरे हरि रारि ॥ ३९ ॥

एकाक्षर । दोहा ।

नोनी नोनी नौनि ने, नोनै नोनै नैन ।
नाना नन नाना नने, नाना नूने नैन ॥ ४० ॥

आधा एकाक्षर । दोहा ।

केकी केका की कका, कोक कीकका कोक ।
लोल लालि लोलै लली, लाला लीला लोल ॥ ४१ ॥

प्रतिपदाअक्षर । दोहा ।

गो गो गीगो गोगगज, जीजै जीजी जोहि ।
रूरे रूरे रेरु ररि, हाहा हूहू होहि ॥ ४२ ॥

युगलपद एक अक्षर । दोहा ।

केकी कूके कोक कों, काके कूके कोक ।
काक कूक कोकी कुकी, कूके केकी कोक ॥ ४३ ॥

बहिर्लापिका अन्तर्लापिका । दोहा ।

उत्तरबरण जु बाहिरै, बहिरलापिका होइ ।
अन्तर अन्तरलापिका, यह जानै सब कोइ ॥ ४४ ॥

बहिर्लापिका यथा । दोहा ।

अक्षर कौन विकल्प को, युवति बसत किहि अंग ।
बलिराजा कौने छल्यो, सुरपतिके परसंग ॥ ४५ ॥

अन्तर्लापिका । दोहा ।

कौन जाति सीतासती, दई कौन कहँ तात ।
कौन ग्रन्थ बरण्यो हरी, रामायण अवदात ॥ ४६ ॥

गूढ़ोत्तर । दोहा ।

उत्तर जाको अतिदुखो, दीजै केशवदास ।
गूढ़ोत्तर तासों कहत, बरणत बुद्धिविलास ॥ ४७ ॥

सवैया ।

नखते शिखलौं सुखदैकै शृँगारि शृँगार न केशव एक बच्यो ।
पहिराइ मनोहर हार हिये पियगात समूह सुगन्ध सिच्यो ॥
दरसाइ सिरी कर दर्पणलै कपिकुंजर ज्यों बहु नाच नच्यो ।
सखि पान खवावतही किहिं कारण कोप पिया परनारि रच्यो ४८ ।

सवैया ।

हास विलास निवास सुकेशव केलि विधान निधान दुनीमें ।
देवर जेठ पिता सुत सोदर है सुखही युत बात सुनीमें ॥
भाजन भोजन भूषण भौन भरे यश पावन देवधुनीमें ।
क्यों सब यामिनि रोवत कामिनि कंत करै सुभगान गुनीमें ॥४९॥

सवैया ।

नाह नयो नित नेह नयो परनारि तो केशौ केहूं न जोवै ।
रूप अनूपम भूपर भूप सो आनँदरूप नहीं गुन गोवै ॥
भौन भरी सब संपति दंपति श्रीपति ज्यों सुखसिंधुमें सोवै ।

देव सो देवर प्राण सो पूत सु कौन दशा सुदती जिहि रोवै ॥५०॥

एकानेकोत्तर । दोहा ।

एकहि उत्तरमें जहां, उत्तर गूढ़ अनेक ।
उत्तर नेकानेक यह, बरणत सहित विवेक ॥ ५१ ॥

दोहा ।

उत्तर एक समस्त को, व्यस्त अनेकन मानि ।
जोर अंत के वर्ण सों, क्रमहीं वरण बखानि ॥ ५२ ॥

छप्पै ।

कहा न सज्जन कुवत कहा सुनि गोपी मोहित ।
कहा दासको नाम कवितमें कहियत कोहित ॥
को प्यारो जगमाहिं कहा क्षत लागे आवत ।
को वासर को करत कहा संसारहि भावत ॥
कहु काहि देखि कायर कँपत आदि अंत को है शरन ।
तहँ उत्तर केशवदास दिय सबै जगत शोभाधरन ॥ ५३ ॥

दोहा ।

मिलै आदिके बरणसों, केशव करि उच्चार ।
उत्तर व्यस्त समस्तसो, साँकरके अनुहार ॥ ५४ ॥

छप्पै ।

को शुभ अक्षर कौन युवति योधन बस कीनी ।
विजय सिद्धि संग्राम रामकहँ कौने दीनी ॥

कंसराज यदुबंस बसत कैसे केशव पुर ।
बटसों कहिये कहा नाम जानहु अपने उर ॥
कहि कौन जननि जगजगतकी कमलनयन सूक्षम बरणि ।
सुनि वेद पुराणन में कही सनकादिक शंकरतरुणि ॥ ५५ ॥

कवित्त ।

कोल कोहै धरी धरि धीरज धरमहित मारे किहि सूत बलदेव जोर जबसों। जाचै कहा जग जगदीश यह केशौदास गायो कौने रामपद गीत शुभ रवसों ॥ यश अंग अवदात जात बन तातन सों कही कौन कुंती मात बात नेह नवसों । वाम ग्राम दूरिकरि देवकाम पूरिकरि मोहे राम कौनसों संग्राम कुशलव सों ॥ ५६ ॥

दोहा ।

एक एक तजि बरण को, युग युग बरण विचार ।
उत्तर व्यस्त गतागतन, एक समस्त निहार ॥ ५७ ॥

कवित्त ।

कैहैं रस कैसे लई लंका काहै पीत पट होत केशवदास कौन शोभिये सभामें जन । भोगनको भोगवत कौन गने भागवत जीतै को जतीन कौन है प्रणाम के वरन ॥ कौने करी सभा कौन युवती अजीत जग गावै कहा गुनी कहा भरे है भुजंगगन । कोहै मोह पशु कहाकरै तपी तप इंद्रजीतजू बसतकहा नवरंगराइ मन ॥ ५८ ॥

दोहा ।

केशवदास विचारिके, भिन्न पदारथ आन ।
उत्तर व्यस्त समस्तको, दुवो गतागत जान ॥ ५६ ॥

सवैया ।

दासनसों परसों परमानकी बातसों बात कहा कहिये नय ।
भूपनसों उपदेश कहा किहि रूपभले किहि नीति तजै भय ॥
आपु विपैनसों क्यों कहिये बिनकाहि भये क्षितिपालन के क्षय ।
न्याय कै बोल्यो कहा यम केशव को अहिमेध कियो जनमेजय ॥६०॥

रोला छन्द ।

कै ग्रह कै मधु हत्यो प्रेम कहि पलुहत प्रभुमन ।
कहा कमल को गेह सुनत मोहत किहि मृगगन ॥
कहां बसत सुखसिद्ध कविन कौतुक किहि बरनन ।
किहि सेये पितु मातु कहो कवि केशव सरवन ॥ ६१ ॥

सोरठा ।

कंठबसत को सात, कोक कहा बहुविधि कहै ।
को कहिये सुर तात, को कामीहित सुरतरस ॥ ६२ ॥

दोहा ।

उत्तर व्यस्त समस्त को, दुवो गतागत जान ।
एकहि अर्थ समर्थ मति, केशवदास बखान ॥ ६३ ॥

शासनोत्तर । दोहा ।

तीनितीनि शासननि को, एकहि उत्तर जानि ।
शासनउत्तर कहतहैं, बुधजन ताहि बखानि ॥ ६४ ॥

छप्पै ।

चौक चारु कर कूप ढार घरियार बांध घर ।
मुक्कमोल कर खग्ग खोल सींचहि निचोल वर ॥
हय कुदाव दै सुरकुदाव गुणगाव रंकको ।
जानुभाव शिवधाम धाव धन ल्याव लंकको ॥
यह कहत मधूकरशाहि के रहे सकलदीवानदवि ।
तब उत्तर केशवदास दिय घरी न पान्यो जान कवि ॥ ६५ ॥

प्रश्नोत्तर । दोहा ।

जेई आखर प्रश्नके, तेई उत्तर जान ।
इहि विधि प्रश्नोत्तर सदा, कहे सुबुद्धिविधान ॥ ६६ ॥

दोहा ।

को दण्डग्राही सुभट, को कुमार रतिवंत ।
को कहिये शशिते दुखी, को कोमल मन सन्त ॥ ६७ ॥
कालि काहि पूजै अली, कोकिलकंठहि नीक ।
को कहिये कामी सदा, काली काहै लीक ॥ ६८ ॥

गतागत दोहा ।

सूधो उलटो बांचिये, एकहि अर्थ समान ।

कहत गतागत ताहि कवि, केशवदास सुजान ॥ ६९ ॥

दोहा ।

सूधो उलटो बांचिये, औरै औरै अर्थ ।
एक सवैयामें सुकवि, प्रकटत दोइ समर्थ ॥ ७० ॥

सवैया ।

मा सम सोह सजै वन वीन न वीन वजै सहसोम समा ।
मार लतान वनावत सारि रिसात वनावन ताल रमा ॥
मान वही रहि मोरद मोद दमोदर मोहि रही वनमा ।
माल बनी बल केशवदास सदा वशकेल बनीवलमा ॥ ७१ ॥

अनिलोम । सवैया ।

सैनंनि माधव ज्यों सरके सबरेख सुदेश सुवेश सबै ।
नैनवकी तचि जी तरुणी रुचि चीर सबै निमिकाल फलै ॥
तैं न सुनी जस भीर भरी धरि धीर बरीत सु को न वहै ।
मेनमनी गुरचाल चलै शुभसो बनमें सरसी व लसै ॥ ७२ ॥

सवैया ।

शैल बसी रसमैन बशोभ सु लै चल चारुगुणी मनमैं ।
है बनको सु, ति, री, बर, धीर, धरी, भर, भीसजनीसुनतै ॥
लै, फल, कामिनि, वैसरची, चिरु, नीरुतजीचितकीबननै ।
वैससुवेशसदेसुखरेबसकैरसज्योंबधमाननसै ॥ ७३ ॥

अथ कपाटबद्ध । दोहा ।

इन्द्रजीत संगीतलै, किये रामरस लीन ।
क्षुद्र गीत संगीतलै, भये कामबस दीन ॥ ७४ ॥

गोमूत्रिका । दोहा ।

इन्द्रजीत संगीत लै, किये रामरस लीन ।
क्षुद्रगीत संगीतलै, भये कामबस दीन ॥ ७५ ॥

अश्वगतिचक्र । दोहा ।

इन्द्रजीत संगीतलै, किये रामरस लीन ।
क्षुद्रगीत संगीतलै, भये कामबस दीन ॥ ७६ ॥

चरणगुप्त । दोहा ।

इन्द्रजीत संगीतलै, किये रामरस लीन ।
क्षुद्रगीत संगीतलै, भये कामबस दीन ॥ ७७ ॥

कपाटबद्ध चक्र

इं	द्र	द्र	क्षु
जी	त	त	गी
सं	गी	गी	सं
त	लै	लै	त
कि	ये	ये	भ
रा	म	म	का
र	स	स	ब
ली	न	न	दी

गतागत

राका	राज	जरा	कारा
मास	मास	समा	समा
राधा	मीत	तमी	धारा
साल	सीसु	सुसी	लसा

द्विपदी

रा	दे	न	दे	ग	प	सु	र	म	धा
म	व	र	व	ति	र	ध	न	द	रि
वा	दे	गु	दे	ग	प	कु	र	ह	धा

त्रिपदी

राम	वन	देव	तिप	सुध	नम	धा
दे	र	ग	र	र	द	रि
वाम	वगु	देव	तिप	कुध	नह	धा

दोहा त्रिपदी।

रामदेव नरदेव गति परशुधरन मद धारि ॥
वामदेव गुरुदेव गति परकु धरन हद धारि ॥ ७६ ॥

त्रिपदी ।

राम	नर	गति	सुध	मद
देव	देव	पर	रन	धारि
धाम	गुरु	गति	कुध	हद

चरणगुप्त

५				४				३
रा	ज	त	अँ	ग	र	स	वि	र
स	अ	ति	स	र	स	स	र	स
र	स	भे	व॥	प	ग	प	ग	प्र
ति	द्यु	ति	ब	ढ़	ति	अ	ति	व
य	न	व	म	न	म	ति	दे	व॥
सु	व	र	ण	व	र	ण	सु	सु
व	र	ण	नि	र	चि	त	रु	चि
र	रु	चि	लो	न॥	त	न	म	न
प्र	क	ट	प्र	वी	न	म	ति	न
७				८			९	

(side labels: ६ left; २ and १ right)

चरण गुप्त । दोहा ।

राजत अँगरस विरस अति, सरस सरस रस भेव ।
पग पग प्रति द्युति बढ़ति अति, वयन वमन मतिदेव ॥ ८० ॥
सुवरण वरण सु सुवरणनि रचित रुचिर रुचि लीन ।
तन मन प्रकट प्रवीन मति, नवरँग राय प्रवीन ॥ ८१ ॥

रा	जतश्रँ	ग	रसबि	र
स र ति	श्रतिस सभेव॥ द्युतिब	र प ढ़	ससर गपग तिश्रति	स प्र व
य	न वम	न	मतिदे	व॥
सु व र	वरण रणनि रुचिली	व र न॥	रणसु चितरु तनम	सु चि न
प्र	गटप्र	वी	नमति	न

चक्रबंध । दोहा ।

मुरलीधर मुख दरसि सुख, संमुख सुख श्रीधाम ।
सुनि सारस नैनी सिखैं, जो सुख पूजै काम ॥ ८२ ॥

चक्रबंध ।
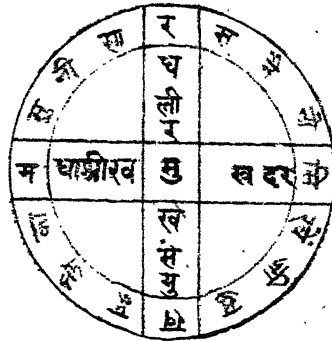
सर्वतोभद्र ।

कामदेव चित्त दाहि, वाम देव मित्त दाहि ।
रामदेव चित्त चाहि, धाम देव नित्त ताहि ॥ ८३ ॥
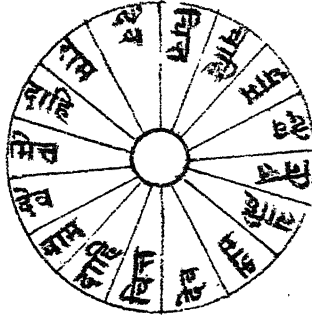
अथ कमलबंध । दोहा ।

राम राम रम क्षेम क्षम, शम दम क्रम श्रम वाम ।
दाम काम यम प्रेम वम, यम यम दम श्रम वाम ॥ ८४ ॥
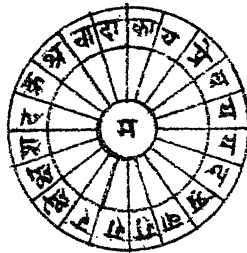
अथ धनुषबद्ध। दोहा।

परम धरम हरि हेरही, केशव सुनै पुरान।
मन मन जानै नार है, जिय यश सुनत न आन ॥ ८५ ॥

धनुषबद्ध।

द्वितीयधनुषबद्ध ।
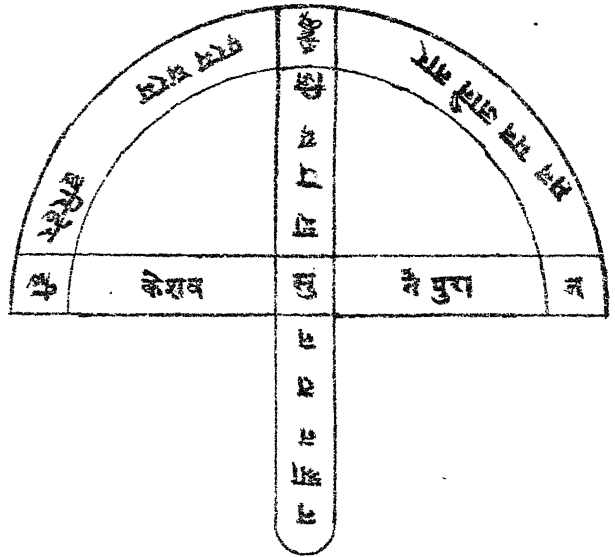
सर्वतोभद्र।

सी	ता	सी	न	न	सी	ता	सी
ता	र	मा	र	र	मा	र	ता
सी	मा	क	ली	ली	क	मा	सी
न	र	ली	न	न	ली	र	न
न	र	ली	न	न	ली	र	न
सी	मा	क	ली	ली	क	मा	सी
ता	र	मा	र	र	मा	र	ता
सी	ता	सी	न	न	सी	ता	सी

इस को काम धेनु भी कहते हैं॥

अथ सर्वतो भद्र। श्लोक।

सीता सी न न सीता सी तार मार रमा रता।
सीमा कली लीक मासी नरली न नलीरन॥ ८६॥

अथ पर्वतबन्ध ।

१
या
म
य
रा गे सु
तौ हि त चौ र
टी का म म नो ह र
है अ भ या मी त अ मी त
नि को दु ख दे त द या ल क हा
व त ही न द या स त्य क हो क हा झू
ठ मैं पा व त दे खो वे ई जि नि रे खी क या
स

अथ पर्वतबन्ध चित्र । सवैया ।

यामय रागेसुतौ हितचौरटी काम मनोहर है अभया ।
मीत अमीतनिको दुख देत दयाल कहावत हीन दया ॥
सत्य कहो कहा झूठ मैं पावत देखो वेई जिन रेखी कया ।
यामें जे तुम मीत सवै ससवैस तमीमत गेयमया ॥ ८७ ॥

अथ सर्वतोमुखचित्र को मूल।

सवैया।

काम. अरै, तन. लाज. मरै. कब. मानि. लिये. रति. गान. गहै. सुख।
वाम. वरै. गम. साज. करै. अब. कानि. किये. पति. आन. दहै. दुख॥

धाम. धरै. धन. राज. हरै. तब. बानि. बिये. मति. दान. लहै. दुख ।
राम. ररै. मन. काज. सरै. सब. हानि. हिये. अति. आन. कहै. सुख ॥८८॥

अथ हारबद्ध ।
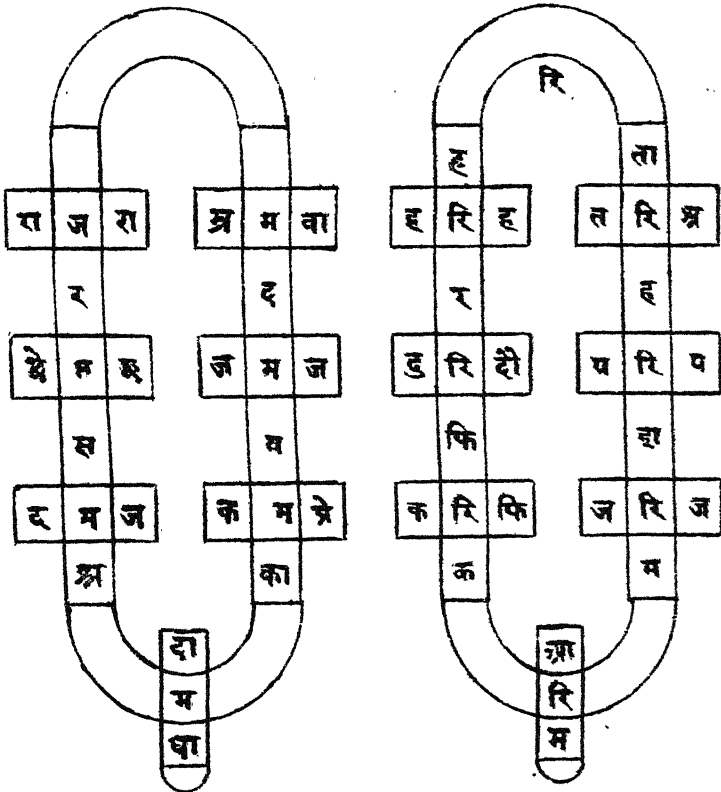
हारबंध कमलबंध। दोहा।

हरि हरि हरि ररि दौरि दुरि, फिरि फिरि करि करि आरि।
मरि मरि जरि जरि हारि परि, परि हरि अरि तरि तारि॥ ८६॥

पुनः। दोहा।

राम राम रम छेम छम, सम दम जम श्रम धाम।
दाम काम क्रम प्रेम वम, जम जम दम भ्रम वाम॥ ६०॥
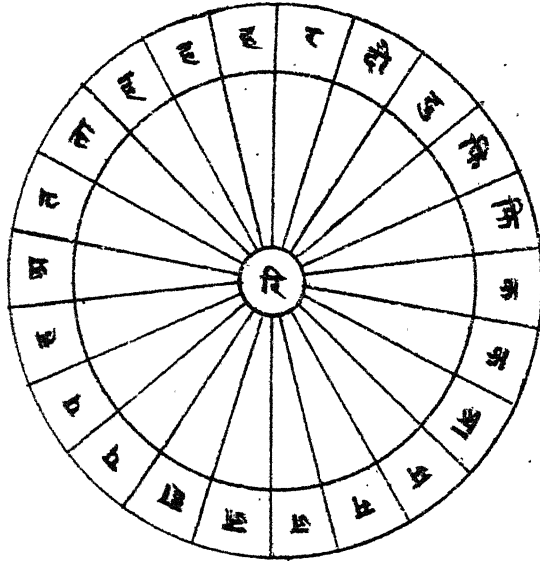
कमलबंध।

इति हारबंध कमलबंध समाप्त।

अथ मंत्रीगति चित्र ।

रा	म	क	हो	न	र	जा	न	हि	ये	मृ	त	ला	ज	स	बै	ध	रि	मौ	न	ज	ना	व	त
ना	म	ग	हो	उ	र	मा	न	कि	ये	कृ	त	का	ज	ज	बै	क	रि	तौ	न	ब	ता	व	त
का	म	द	हो	ह	र	आ	न	हि	ये	बृ	त	रा	ज	ज	बै	भ	रि	भौ	न	अ	ना	व	त
जा	म	च	हो	व	र	पा	न	पि	ये	धृ	त	आ	ज	अ	बै	ह	रि	क्यों	न	म	ना	व	त

अथ मंत्रीगति चित्र । सवैया ।

राम कहो नर जान हिये मृत लाज सबै धरि मौन जनावत ।
नाम गहो उरमान किये कृत काज जबै करि तौन बतावत ॥
काम दहो हर आनहिये बृतराज जबै भरि भौन अनावत ।
जाम चहो वर पान पिये धृत आज अबै हरि क्यों न मनावत ॥६१॥

अथ डमरूबद्ध चौकीबद्ध।

नर सरवर श्री सदातन मन सरस सुर बसि करन।
नरकसि विरसुसकल सुख दुख हीन जीवन मरन॥
नर मन जीवन हीन रदय सदय सति मतहरन।
नरहत मति मय जगत केशवदास श्रीबसकरन॥ ६२॥

अथ डमरूबद्ध।

य जगत केशव दा
द स घ द र न
त न म न स र
मति मत हर
रसरघरश्री स
न
म
श्र
विवरद्ध
नवजीनमर
ही खदुखसुलक स

दोहा।

काम धेनु दै आदि औ, कल्प वृक्ष परयंत।
वरणत केशवदास कवि, चित्र कवित्त अनंत॥ १ ॥
इहि विधि केशव जानिये, चित्र कवित्त अपार।
वरणन पंथ बताय मैं, दीनों बुधि अनुसार॥ २ ॥
सुवरण जटित पदारथनि, भूषण भूषित मान।
कविप्रिया है कविप्रिया, कविकी जीवन जान॥ ३ ॥
पल पल प्रति अवलोकिबो, सुनिबो गुनिबो चित्त।
कविप्रिया को रक्षिये, कविप्रिया ज्यों मित्त॥ ४ ॥
अनल अनिल जल मलिन ते, विकट खलन तें नित्त।
कविप्रिया ज्यों रक्षिये, कविप्रिया ज्यों मित्त॥ ५ ॥
केशव सोरह भाव शुभ, सुवरन मय सुकुमार।
कविप्रिया के जानिये, यह सोरह शृंगार॥ ६ ॥

इति श्रीमद्विविधभूषणभूषितायां कविप्रियायां चित्रालंकारवर्णनो नाम षोडशः प्रभावः समाप्तः १६ ॥

इति कविप्रिया मूलसमाप्ता ॥